चलता पुर्जा

कनकाप्रसाद चौधरी ।

॥ श्रीहरिः ॥

चलता-पुर्जा

(हास्यरस घटनापूर्ण कहानियोंका संग्रह)

लेखक—

कनकाप्रसाद चौधरी (चतुर्धुरीण)

प्रथमवार १०००] सं० १९८६ । [मूल्य १) रुपया

प्रकाशक—
कनकाप्रसाद चौधरी
"सरोज पुस्तकालय"
१५१, चितपुर स्पर, (मछुआबाजार)
कलकत्ता।

मुद्रक—
कनकाप्रसाद चौधरी
"भूतनाथ प्रेस"
१५१, चितपुर स्पर (मछुआबाजार)
कलकत्ता।

उपहार

श्री

निवेदक—

समर्पण

जिन्होंने मुझे हिन्दी लिखने-पढ़नेके लिये उत्साहित किया

और

जिनके असीम दया और आशीर्वादसे मेरे कोमल हृदयमें

हिन्दीके प्रति दृढ़ अनुराग और प्रेम उत्पन्न हुआ

उन्हीं मित्रवर

सावित्री सत्यवान, नल दमयन्ती, श्रीकृष्ण प्रभृति ग्रन्थोंके

रचयिता तथा 'मतवाला' के वर्तमान सम्पादक

श्रीयुत् बाबू नवजादिकलाल श्रीवास्तव

के

कर कमलों में

यह

सादर सप्रेम समर्पित है।

—कनकाप्रसाद चौधरी।

भूमिका।

प्रसन्नताकी बात है, कि हिन्दी शिल्पियोंका ध्यान इधर कुछ दिनोंसे हिन्दीमें मनोहर गल्पोंके प्रकाशनकी ओर गया है। स्वनामधन्य श्रीयुत प्रेमचन्दजी तथा प्रतिभासम्पन्न लेखक श्रीयुत विश्वम्भरनाथजी शर्मा कौशिकने गल्पोंके सम्बन्धमें हिन्दी साहित्यमें एक नया जीवन ला दिया है। इतनेपर भी यह कहा जा सकता है, कि हिन्दीमें मनोहर छोटी कहानियोंका अभाव है। इस सम्बन्धमें अंग्रेजी तथा फ्रेञ्च साहित्यने जैसी उन्नतिकी पराकाष्ठा दिखाई है और जैसी मार्केदार, पर छोटी छोटी कहानियाँ प्रकाशित होती हैं, उनपर ध्यान देनेसे, स्पष्ट मालूम होता है, कि उन देशोंमें इस विषयका बड़ा आदर है और लेखक तथा पाठकोंकी रुचि भी अत्यन्त परिमार्जित हो रही है। अभी हालमें Standard Literature Company ने संसारके सभी विख्यात गल्प-लेखकोंकी कहानियोंका एक संग्रह "Masterpiece Library of Short Stories के नामसे प्रकाशित किया है। भारतवर्षकी कहानियोंमें "पंचतंत्र" की कहानियोंको उसमें स्थान मिला है। बड़े बड़े प्रतिभाशाली विद्वान लेखकोंने इसका सम्पादन कर, संसारके सम्मुख, एक अभिनय रूपमें यह पाठ्य-सामग्री रखी है। उस ग्रन्थकी कहानियोंको देखते हुए, यह स्पष्ट प्रतीत होता है, कि हिन्दीको अभी बहुत कुछ रास्ता उस स्थानपर पहुंचनेके लिये तय करना है।

प्रस्तुत पुस्तक "चलता-पुर्जा" भी कहानियोंका ही एक मजेदार संग्रह है। यद्यपि इसके लेखक बाबू कनकाप्रसाद चौधरीका यह प्रथम प्रयास है, तथापि इसकी अधिकांश कहानियाँ उनकी सुरुचि और सदुद्देश्यका खासा परिचय दे रही हैं। "मायाविनी मोहिनी", "गड़बड़ घोटाला", "भविष्य-गणना", "रेसकी ठेल" प्रभृति कहानियाँ कुछ दिन पहले, प्रसिद्ध "मतवाला" में प्रकाशित हो चुकी हैं और पठित-समाजने उनका खूब आदर किया है। अब वे कहानियाँ बाबू साहबने स्वयं पुस्तकाकार प्रकाशित की हैं। हमें पूर्ण आशा है, कि हिन्दी-जगत इन कहानियोंका आदर कर, लेखकके उत्साहको बढ़ानेकी चेष्टा करेगा। साथही, लेखकसे भी आशा है, कि वे कलम रोककर अभीसे चुप न बैठ जायँगे और अपनी इस प्रतिभाको मस्तिष्ककी कोठरीमें सदाके लिये कैद न कर रखेंगे। अभी आप नवयुवक हैं, होनहार और सुरुचि-सम्पन्न हैं। अतएव हिन्दी-वाटिकाको ऐसे ही कुछ और भी पौधोंसे सुसज्जित करना, आपका परम कर्त्तव्य है। आशा है, बाबू साहब इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।

—चन्द्रशेखर पाठक।

नम्र निवेदन।

मैं हिन्दीका लेखक तो क्या एक अच्छा पाठक भी नहीं हूं। तथापि अपने मित्र 'मतवाला' वालोंके अत्यन्त उत्साहदानसे मैंने यह अनधिकार चर्चा की है। इसमें मुझे कहाँतक सफलता मिली है, यह ईश्वर जानें।

'चलता पुर्जा' की अधिकांश कहानियाँ सच्ची घटनाओंके आधार पर लिखी गई हैं और कुछ दूसरी भाषाओंसे अनुवादित हैं। एक दोको छोड़ बाकी सभी 'मतवाला' में प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रायः देखा जाता है, कि संग्रहोंमें जो पहली कहानी होती है, उसीके नामपर पुस्तकका भी नाम रख दिया जाता है। मैंने 'चलता पुर्जा' शीर्षक इस संग्रहके अन्तमें देकर प्रचलित सनातन नियमका उल्लङ्घन किया है। आशा है, इसके लिये पाठक मुझे क्षमा करेंगे।

हाँ, यह मेरा प्रथम प्रयत्न है और मैं एक अल्पज्ञ मनुष्य हूं, इसलिये आशा है कि हमारे प्रेमी पाठक मेरी त्रुटियोंकी ओर ध्यान न देंगे।

विनीत,

कलकत्ता,
दीपावली १९८१।

कनकाप्रसाद चौधरी।

कहानियों की सूची ।

चलता पुर्ज़ा

चण्डाल चौकड़ी !

(१)

आज रविवार है। सभी अपने अपने घरोंमें बैठे छुट्टी मना रहे हैं। कोई ताश खेल रहा है। कोई भंग छाननेकी फिराकमें है। कोई बायस्कोप और थियेटरमें जानेकी तैयारी कर रहा है। कोई गत शनिवारकी घुड़दौड़में घरका आटा गीला करके अपनी किस्मतको भख रहा है। लेकिन मेरे मित्र सेठ बीयरदासजी कलकी घुड़दौड़में पासा पड़ जानेसे फूलकर कुप्पा हो रहे हैं। कभी कमरेके अन्दर जाते हैं और कभी बाहर आते हैं। कभी अपने नौकर पाँचकौड़ी पर बेतरह नाराज़ होते हैं।

बीयरदास—"न मालुम बदमाश कहाँ चला गया है। सात बज चुके। ज़रा देर हुई नहीं, कि शराबकी दूकानें बन्द हो जायँगी। फिर तो रविवारकी छुट्टीका जल्सा ही फीका हो जायगा। बिना बोतलवासिनीके सारा मज़ा किरकिरा हो जायगा।

गिलास पर गिलास चलने लगे, प्याले पर प्याले उड़ने लगे। इधर बोतलवासिनी देवीकी उपासना हो रही थी, कि इतनेमें मिस डेनिसमनी भी आ पहुँचीं। फिर तो पूछिये ही नहीं। वह रङ्ग जमा, कि सेठजीके कमरेमें इन्द्रका अखाड़ा उतर आया। मिस डेनिसमनी अपनी तिरछी चितवनोंसे देखती और मुस्कराती हुई आकर यारोंकी मजलिसमें बड़ी लचकदारीसे बैठ गई! फिर तो यारोंके दिलोंपर कटारी चल गई। वे मस्तीमें सिर हिलाने लगे और मिस डेनिसमनी गाने लगी,—

"बहार आई पिला साक़ी मये-गुलगूँ का पैमाना,
हमेशा दौर हो तेरा रहे आबाद मयख़ाना।
हुआ है मुझसे अब ऐसी परीपैकरसे याराना
अदा है जिसकी बाँकी तिरछी चितवन चाल मस्ताना॥"
"यों ज़िन्दगी बसर हो तो लुत्फे शबाब हो,
पहलूमें यार हाथमें जामे शराब हो।"

यार लोग वाह वाह कर उठे। मि० पोर्टवाईनने सिर हिलाकर कहा,—वाह! मिस डेनिसमनी, तुमने तो कमाल कर दिया। हम तो इस वक्त आसमानके सातवें पर्दे पर हैं। ज़रा एक गानेका और ज़ोर लगाओ, तो बस बिहिश्तकी चार सीढ़ी और भी चढ़ जायें। हाँ, कोई चुलबुलाहट भरी चीज़ सुनाओ। मिस डेनिसमनीने निहायत अदासे सिर हिलाकर कहा,—माफ कीजिये, आज बहुत ना-वक्त हो गया है। रात अधिक चली आने पर आज कल कलकत्तेमें बाहर निकलना ख़तरनाक हो रहा

है। ख़ासकर हमलोगोंके रामबगान और सोनागाछीमें तो आठ बजेसे ही धरपकड़ शुरू हो जाती है।

'धरपकड़' का नाम सुनते ही यारोंके देवता कूच कर गये। वे चौकन्ने होकर कपड़े-लत्ते सँभालने लगे। जल्दी जल्दी टेढ़ी-सीधी टोपी और उलटा-पलटा जूता पहनकर, ताबड़तोड़ भगे। मिस डेनिसमनी भी आदाब बन्दगी करके बाहर खड़ी हुई टैक्सी-मोटर पर सवार हुई। धरपकड़ने सारा जलसा ही बिगाड़ दिया। अब देखें, अगले रविवारको फिर जलसा जमता है या नहीं। जमेगा भी तो शाम होनेसे पहले ही ख़तम हो जायगा!

(२)

विगत रविवारका जलसा तो आप देख ही चुके हैं। इस रविवारके जलसेका रंग भी देख लीजिये। अभी दिनके चार ही बजे हैं। सेठ बीयरदास जी अभी निबट-नहाकर ड्रेसिङ्ग रूममें गये ही थे, कि इतनेमें किसीके पैरकी आहट मिली। वे कंघी करते हुए बाहर निकले। तबतक देसीप्रसाद उनके कमरे-की ओर बढ़ते हुए बोल उठे—"क्यों सेठजी! आज क्या रंग है? क्या आज भी जलसेकी तैयारी है?"

सेठ बीयरदास—"हाँ भाई, आज मिस डेनिसमनीके यहाँ जा रहा हूं। आज वहीं जलसा जमेगा। चलोगे?"

देसीप्रसाद—"नहीं भाई, मैं तो वैसी ख़ौफ़नाक जगहमें जाना

पसन्द नहीं करता। वहाँ देसी स्वदेशीका गुज़र कहाँ? वहाँ तो आप जैसे विलायती फ़ैशनके शौक़ीन नौजवानोंका ही गुज़र है। मेरे जैसे खबीसको वहाँ कौन पूछेगा?"

सेठ बीयरदास—"अरे यार तुम भी तो खरे 'खाँटी' ही निकले। वेश्याओंके घरमें सिर्फ़ नगद नारायणका आदर होता है। वहाँ कैसा खवीस और कैसा पट्ठा? जिसकी अण्टीमें चाँदी है, वेश्या उसीकी बाँदी है।"

देसीप्रसाद—"मगर यार जो कुछ भी हो, आजकल रामबगान और सोनागाछीमें बड़े खतरे हो रहे हैं। रातमें वहाँ बड़े आदमियोंकी बड़ी बेइज़्ज़ती होती है।"

बीयरदास—"इसी हिम्मतपर रण्डोबाज़ी होगी? ऐयाशी करनेका शौक़ हो, तो इज़्ज़तको ताक़पर रख दो और जानको हथेलीपर रख लो। इश्कको तुमने क्या ठट्ठा समझ लिया है? इस कूचेसे सिरके बल गुज़रना होता है।

"कटाये सरको उल्फ़तमें वही सरदार होता है।
हुआ जो इश्क़में मुफ़लिस वही ज़रदार होता है॥"

सेठजी और देसीप्रसादमें यह आशिक़ीकी चर्चा हो ही रही थी, कि इतनेमें ह्विस्कीचन्द आ धमके। अदाब बन्दगीके बाद ह्विस्कीचन्दने कहा,—"सेठजी! छ बजना चाहता है। जल्दी चलिये। बड़ी देर हो गई। ना-वक्त होनेसे सारा मज़ा किरकिरा हो जायगा।"

बीयरदास—"नहीं मिस्टर, देरकी ऐसी तैसी, मैं बिल्कुल

तैयार हूँ। अरे पचकौड़िया, ज़रा दौड़कर एक टैक्सी तो ले आ।"

पचकौड़िया—"कहाँ जानेके लिये सरकार?"

बीयरदास आँखें तरेरकर दाँत पीसते हुए गरजकर बोले,—"अजब चूतिया नौकर है। तू कौन है पूछनेवाला बे? मैं जहन्नुममें जाऊँगा, तेरे बापका क्या?"

पाँचकौड़ी झुंझलाकर धीरेसे कहा,—"जहन्नुममें जाइये या दोजखमें, मेरे बापका क्या।"

यही कहकर बड़बड़ाता हुआ पचकौड़िया मोटर लानेके लिये चला गया। सेठजी ताबड़तोड़ कपड़े पहनने लगे। ज्योंही फ़िट हुए, त्योंही मोटर भी दरवाजेपर आ लगी। यार लोग सवार हुए। भों-भों करती हुई मोटर रामबगानकी ओर निकल गई।

चौड़े पतले कई रास्तोंकी परिक्रमा करती हुई चण्डाल चौकड़ी-की मोटर धीरेसे जाकर रामबगानके एक तिनतल्ले मकानके नीचे खड़ी हो गई। यारोंकी नज़र ऊपरकी तरफ अटकी हुई थी। उनके मोटरसे उतरते उतरते तिनतल्लेकी अटारीपर मुस्कराती हुई मिस डेनिसमनी निकल आईं। दोनों ओरसे रूमालोंकी झण्डियाँ फहराई गईं। यार लोग सीढ़ीपर चढ़नेके लिये इतने उतावले हो गये, कि टैक्सीवालेसे नोटके रुपये भी वापस न ले सके। लालसा इस क़दर उबल पड़ी, कि गिन-गिन कर सीढ़ियाँ चढ़ना भी पहाड़ हो गया। सीढ़ीका रास्ता तङ्ग था, तो भी सब

यार आगे ही पहुँचनेकी कोशिशमें थे। बेचारे देसीप्रसाद तो दुमकी तरह पीछे ही लटक रहे थे। आगे आगे सेठ बीयरदास-जी कमर पकड़कर चढ़ते चले जाते थे। जब दो सीढ़ियाँ और रह गईं, तो डेनिसमनीने कमरेके दरवाजेपर निकलकर बड़े नाजो अन्दाजसे कहा—"आदाब अर्ज़ है सेठजी !"

सेठजी तो वह आदाब करनेका चुलबुला ढङ्ग देखकर ही बुलबुल हो गये और चाह-भरी निगाहसे मिस डेनिसमनीकी ओर देखने लगे। सारी सुधबुध भूल गयी, सीढ़ी परसे इस तरह उनके पैर फिसले, कि पीछेसे ह्विस्कीचन्द अगर थूनीकी तरह हाथ नहीं लगाते, तो बेचारे देसीप्रसादको लिये हुए सेठजी पछाड़ खाकर नीचे लुढ़क जाते—बकौल पाँचकौड़ीके सचमुच जहन्नुम चले जाते। खैर सेठजीका गिरना देखकर मिस डेनिसमनी ठहाके पर ठहाके लगाती हुई अपने कमरेमें चली गई। सेठजीका मुँह लज्जासे इतना सा हो गया। खैर, पीछेसे यार लोग भी जेठके कुत्तेकी तरह हाँपते हाँपते कमरेमें दाख़िल हुए।

कमरा क्या था, ख़ासा आनन्द-महल था। विलास-मन्दिर-की सजावट देखकर सेठजी भी दङ्ग हो गये। चकित होकर चारों ओर देखकर बोले,—"बीबीका कमरा क्या है, बिहिश्तका टुकड़ा है !"

यह सुनकर देसीप्रसाद भी बोल उठे,—"इसमें क्या शक है अगर फिरदौस बर रूए ज़मीनस्त। हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त !"

इतनेमें बगलकी कोठरीसे निकलकर मि० पोर्टवाइनने कहा—"How are you Mr. Bear Dass ?

बीयरदासने झिझकते हुए कहा—"मैं यह सब गिटपिट-सिटपिट कुछ नहीं समझता। बोलना हो, तो सीधी-सादी हिन्दीमें बोलो। अँग्रेजीकी टाँग मत तोड़ो।"

पोर्टवाइन—"अरे भाई, मैं तो खैरियत-मिज़ाज पूछ रहा हूँ। तुमने क्या इसे गाली समझ लिया?"

बीयरदास—"गाली देनेकी हिम्मत भी है?"

ह्विस्की०—"यह नाहक बकवाद करनेकी जगह नहीं है। देखिये सामने कौन बैठा है। ज़रा अदब लिहाजसे काम लीजिये।"

खैर, सब लोग ज्योंही मुख़ातिब हुए त्योंही चञ्चल चितवन और मन्द मुस्कानवाली मिस डेनिसमनीने गाना शुरू कर दिया। यार लोग भी प्याले पर प्याले ढालने लगे और 'वाह वाह' का गुल मचाकर सेठजीसे घड़ी, अँगूठी और गिन्नियोंका 'छूट पर छूट' दिलवाने लगे। पहले तो डेनिसमनीने आँखें नचाकर, भौंहें सटाकर, गरदन मटका कर, भावभंगियाँ दिखाकर, अंग-अंग फड़काकर और मधुर मधुर मुस्कराकर यारोंको ऐसा रिझाया, कि बोतलों पर बोतलें चट कर जाने पर भी उन्हें ख़बर ही न रही, कि नशाका पारा कितना चढ़ गया। फिर मिस डेनिसमनीकी मदभरी आँखोंने उस नशा पर और भी रङ्ग-चढ़ा दिया। मिस डेनिसमनीने

यारोंको बिल्कुल नशेमें चूर कर देनेके लिये एक और मस्ताना तराना छेड़ दिया।

गाना खतम होते ही 'वाह वाह' की बुलन्द आवाज़से कमरा गूँज उठा। मालूम हुआ कि घरमें चोर पैठा है।

ह्विस्की०—"क्यों सेठजी! कैसी अच्छी गज़ल है? वाह! कमाल है! गला क्या है, साँवलियाकी बंशी है!"

बीयरदास—"सचमुच कमाल है। गला काट लेनेके क़ाबिल है!'

पोर्टवाइन—"समझे तो खाक नहीं, मगर 'कमाल है' कह दिया! तुम्हारे जैसे मसनदके बोझ और गद्दीके गधे अगर उर्दूकी ग़ज़लें समझने लग जायँ, तो उर्दूका भी दिवाला निकल जाय!"

बीयरदास नशेकी झकमें क्रोधपूर्वक बोल उठे—"गधा तू, गधा तेरा बाप, गधे तेरी सात पुश्तके पुरखे।"

पोर्टवाइन—"Dam, Bloody, Foolish, Nonsense, Stupid, Wicked, Scoundrel."

गाली बकते हुए देखकर मिस्टर पोर्टवाइनकी छातीमें सेठजीने कसकर एक लात जमा दी। पोर्टवाइनने शराबकी खाली बोतल उठाकर बीयरदासके सिरपर दे मारा। सेठजी ज़ोरसे चिल्ला उठे—"खून! खून! डाकू! डाकू!" और बेहोश होकर गिर पड़े। फ़र्श पर खूनकी होली मच गई, पिचकारी चल गई! गुलगपाड़ा सुनकर पुलिस पहुंच गई। चण्डाल चौकड़ी गिरफ्तार हो गई!

मिस डेनिसमनी रफूचक्कर हो गई। पुलिस-सर्जन मिस्टर बराण्डी-को देखते ही चण्डाल चौकड़ीकी सारी चौकड़ी भूल गई, सेठकी हैंकड़ी हवा हो गई! चौकड़ीको हथकड़ी पहना कर पुलिसवाले थानेमें ले गये। वहाँ सेठजी, अपने यारोंको मँझधारमें ही छोड़-कर, रुपयेका पुल बाँधकर पार उतर गये!

कतलकी रात !

सन् १९२२ की तारीख आठवीं जूनको झगरू साहुका हैण्ड नोट तमादी होनेवाला था। तारीख चौथी मईको ही सेठने साफ साफ कह दिया, कि अब मुरौवत नहीं निभेगी। परसों-तरसों तक नालिश दायर हो जायगी।

पाँचवीं मईकी शामको झगरू साहु सेठकी दूकानके सामनेसे जा रहा था। सेठने पुकारकर कहा—'कल नालिश ठोंक दूंगा तो फिर दर-दर दाँत दिखाते फिरोगे। अभी वक्त है। हैण्ड-नोट बदल कर नया कर दो, बखेड़ा तय हो जायगा।

झगरू कमरपर हाथ रखकर सोचता हुआ आगे बढ़ गया। उसके जाते-जाते तक सेठने उसे ज़ोरसे सुनाकर कह दिया—"मैं पंचायत भी नहीं मानूंगा। पछताओगे।"

गरमीका दिन था। कचहरी सुबह लगती थी। तड़के उठकर झगरू सेठकी बैठकके सामनेसे फिर गुज़रा। सेठने आवाज़ देकर कहा—"इस तरह कन्नी काटनेसे काम न चलेगा। साफ़ कह दो। मुरौवत भी हलाल हो रही है। इस वक्त मैं तुम्हें आइन्देकी नुकसानी सुझाना नहीं चाहता, क्यों कि कचहरी जानेके लिये बिल्कुल तैयार बैठा हूँ। सिर्फ कोचवानको

पुकारनेकी देर है ; गाड़ीखानेसे गाड़ी पहुंची और मैं रवाना हुआ। कहो, क्या कहते हो ?"

झगरू—"मदनपुरासे चिट्ठी आनेकी देर है। अगर आज आ गई, तो आज नालिश दायर करके कलसे आप भी पछतायँगे।"

सेठ—"उस चिट्ठीसे मुझे कोई ग़रज़ नहीं है। मैं तो सिर्फ मूल लेकर सूद भी छोड़ देनेपर तैयार हूँ।"

झगरू—"अगर चिट्ठी आ गई और बात मतलबकी निकली, तो आपको मूल भी छोड़ देना पड़ेगा। मैं मूल और सूद दोनों छुड़ानेकी फ़िक्र कर रहा हूँ।"

सेठ—"ऐसा ?"

झगरू—"और नहीं तो क्या ?"

सेठ—"झाँसा-पट्टी किसी औरको देना। मैं इस झपलेमें नहीं पड़ सकता। तुम्हारे जैसे कितनोंको मैंने देखा है। मुझे ही चराने आये हो ?"

झगरू—"मसल है कि 'घी पियावत घोड़ मरिआय।' 'साँच कहे मुँह मारा जाय और झूठ कहे तो जग पतिआय ?' मैं गरीब हूँ। इसलिये मेरी बातका कोई मूल्य ही नहीं है। क्यों ?"

सेठ—"है क्यों नहीं, मगर कोई ऐसी बात भी तो हो। दम-दिलासा देकर तुम बहकाना चाहते हो, तो यह तुम्हारा किया न होगा। मैं उड़ती चिड़ियाको हल्दी लगाता हूँ।"

झगरूने छूटते ही कहा—"तो अब एक सोनेकी चिड़ियाको

हल्दी लगाइये। रात दिन हाय पैसा, हाय रुपया, हाय नालिश, हाय अदालत करते करते मर जाइयेगा—कोई भोगनेवाला भी है।"

सेठ—"तो क्या सब माल यों ही लुटा दूँ ?"

झगरू—"लुटानेको कहता कौन है? और कहेगा ही कौन? कहेगा भी तो आप क्या लुटा देंगे? हाँ, लुटानेका भी मौका होता है। ब्याह शादीमें लोग खुशीसे लुटाते हैं।

सेठ—"अब मेरे भाग्यमें वैसे मौकेपर लुटाना नहीं बदा है।"

झगरू—"बदा क्यों नहीं? आज कहिये तो आज और अभी कहिये तो अभी वैसा मौका आपके हाथ लगा दूँ। बोलिये, है हिम्मत?"

सेठ—"तुम बातोंमें ही वक्त बरबाद करना चाहते हो। देखो, आठ बजना चाहता है, अव्वल वक्तमें दर्खास्त पड़नी चाहिये, अब देर हो रही है, मैं जाता हूं।"

सेठ उठकर चला। फाटक पर गाड़ी लगी थी। गाड़ीमें चढ़ जानेपर झगरूने कहा—"डाकखाने जाता हूँ। अगर सुबह-की डाकसे ख़त आ गया, तो मैं बालाबाला कचहरीमें पहुंचूंगा।"

सेठ—"तुम भी बड़े अजीब आदमी हो। बतलाते क्यों नहीं, कि उस चिट्ठीसे मेरा क्या मतलब निकलेगा?"

झगरू—"बतलानेको तो मैं अभी बतला सकता हूँ, पर एक छोटीसी रकमने आपके मनसे मेरा विश्वास जो उठा दिया है, इससे मैं आपके चित्तपर नहीं जड़ सकता।"

सेठने झुँझलाकर कहा—"व्यर्थ ही मेरा कौतूहल बढ़ा रहे हो। पट्टी पढ़ानेसे मैं नालिश करना नहीं छोड़ सकता। तुम अपना रास्ता लो, मैं अपनी राह जाता हूँ।"

सेठ गाड़ीपर चढ़ गया और गाड़ी कचहरीकी ओर चल पड़ी। झगरू डाकघर चला गया। चिट्ठी बँटनेवाली खिड़की पर पहुँचते ही डाकियेने कहा—"एक बैरंग चिट्ठी है, दो आना महसूल लगेगा।"

झगरूने झट पैसा देकर चिट्ठी ली और खोलकर पढ़ता हुआ कचहरीकी ओर चल पड़ा। चिट्ठीमें राजी खुशीके बाद लिखा था—"एक महीनेके अन्दर जिस दिन इच्छा हो, सेठको साथ लेकर चले आओ। हाथोंकी अँगुलियोंसे कुछ भी कम नहीं हो सकता। पूरा टोटल पेशगी दे देना पड़ेगा। आगापीछा करना हो, तो मत आना। दर दाम चोखा है, तो माल भी चोखा है। सेठ निहाल हो जायँगे। तुम्हारा तो सब देखा-सुना है। अच्छी तरह समझा देना। आनेमें देर हो तो हो, पर पेशगी भेजनेमें अगर देर हुई, तो फिर मुझे दोष मत देना। तुम जानो, तुम लोगोंका काम जाने।"

झगरू साहु चिट्ठी लेकर ताबड़तोड़ दौड़ा हुआ कचहरी गया। सेठ वकीलखानेमें बैठा हुआ था। उसे इशारेसे अलग बुलाकर झगरूने चिट्ठी दे दी। सेठ चकित होकर बड़े ध्यानसे वह पत्र पढ़ने लगा। पढ़ चुकनेके बाद उसने झगरूके कन्धे पर हाथ रखकर कहा—"क्या तुम मेरे साथ चलनेको तैयार हो?"

झगरू—"आप क्या समझते हैं, कि इतने दिनोंसे मैं बेकार ही लिखा-पढ़ी कर रहा था?"

सेठ—"अच्छा, चलो, ज़रा देख तो आवें।"

सेठका हाथ पकड़कर झगरू उन्हें अदालतके बरामदेसे बाहर एक पेड़की छायामें ले गया और बोला—"देखनेकी ज़रूरत नहीं है। उठती जवानी है, रंग गोरा है, बड़ी बड़ी आँखें हैं, सुथुक नाक है, पतले-पतले ओठ हैं, छरहरा बदन है, अधिक क्या कहूँ—अङ्ग-अङ्गसे सुन्दरता चुई पड़ती है, कोई सींकसे खोद दे, तो खून टपक पड़े। गरीबकी लड़की होने पर तो वह इतनी सुन्दर है, अगर कहीं अमीरकी लड़की होती, तो इन्द्रकी परी भी उसके सामने मात थी। गरीबीने उसे खिलने नहीं दिया है। आपके घरमें जब सुख-चैनसे रहने लगेगी, तब राजमहलकी रानीसे वह किसी तरह कम न होगी।"

सेठ—"राम कहो, मैं उसे दूधसे नहलाऊँगा, फूलोंकी सेज-पर सुलाऊँगा, मुँहमाँगी चीजें देकर दिल बहलाऊँगा। मेरे घरमें कमी किस बातकी है? तुम्हारी दयासे सब कुछ है। देखते ही हो, गञ्ज माल पड़ा है, कोई भोगनेवाला है?"

झगरू—"तो फिर देर किस लिये? घर चलकर रुपयेकी थैली लीजिये और चलिये मेरे साथ मदनपुरा।"

आखिर गई हवा खाने। सेठने घर पहुँचकर कहा—"पहले तुम्हीं जाओ। ब्याहका दिन ठीक कर आओ। उसी दिन वहीं रुपये गिन दूँगा।"

झगरू—"घर आते ही आप लगे कजाकी करने ? अच्छा, मैंने सारा हाल कह दिया, अब आप खुद ही चिट्ठी-पत्री करके पटा लीजिये। लाइये मेरा हैण्ड-नोट। उसपर भर-पाई कर दीजिये। उसे ही मैं अपना इनाम समझूंगा। मुझे जो करना था सो कर दिया। अब आप जानें, आपका काम जानें।"

सेठ—"वाह, घबराते क्यों हो ? हैण्डनोटकी चिन्ता छोड़ो। साले कागज़के टुकड़ेके लिये दियासलाईकी एक बत्ती काफ़ी है। जिस दिन मेरा घर आबाद होगा, उस दिन तुम्हें रुपयोंसे तौल दूँगा।"

झगरू साहुके मदनपुरा जानेकी देर थी। शादी तो पहले ही से ठीक थी। जेठ सुदी पञ्चमीका दिन ठीक करके झगरू साहु लौट आया। सेठ बेचारा ब्याहकी तैयारियाँ करने लगा। जुल्फ़ोंमें खिजाब लगाना, दोनों शाम 'मदनानन्दमोदक' उड़ाना, 'फूलोंका दूध' मल-मलकर चेहरेकी झुर्रियाँ मिटाना, चार-चार घण्टे पर शहद और दूधके साथ शक्तिवर्द्धक चूर्ण खाना उसका नित्यकर्म हो गया। देखते ही देखते जेठ सुदी पञ्चमी आ पहुँची—जिसके आनेके दिन गिनते-गिनते उसकी अँगुलियाँ थक गई थीं।

झगरू साहु मदनपुराका जमींदार था। उसने पहले ही से बन्दिश बाँधकर सेठको चाढ़ावा-बढ़ावा दिया था। जब सेठकी बारात मदनपुरा पहुँची, तब चारों ओर कानाफूसी होने लगी और सब लोग मन ही मन हँसने लगे। सेठके आनन्दका तो

वारापार न रहा। झगरू साहुने धीरेसे सेठके कानमें कहा—"रुपयोंकी थैली निकालिये। लगनकी घड़ी बीत रही है।"

सेठने काँपते हुए हाथोंसे ताबड़तोड़ थैली निकालकर झगरू साहुके हवाले की। फिर क्या, शादीकी रस्में बड़ी धूमधामसे अदा हुईं। चाहलपहलमें ही रात कट गई। भोर होते ही सेठानीकी पालकी रवाना हो गई।

सेठके हौसलेका हाल मत पूछिये। वह तरह तरहके मनसूबे बाँध रहा था। सेठानी घरमें उतरते ही हथेलीका फूल बन गई। रातकी राह देखते-देखते सेठ अधीर हो गया। उधर घड़ीकी सूई खटखटा रही थी और इधर सेठकी छाती धड़क रही थी। अकेला घर था। वक्तकी पाबन्दी तो थी नहीं। 'मोदक' का बड़ा गोला और 'चूरन' की डबल पुड़िया जमाकर घरमें ज्यों ही पैर रक्खा, त्यों ही रुनझुनकी वंशी बजने लगी। मृगतृष्णासे थका हुआ मृग जैसे कुसुमित काननमें पहुँचकर शिकारीकी वीणाका मधुर झङ्कार सुनते-सुनते बे-सुध हो जाता है, सेठकी भी वैसी ही दशा हुई। शरीर थरथराने लगा। बड़ी हिम्मत करके काँपती हुई शिथिल अंगुलियोंसे घूँघट उठाया। घूँघटके अन्दरसे खिलखिलाहटकी आवाज आई और एक मुछन्दरकी सूरतने विनोदपूर्ण चञ्चल दृष्टिसे सेठको देखा। बेचारा सेठ अपनी छातीमें मुक्का मारकर पलँगपर गिर पड़ा। पुल्लिङ्ग दुलहन ठठाकर हँस पड़ी!

नवाब साहब

मिस्टर सनहक पटनाके एक नामी रईसके इकलौते बेटे हैं। एक दिन अपने सजे हुए कमरेमें आरामकुर्सीपर बैठे हुए वे मनही मन सोच रहे थे—"आजतक कोई ऐसा सरकारी चन्देका लिस्ट नहीं निकला, जिसके सिरेपर मेरा नाम न रहा हो, किसीकी ऐसी हिम्मत न हुई, कि बड़े दिनोंकी रोशनियों और डालियोंमें मेरी तरह रुपयेको पानी कर सके। लेकिन कई सालके 'न्यू-इयर्स-डे' और 'किंग्स-बर्थ-डे' योंही गुज़र गये, कुछ नतीजा न निकला। अब कमिश्नर साहब और लाट साहबको एक ग्रैण्ड तवाजा देना चाहिये।"

इतने ही में खानसामाने सुबहकी डाक ला कर टेबुलपर रख दी। सनहक साहबका हाथ सबसे पहले 'इङ्गलिशमैन' पर पड़ा। हर एक पन्ना ताबड़तोड़ उलटकर वे ख़िताबोंका लिस्ट ढूंढ़ने लगे। खाँ-बहादुरीका लिस्ट पढ़कर झुंझला उठे। उसमें उनका नाम मिला ही नहीं। किन्तु जब नवाबीका ख़िताब पानेवालोंकी नामावली देखने लगे, तो छठाँ नाम उन्हींका निकला। फिर तो मारे खुशीके भदैया मेढ़ककी तरह कुर्सीसे उछल पड़े। यदि बीबी नसीबन पीछे खड़ी न होतीं, तो कुर्सी उलटकर नये

नवाब साहबपर चढ़ बैठती। पीछेकी ओर बीबीको खड़ी देखकर मियाँ साहब लपक पड़े।

बीबी—"आख़िर सुनूँ भी तो कि इतनी ख़ुशीकी वजह क्या है? अभी तो आप ख़ामोश बैठे थे और चन्द लहज़ोंमें ही इस क़दर बाग़बाग़ हो उठे! मालूम होता है, आजका पर्चा शायद कोई नई और अजीब ख़बर लाया है।"

मिस्टर सनहक "बेशक, आजसे तुम्हारा प्यारा चिराग़ अली नवाबज़ादा कहलायगा!"

ख़ुदाका शुक्र कहकर मुस्कराती हुई बीबी साहबा मियाँ साहबके सीनेसे अलग हुईं। घण्टोंतक मनही मन मुस्कराती रहीं। मिस्टर सनहक एक ग्रैण्ड पार्टीकी तैयारी करनेमें लग गये।

तीसरे ही दिन पटनाके हाकिम-हुक्काम, अफ़सरों, रईसों, वकीलों और बारिस्टरोंकी ख़िदमतमें दावतका कार्ड पहुँच गया। शामको बाग़ीचेमें केलनर कम्पनीका कैम्प गड़ गया। गुलज़ारबाग़की कोठीमें चहलपहल मच गई। फाटक पर लैण्डों-जोड़ियों और मोटर-गाड़ियोंकी भीड़ लग गई। गैस-बत्तियोंने कोठीके अहातेको जगमगा दिया। चमनके पास गड़े हुए सुसज्जित शामियानेमें जलसा जमा हुआ था। झाड़-फ़ानूसके नीचे खड़ी होकर बनारसकी 'राजेश्वरी' कानपर हाथ देकर तान मार रही थी—

"अजब आलम है उसका वज़ः सादी शक्ल भोली है।
छुदी जाती है दिलमें क्या रसीली नर्म बोली है॥

अनायें खेलती हैं रङ्ग तलवार उसने तोली है।
लहूकी चलती हैं पिचकारियाँ मक़तल में होली है॥
सियाही दाग़की सुर्खीमें है या जोशे मस्तीमें।
य' लालेने मये गुलरङ्गमें अफ़ियून घोली है॥
बहार आई चमन होता है मालामाल दौलत से।
निकाला चाहते हैं ज़र गिरह गुन्चोंने खोली है॥
ख़फ़ा क्यों हो जो आवाजे कसे आशिकने ग़ैरोंपर।
य' आज़ादोंकी बातें हैं य' उनकी बोलीठोली है॥
सुराही दौरमें आती है ज़ाहिद हों जो महफ़िलमें।
झुकाले अपनी आँखें दोख्तरे रज़की य' डोली है॥
नज़रबाज़ोंसे जो मिलती है लज्ज़त दिलमें रखते हैं।
तेरे दीदारके भूके फ़क़ीरोंकी य' झोली है॥
अदा ही से तेरी मरता है जो मरता है दुनियामें।
क़ज़ा कहते हैं जिसको वो इसी साँचेकी गोली है॥
वो कहते हैं कि हम आँखोंमें सबको ताड़ लेते हैं।
मुहब्बत सारी दुनियाँकी इसी काँटेमें तोली है॥
सबा इन मुँहबधी कलियोंने शबको किसकी चोरीको।
कि तू ने सुब्हको इक एककी बकची टटोली है॥
अमीर ऐसे शिगुफ्तः हैं मज़ामीं नाज़ुको रङ्गीं।
ग़ज़ल क्या है य' फूलोंसे भरी गुलचीं की झोली है॥"

इसी दरम्यानमें अरजेण्ट तार लेकर डाकिया आ पहुँचा। मिस्टर सनहकको तो तार पढ़नेकी फ़ुरसत थी नहीं। मैनेजर साहबने तारका लिफाफा फाड़ा। तार पढ़ते ही उनके पैरोंके नीचेसे धरती सरक गई। दाँतों जीभ काटकर मैनेजर साहबने

काँपते हुए हाथसे तारको लिफाफेमें घुसेड़ दिया। मिस्टर सनहकने पूछा—'किसका तार है ?'

मैनेजरने लिफाफेको जेबमें डालते हुए कहा—"है···एक··· यों ही···कोई ख़ास ज़रूरी बात नहीं है।"

मि० सनहक—"खैरियत तो है ?"

मैनेजर—"हाँ, कोई अंदेशेकी बात नहीं है।"

मि० सनहक—"आख़िर है किसका ?"

मैनेजर साहब (कुछ उदास होकर)—"लाट साहबका तार मालूम होता है।"

मि० सनहक (चौंक कर)—"ज़रा इधर देना तो।"

मैनेजरने हाथ बढ़ाकर दे दिया। तार पढ़ते ही नवाब साहबको ग़श आ गया। जमा-जमाया जलसा एकदम फीका पड़ गया। चायके प्याले ठण्ढे हो गये। कलिया, पुलाव और बरफ़ियोंकी तश्तरियाँ कुत्ते भी न साफ कर सके। बेचारे नवाबके हज़ारों रुपये पर पानी फेरनेवाले तारका मज़मून इस आशयका था—"अत्यन्त खेद है, कि भागलपुरके मिस्टर अहमककी जगह क्लर्कोंकी ग़लतीसे आपका नाम गज़टमें छप गया। आशा है, आप उदारतापूर्वक क्षमा करेंगे।"

छक्के पंजे !

घूंघूडाँगेमें जो एक सुन्दर फुलवाड़ी है, उसमें छक्कूबाबूका एक बड़ा बढ़िया बँगला है। छक्कूबाबूके स्वर्गीय पिता बड़े शौकीन थे। उन्होंने ख़ासकर अपने यारोंके लिये वह बँगला बनवाया था। अब उसमें छक्कूबाबूके यार जुटते हैं। आज दिवालीके दिन बंगलेमें जलसा जमा हुआ है। कोई रसगुल्ले उड़ा रहा है। कोई गुलछर्रे उड़ा रहा है। कोई बड़ी चौकसी-से चौसर खेल रहा है।

बंगलेके बीचमें जो कमरा है, उसमें गद्दीदार फ़र्श बिछा हुआ है। फ़र्श अगर दूधकी तरह उजला है, तो मक्खनकी तरह मुलायम भी है। पैर रखते ही मालूम होता है, कि पैर मलाई खा रहे हैं। बीचमें खिलाड़ी लोग गलेमें बेशक़ीमत सिकड़ियाँ, कलाईमें सुनहली घड़ियाँ, अंगुलियोंमें नगदार अंगूठियाँ पहने हुए बैठे हैं। बग़लमें नोटोंके पुलिन्दे और रुपयोंके तोड़े रखकर बाबू लोग मूछोंपर ताव दे देकर मुस्करा रहे हैं।

छ पाँच ग्यारहकी आवाज़से कमरा गूंज रहा है। दाँवपर दाँव लगाये जा रहे हैं। हज़ारसे नीचेकी तो चर्चा ही नहीं है। जीतनेवाले फूले अंग नहीं समाते। हारनेवाले झुंझला झुंझला-

कर घड़ीकी चेन और अंगूठियाँ दाँवपर लगा रहे हैं। बेचारे छक्कूबाबू शुरूसे हारते ही चले जाते हैं। पर तो भी दाँवपर हज़ारसे कम नहीं लगाते। हाथ मल मलकर भी हाथ बढ़ाते ही जाते हैं। मालूम होता है, कि आज जूएके उमंगमें सर्वस्व हार जानेको तैयार बैठे हैं।

उधर छक्कूबाबूके घरपर दीपावलीका उत्सव बड़ी धूमधामसे मनाया जा रहा है। उनकी ऊंची अटारियोंने बिजली-बत्तियोंका हार पहनकर अपना अनूठा रूप बना लिया है। लड़के-लड़कियाँ आतशबाजियाँ छोड़ रहे हैं। छक्कूबाबूकी स्त्री 'लक्ष्मी' आँगनमें बैठकर तुलसी-वृक्षके पास दीप-दान कर रही है।

इतनेही में सेठ निठालचन्दने बाहरके दरवाजेमें धक्का मारकर पुकारा—"छक्कूबाबू हैं?"

एक दासीने भीतरसे आकर जवाब दिया—"बाहर गये हैं।"

सेठ—"कबतक आवेंगे?"

दासी—"कौनसा काम है?"

सेठ—"बड़ी भारी ज़रूरत है। देखो, ऊपर बैठे हों, तो आकर ख़बर दो कि सेठ निठालचन्द आये हैं।"

दासी—"घरमें रहते, तो मैं बहानाबाज़ी क्यों करती? वे तो चार बजेसे ही बगीचे गये हैं।"

सेठ—"अच्छा, मैं समझ गया। आज वहाँ दिवालीका जलसा जमा होगा। ख़ैर, आवें तो कह देना, कि जहाँतक जल्दी हो सके—चन्द घण्टोंके अन्दर ही—उन्हें यह मकान

छोड़ देना पड़ेगा। आजसे इस मकानपर मेरा दख़ल-क़ब्जा हो गया।"

सेठजीकी बात सुनकर आंगनमेंसे दौड़ी हुई लक्ष्मी आई और किवाड़की आड़में खड़ी होकर बोली—"आप कौन हैं?"

सेठ—"मैं कौन हूं, इससे कुछ ग़रज़ नहीं। आज ही यह मकान छोड़ देना पड़ेगा। मैं अब एक दिन भी सब्र नहीं कर सकता। जितना मैंने क़र्ज़ दिया था, उससे अधिक तो सूद ही हो गया। वादे कर करके सालभर टालमटोलमें ही बिता दिया। आज आख़िरी वादेकी मीयाद पूरी हो गई। जिस जूएके भरोसे उन्होंने वादा किया था, उस जूएका नतीजा मुझे मालूम हो गया। मेरा तो माल और ब्याज डूब ही गया, पर अब छक्कू-बाबूके भी छक्के छुड़ा दूंगा।"

लक्ष्मी—"उन्होंने आपसे कब क़र्ज़ लिया था? कितना लिया था?"

सेठ—"यह सब मैं उन्हींको बतलाऊंगा।"

लक्ष्मी—"आज त्यौहारका दिन है। क्या आज भी आप दया नहीं कर सकते?"

सेठ—"अब दया उसी दिन दिखलाऊंगा, जिस दिन छक्कू बाबू भिक्षुक बनकर मेरे दरवाजे पर दाँत दिखाने जायंगे।"

इतना कहकर सेठजी चलते बने। लक्ष्मी घरके अन्दर जाकर गहरी चिन्तामें डूब गई। लड़के तमाशे देखने और बाहर घूमनेके लिये रुपये मांगने लगे, तो उसने बड़ी उदासीसे कड़ियों-

का गुच्छा झुंझलाकर फेंक दिया। लड़के भी कुञ्जियोंके गुच्छे-को पैरोंसे ठुकराकर—रूठकर—चले गये।

बड़ा लड़का फटकचन्द टैक्सीपर सवार होकर बगीचे चला गया। उसने सोचा, कि पिताजीसे रुपये लेकर शहर घूमने जाऊंगा; पर जब वह पिताजीके पास पहुंचा, तब उसकी आशाओंपर पानी फिर गया। पिताजीके पास धरा ही क्या था? उनके पास तो घर लौटनेके लिये टैक्सीका भाड़ा भी नहीं था। बेचारा फटकचन्द मुंह लटकाये घर लौट आया।

पहले तो बड़े लड़केको देखकर छक्कूबाबू सहम गये, परन्तु किसी तरह उसे टरकाकर फिर 'छ पाँच ग्यारह' की धुनमें मस्त हो गये। इतने ही में बाहरसे आते हुए कुछ आदमियोंके पैरों-की आहट मिली। खिलाड़ी लोग खलबला उठे। छक्के-पंजेका रङ्ग बिगड़ गया। यार लोग भागनेकी तरकीब सोचने लगे। तबतक मिस्टर हैण्डिल एक दरजन सिपाहियोंको साथ लेकर आ धमके। जहाँके वायुमण्डलमें छक्के-पंजेकी आवाज़ भरी हुई थी, वहाँ 'पकड़ो पकड़ो' की आवाज़ बुलन्द हो उठी। मिस्टर हैण्डिलने जुआड़ियोंके मुखिया छक्कूबाबूको गिरफ्तार कर लिया, यारोंके पास जो रुपये और गहने थे सब एक रेशमी चादरमें बंधवाकर दारोगाके हवाले किया और जूतोंकी गठरियाँ बंधवाकर बाबू लोगोंके सिरपर रखवाया। जूतोंकी गठरियाँ सिरपर लेकर बाबू लोग थानेमें गये और रात भर हवालातमें बन्द रहे।

प्रातःकाल होते ही बाज़ारमें छक्कू बाबू और उनके यारोंकी गिरफ्तारीकी ख़बर फैल गई। छक्कू बाबूके दिली दोस्त सेठ गटरूमलको उड़ती ख़बर मिली, कि छक्कू बाबू तो रातके जूएमें गिरफ्तार होकर हवालातमें पड़े हुए हैं। वे जलदी-जलदी बड़े थानेमें पहुंचे और बड़े पुलिस-अफ़सरसे जाकर बोले—"सुना है, कि मेरे मित्र छक्कू बाबू गिरफ्तार किये गये हैं। क्या उन्हें मेरी ज़मानतपर आप छोड़ सकते हैं?"

पुलिस—"क्या छक्कू टुम्मारा डोस्त है?"

सेठ—"जी हाँ।"

पुलिस—"कितने दिनोंसे डोस्टी है?"

सेठ—"कई साल हो गये।"

पु० अ०—"ओह, समझा, टुम भी पक्का जुवारी है। नहीं टो छक्कूसे टुम्हारी डोस्टी कैसी? छक्कू टो गुण्डा है। उसका घर जुवेका अड्डा है।

सेठ—जो कुछ आप समझें—लेकिन दयाकर सिर्फ इसबार उन्हें रिहाई कर दें।

पु० अ०—यहाँ जमानट नहीं हो सकटा, टुम कोर्टमें आना।

सेठने गिड़गिड़ा कर कहा—"सिर्फ एकबार दया करें। अगर हुक्म हो, तो किसी बड़े वकीलको जमानतके लिये ले आऊँ।

पु० अ०—"चुप रहो, जादा बकबक मट करो, बाहर जाओ, नहीं टो टुमको भी चालान कर देगा।

सेठकी तो नानी मर गई। उन्होंने मन-ही-मन सोचा "आया था रोजा बख़साने और गले पड़ी नमाज़! क्या करूँ अब यहाँ ज्यादा बोलनेसे अपने ही ऊपर आफत आयेगी। बेहतर है, कि घर चलूं। फिर कोर्टमें कल देखा जायगा!

साहबको सलाम करके सेठजी डरते-डरते घर गये और छक्कू बाबूकी स्त्रीके पास ख़बर भेज दी, कि 'मैं सख्त बीमार हूं। किसी आदमीको कल जमानत करनेके लिये कोर्टमें भेज देना। अगर कुछ भी तबियत अच्छी हुई, तो किसी तरह मैं ही जाऊँगा। मगर इस वक्त तबियतकी जैसी हालत है, उसे देखते हुए मुझे उमीद नहीं है, कि मैं कल कोर्टमें जा सकूंगा।' यह खबर भेजकर सेठजी चौतल्लेपर अपने कमरेमें चले गये और नौकरोंको कड़ी चेतावनी दे गये, कि किसीको पता न बतलावें।

इधर सेठजीने पैगाम भेजकर अज्ञातवास किया और उधर लक्ष्मीने सन्देशा सुनकर उपवास किया। वह अधीर हो उठी। उसने सोचा—"अब क्या करूँ? कीमती गहने पहले ही उतर चुके हैं, कमरेमें जो शीशे और कालीन थे, वे तो चले ही गये, इतना बड़ा मकान भी क़िस्मतसे उतर गया। अब घरमें क्या धरा है, जो बाज़ारमें भेजकर आबरू बचाऊं।"

लक्ष्मी यह सब सोच ही रही थी, कि फिर सेठ निठालचन्दने आकर दरवाजेपर दोहरी पुकार लगाई—"छक्कूबाबू! छक्कूबाबू!"

आवाज़ सुनकर दरवाज़ेकी ओर दासी दौड़ी। लक्ष्मीने उसे

इशारेसे रोककर कहा—"तू मत जा, मैं जाती हूं, कल जो सेठ आया था, वही फिर आया है।"

दासी—"तो उसको आज क्या जवाब दिया जायगा ?"

लक्ष्मी—"इस वक्त आफ़तपर आफ़त आनेसे मुझे कुछ सूझता नहीं। मगर जूआ खेलकर छछुन्दरका जन्म छुड़ानेवाले पति-देवतासे काम पड़ा है, तो कुछ न कुछ सच या झूठ कहकर जान छुड़ाना ही होगा। महाजनको तो रुपयेसे ही जवाब दिया जाता है।"

धीमे स्वरसे इतना कहकर लक्ष्मी दरवाजेके पास चली गई और अन्दरसे ही बोली—"आप जिससे मिलने आये हैं, वे तो इस वक्त हवालातमें हैं।"

सेठ निठालचन्दने चौंक कर कहा—"हवालातम ? हवा-लातमें कैसे गये ?"

लक्ष्मीने लम्बी साँस खींचकर रोते-कलपते हुए कहा—"क्या कहूं कि कैसे गये ! मेरी क़िस्मत फूटनेसे गये, अपनी करनीसे गये और क्या कहूं ?"

सेठ निठालचन्दने स्पष्ट शब्दोंमें कहा—"रोने-धोनेसे अब काम न चलेगा। इहाँ न लागहिं राउर माया ! कोई हवालातमें जाय या जहन्नुममें जाय, मुझे अपने टकेसे मतलब है। मैं रोना सुननेके लिये नहीं आया हूं, मुझे रुपये चाहिये और अगर अब भी रुपये नहीं हैं, तो आपको मकान अभी छोड़ देना पड़ेगा, जाकर उनके साथ हवालातमें ही रहिये।"

सेठकी खरी खरी बातें सुनकर लक्ष्मी चुप हो गई। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह चली। उसने दासीको बुलाकर कहा—"सेठजीसे जाकर कह, कि कलतक और सब्र करें। अगर वे न मानें तो उनसे कह, कि दो-चार घण्टेकी मुहलत दें और इस मकानका एक कमरा कुछ बचे-खुचे असबाब रखनेके लिये भाड़े पर देनेकी दया करें। फिर शामको सात बजे आकर घरमें ताला बन्द कर जायं, मैं धर्मशालामें जाकर रहूंगी, ईश्वर सबका मालिक है, कुछ तो दया करेगा।"

दासीने जाकर सेठजीसे लक्ष्मीका संवाद सुनाया। उन्होंने तेवर बदलकर कहा—"कमरेमें जो असबाब रक्खे जायंगे, उन्हें मैं एक-एक करके देख लूंगा। मैं किरायेके लिये कुछ लिखा-पढ़ी न करूंगा। कमरेमें जो कुछ रक्खा जायगा, उसकी भी कोई लिखा-पढ़ी न रहेगी। उसकी जिम्मेदारी मैं नहीं ले सकता। अगर इतना मंजूर हो, तो खुशीसे जो रख छोड़ना है सो रख जायं और नहीं तो मरज़ी उनकी, अपने साथ लेती जायं।"

लक्ष्मीने भीतर हीसे सेठजीकी बातें सुनकर इशारेसे दासीको बुला लिया। सेठजीने कहा—"मैं जाता हूं। शामको घरमें ताला बन्द करनेके लिये आऊंगा।"

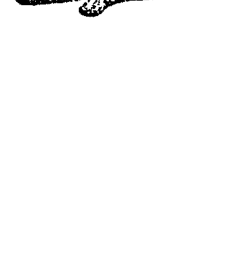
घर छोड़नेके लिये लक्ष्मी तैयार बैठी थी, पर शामको सेठ-जी नहीं आये। दूसरे दिन लक्ष्मीने स्वयं कोर्टमें जाकर अपने नामसे मजिस्ट्रेटके पास अर्जी दाखिल की और अपने छोटे

लड़केको इजलास पर भेजकर कहलवाया, कि 'इस बार दयापूर्वक क्षमा करनेकी प्रार्थना करती हूं। अब न तो मैं उन्हें जूआ खेलने दूंगी और न उनके लिये क्षमा माँगने आऊंगी।'

मजिस्ट्रेटके हृदयमें असहाय बच्चे और अभागिनी स्त्रीको देखकर करुणा उमड़ आई, उन्होंने छक्कूबाबूसे मुचलका लिखवाकर रिहाईका हुक्म दे दिया। छक्कूबाबू हवालातसे छुटकारा पाकर जब बाहर आये, तो लक्ष्मीसे आँख मिलते ही उनपर सौ घड़े पानी पड़ गये। उनका छोटा लड़का दौड़कर उनके पास चला गया और उनसे लिपटकर ऊपरकी ओर नज़र करके नीची नज़र निहारने लगा।

आँसूकी दो बड़ी-बड़ी बूंदें प्यारे बच्चेके गालोंपर चू पड़ीं। बच्चेने झट माताके पास जाकर कहा—"माँ, पिताजी रो रहे हैं।"

लक्ष्मीने अपने बच्चेके गालोंपर पड़े हुए पतिदेवके अश्रु-बिन्दुओंको आँचलसे पोंछते हुए बिलखकर कहा—"तुम्हारा भाग्य ही ऐसा है! क्या करोगे? गाड़ीवालेको पुकारो—"



मायाविनी मोहिनी

(१)

पटना स्टेशन पर ज्योंही 'पंजाब मेल' खड़ी हुई, सेकण्ड क्लाससे एक नवयुवक उतर पड़ा। वह अपने पतलूनके जेबोंमें हाथ डालकर प्लेटफार्मपर इधर-उधर टहलने लगा। उसने दूरहीसे देखा, कि उसी डब्बेमें एक सुन्दरी युवती बैठी हुई है। एक तो वह कालेजकी हवा खा चुका था, दूसरे अपने धनाढ्य पिताका इकलौता पुत्र था। निरंकुशता और स्वतन्त्रताके कारण उसकी बोटी-बोटी फड़क रही थी। अपने डब्बेके सामने आकर उसने बड़े ग़ौरसे उस सुन्दरीको देखा और देखकर कहा—"या अल्लाह, यह बला किधरसे आई!"

उस सुन्दरीको इसकी कुछ खबर न थी। वह फ़ोटो-चित्रों-का एक 'अलबम' लेकर देख रही थी। ज्योंही गाड़ीने सीटी दी, नवयुवकने समझा, कि इस सुन्दरीका कोई साथी आकर सवार होगा। किन्तु गाड़ी खुल जानेपर भी कोई नज़र न आया। नवयुवकके लिये दौड़कर गाड़ी पर चढ़ जाना बड़ा आसान था, क्यों कि कालेजकी 'फुटबाल-टीम' जब कहीं 'मैच' खेलने जाती थी, तब उसे कप्तान बनकर जाना पड़ता था और

प्राय: हर स्टेशन पर उतरकर मौज करनेवाले खिलाड़ी साथियोंको पहले चढ़ाकर गाड़ी खुल जाने पर ही उसे चढ़ना पड़ता था।

नवयुवक ज्यों ही डब्बेमें घुसा, सुन्दरी उठकर अलग बैठनेके लिये जाने लगी। नवयुवकने बड़े आग्रहसे कहा—"आप क्यों उठती हैं? बैठिये वहीं, मैं ही उस तरफ बैठ जाऊँगा।"

सुन्दरीने अपनी मुस्कराहटको रत्न-सम्पुटमें बन्द करते हुए कहा—"नहीं, नहीं, आप अपनी सीटपर आकर बैठिये, मैं ही उधर बैठना चाहती हूँ।"

युवक—"जब आपकी मर्जी ही ऐसी है, तो जाइये, शौक़से उसी तरफ़ बैठिये।"

सुन्दरी उठकर दूसरी जगह बैठनेके लिये जाने लगी। नवयुवकने ज़रा ठहरकर कहा—"और नहीं तो आप भी यहीं बैठिये, मैं भी यहीं बैठता हूँ, जब सोनेकी ज़रूरत होगी, तब मैं आपको कष्ट दूँगा।"

सुन्दरी—"अच्छी बात है, मैं सोनेके समय स्वयं हट जाऊँगी, इसमें कष्टकी कौनसी बात है? मैं भी सफ़र कर रही हूँ और आप भी मुसाफिर हैं। चन्द घण्टोंकी मुलाकातको तकल्लुफ़ करके बरबाद न कीजिये। आइये, बैठिये।"

नवयुवक भी सिर खुजलाता हुआ सुन्दरीके पास ही अपनी सीट पर बैठ गया। सुन्दरीने पूछा—"आप कहाँ जाते हैं? आते कहाँसे हैं?"

युवक—"मैं बनारससे आता हूँ और जाऊँगा कलकत्ता।

वहाँ मेरी माता बीमार है। आज अचानक पिताका तार पाकर मुझे कालेज छोड़कर जाना पड़ता है। अगर माता बीमार न होतीं, तो मैं हरगिज़ न जाता।"

सुन्दरी—"ऐसा क्यों कहते हैं? क्या आपकी बीवी बीमार होती, तो आप न जाते?"

युवक—"आपने भी खूब फरमाया, बीवी है ही कहाँ, जो बीमार पड़ेगी? अभी तो मेरी शादी भी नहीं हुई है। मैं बी० ए० पास करके इङ्गलैण्ड जाऊँगा।"

सुन्दरीने बीचहीमें कहा—"और वहींसे बीवी लाऊँगा। क्यों? आपलोगोंके लायक़ इस देशमें बीबियाँ हैं भी तो नहीं। कमसे कम बीबियोंके लिये तो वहाँ जाना ही पड़ेगा।"

सुन्दरीको इस तरह निस्संकोच बातें करते देखकर युवक हैरतमें आ गया। उसने कौतूहलके साथ पूछा—"आप कहाँ जायँगी? इधर कहाँसे आ रही हैं? कृपा करके पहले अपना परिचय दीजिये, मैं बड़े संकोचमें पड़ा हुआ हूँ।"

सुन्दरी—"संकोच जरा भी न कीजिये। मैं भी वहीं जा रही हूँ जहाँ आप।"

युवक—"क्या आप भी मेरे घर ही चल रही है?"

सुन्दरीने ठहाकेके साथ हँसकर कहा—यदि आपकी इच्छा होगी, तो मैं आपके घर भी चल सकती हूँ।"

युवक—"खैर, यह आपकी ऐन मेहरबानी होगी। मगर पहले अपना परिचय स्पष्ट बतलाइये। मैं बड़े असमंजसमें हू।"

सुन्दरी—“असमंजसके लिये तो मैंने साफ़ कह दिया, कि उसकी कोई जरूरत नहीं है। मेरा परिचय सुननेसे आपको कुछ फायदा न होगा। आपका नाम लाल बाबू है न?”

युवकने चौंककर कहा—“यह आपको कैसे मालूम हुआ?”

सुन्दरीने मुस्कराते हुए कहा—“अभी अभी मैं आपके चित्रों-का ‘अलबम’ देख रही थी। उसीमें आपके फोटोके नीचे आपका नाम लिखा हुआ है।”

युवक—“तो क्या आप अँग्रेजी पढ़ सकती हैं?”

सुन्दरी—“थोड़ी-बहुत अँग्रेजी भी जानती हूँ, पर नाम वगैरहके सिवा किताबें या अखबार नहीं पढ़ सकती। हाँ, रोमनमें जो कुछ लिख दीजियेगा, आसानीसे पढ़ लूँगी।”

युवकने चित्रोंका अलबम अपने हाथमें लेकर उसे खोलते हुए कहा—“इसमें और भी बहुतसे नाम हैं, ज़रा मेरे सामने उन्हें पढ़िये तो सही।”

अलबमकी जिल्द उलटते ही युवकने देखा, कि प्रथम पृष्ठ पर लगा हुआ उसका खास फोटो गायब है। वह इधर-उधर देखने लगा। सुन्दरीने पूछा—“आप क्या ढूँढ़ते हैं?”

युवक—“अपना फोटो।”

सुन्दरी—“मेरे पास है, यह देखिये।”

अपनी चुस्त जाकेटके जेबसे वह फ़ोटो निकालकर अलगसे ही सुन्दरीने दिखला दिया। युवकने अनुनयके साथ कहा—

"कृपा करके उसे इस चित्राधारमें ही रहने दीजिये, उसके बगैर इसकी शोभा बिगड़ जायगी।"

सुन्दरी—"माफ़ कीजिये, यह चित्राधारकी शोभा आजसे मेरा प्राणाधार बन गई। अब आप सब्र कर जाइये।"

युवक—"बिना पूछे किसीकी प्यारी चीज़ ले लेना बड़ी भारी बे-इन्साफ़ी है।"

सुन्दरी—"बेशक, लेकिन एक ही निगाहमें किसीका सर्वस्व लूट लेना बहुत बड़ी मुन्सफ़ी है। क्यों? वाहरे इन्साफ़!"

युवक—"आपने मेरा फ़ोटो कैसे पहचाना?"

सुन्दरी—"मैं प्लैटफ़ार्म पर खड़ी थी। तेजीके साथ गाड़ी आकर प्लैटफ़ार्मसे लग गई। मैंने पहले ही आपको इस डब्बेमें देख लिया। शायद आपने भी मुझे देखा था। मैं अपने साथियोंको दूसरे डब्बेमें जानेके लिये कहकर इसी डब्बेमें आकर बैठ गई। मैं यहाँ आ ही रही थी, कि आप झट गाड़ीसे नीचे उतर कर टहलते-टहलते आगे निकल गये। मैं जितनी देरतक अकेली यहाँ बैठी थी, एक एक मिनट मुश्किलसे कट रहा था। अचानक यह 'अलबम' मेरे सामने पड़ गया! जिल्द उलटते ही मेरी बेचैनी दूर हो गई। फिर तो आप आ ही गये। उसके बादकी जो हालत है, वह दिल ही दिलमें रखने लायक है। अगर मैं कहना भी चाहूँ, तो कह नहीं सकती। ख़ैर, जो हो, फ़ोटोके लिये माफ़ कीजिये। आप मेरी तरह उसकी हिफ़ाज़त नहीं कर पाते। उसे मैं कहाँ रक्खूंगी, यह ज़बानसे नहीं कहा जाता।"

युवक—"अगर अब भी आप अपना परिचय देना पसन्द नहीं करतीं, तो मैं आपके साथ अब किसी तरहकी बातचीत न करूँगा। मैं आपका परिचय सुननेके लिये इतना उत्सुक हो रहा हूँ, कि जो बातें हमलोगोंमें हो रही हैं उनका मुझे बिल्कुल ध्यान ही नहीं है। अतिशय कौतूहलके कारण मुझे इतना भी स्मरण नहीं, कि मैंने आपसे अभी क्या कहा और आपने उसका क्या जवाब दिया।"

सुन्दरीने गम्भीर होकर कहा—"मैं अपना परिचय बतलानेको तैयार हूँ, बशर्ते कि पहले आप अपना पूरा पता बतला दें।"

युवक—"मैं २०१ हरिसन रोडमें रहता हूँ। मेरे पिता हाई-कोर्टके वकील हैं। मेरा गरीबखाना तो शहर बनारसमें है, लेकिन मुद्दतसे हमलोग कलकत्तामें ही रहते हैं।"

सुन्दरी—"तो आप कलकत्ता छोड़कर काशीमें क्यों पढ़ते हैं?"

युवक—"कलकत्तामें रहते हैं तो क्या, काशी फिर भी अपना घर है और सबसे बढ़कर सुविधा यह है, कि मेरे चचा काशीके एक कालेजमें प्रोफेसर हैं। इस लिये मैं उन्हींके साथ रहकर पढ़ता हूँ। अब आप अपना हाल बतलाइये।"

सुन्दरीने अपने सिरका अंचल सरकाते हुए कहा—"मैं कल-कत्ताके बहूबाज़ारमें, १७३ नम्बरके मकानमें रहती हूँ। एक खास जरूरी कामसे मैं दो-चार रोजके लिये पटना गई थी। बस, मेरा इतना ही परिचय काफ़ी है। अब तो आप समझ गये होंगे?"

युवकने सरलतासे कहा—"मैं ठीक समझा तो नहीं, पर अनुमानसे कुछ-कुछ समझ रहा हूँ।"

सुन्दरीने भावभंगिमाके साथ कहा—"आपका अनुमान ठीक है। कुछ-कुछ नहीं, उसे ही पूरा समझिये।"

युवकने फिर अपना सिर खुजलाते हुए कहा—"तो क्या तुम........."

युवक बेचारा दाँतों जीभ काटकर चुप रह गया। सुन्दरी हँस पड़ी और हँसते ही हँसते बोली—"हाँ, हाँ, जो कहना है सो कह डालिये, चुप क्यों हो रहे?"

युवक—"अभी न कहूंगा। अच्छा, तो आपका नाम क्या है?"

सुन्दरी—"फिर लगे 'आप' कहने? 'तुम' ही मुझे अधिक पसन्द है।"

युवक—"माफ़ कीजिये, मैंने ग़लती की।"

सुन्दरी—"नहीं, आपका अन्दाज ठीक है। कह डालिये जो कहना है।"

युवक—"अच्छा, फिर कहूँगा।"

सुन्दरीने युवकको सिगरेट और सलाई देते हुए कहा—"अच्छा, तबतक सिगरेट तो पीजिये।"

युवक—"माफ़ कीजिये, मैं नहीं पीता।"

सुन्दरी—"ऐसा भी कहीं हो सकता है, कि कालेजमें पढ़नेवाला कभी सिगरेट न पीता हो? जिसके पिता हाईकोर्टके वकील हैं, उसे तो ज़रूर ही सिगरेट पीना चाहिये।"

सुन्दरीकी बात सुनकर युवक बड़े ज़ोरसे हँसा। उसने कहा—"आप शौक़ फ़रमाइये, मैं तो इस वक्त माफ़ी चाहता हूं।"

सुन्दरी—"जनाब, स्वराज-सिगरेट और बन्देमातरम्-सलाई है! ज़रा पीकर भी तो देखिये। अकेले भी कहीं शौक़ फ़रमाया जाता है? और 'इस वक्त' माफ़ी चाहनेसे तो यही मालूम होता है, कि आप 'और किसी वक्त' ज़रूर पीते हैं।"

युवक—"विश्वास कीजिये, मैं सच कहता हूँ—नहीं पीता।"

सुन्दरी—"अच्छा, तो मैं भी अब न पीऊँगी।"

इतना कहकर सुन्दरी उदास हो गई। युवकने कहा—"अगर आपको कुछ कष्ट न हो, तो मैं थोड़ी देरके लिये सो रहूँ।"

सुन्दरीने उदासीनता प्रकट करते हुए धीमे स्वरसे कहा—"हाँ, सोइये, मेरे साथ जागनेसे कहीं तबियत ख़राब हो गई, तो मुश्किल होगी।"

युवकने रुख पहचान लिया। उसने पूछा—"मेरे सिगरेट न पीनेसे आप कुछ ख़फ़ा हो गईं क्या?"

सुन्दरीने फिर उसी स्वरसे कहा—"ख़फ़ा होकर क्या करूँगी, यह तो आपकी मर्ज़ी है, मेरा कुछ दबाव थोड़े है? सोइये, देर हो रही होगी।"

युवक शान्त हो गया। सुन्दरी उठकर दूसरी सीट पर चली गई। युवक कुछ बोल न सका। वह सोना चाहता था, पर नींदका ख़याल ही जाता रहा। थोड़ी देर कुछ सोचकर वह

अपनी सीटपर बिस्तर बिछाने लगा, मगर आधा बिस्तर बिछाते-बिछाते वह कुछ मन-ही-मन सोचता हुआ चुप बैठ गया।

सुन्दरीने पूछा—"अब आप सोते क्यों नहीं?"

युवक—"आपके रंज हो जानेसे मैं अपनी हरकत पर बहुत पछता रहा हूँ।"

सुन्दरीने झट बिजलीका बटन दबाकर रोशनी बुझाते हुए कहा—"सो जाइये, बेकार क्यों पछताते हैं।"

युवक लम्बी साँस खींचकर रह गया। वह बत्ती न जला सका। जब पञ्जाब-मेल कोई स्टेशन पार करने लगती थी, तब वह कुछ प्रकाश पाकर देखता था, कि सुन्दरी खिड़कीकी ओर मुँह फेरकर बाहरी दृश्य देख रही है, यद्यपि उस समय चारों ओर घोर अन्धकारके सिवा और कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। जब आसनसोल-स्टेशन पर डाकगाड़ी खड़ी हुई, तब सुन्दरीने झट उठकर बत्ती जलाते हुए कहा—"माफ़ कीजियेगा, मैंने आपको बड़ा कष्ट दिया, अब मैं अपने साथियोंके पास जाती हूँ। आप बेफ़िक्र सोइये।"

इतना कहकर वह प्लेटफ़ार्म पर उतरने लगी। युवकने सुन्दरीका हाथ पकड़कर अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए कहा—"निकालिये सिगरेट, मैं अभी पी लूंगा, मुझे खुशीके साथ सिगरेट पिलाकर चली जाइये, मैं आपको रोकना नहीं चाहता; हाँ—'तुम' कहनेके लिये फिर माफ़ी माँगता हूँ। आशा है, आप उसका ख़याल न करेंगी।"

यह कहकर युवकने ज्योंही हाथ जोड़ा, त्योंही बाँयें हाथसे अंचलको बग़लमें दबाते हुए, दाहिने हाथसे युवकके जुड़े हुए हाथोंको झटकेसे अलग करके, उस भृकुटि-कुञ्चिता चारुहासिनी सुन्दरीने कहा—"तुम भी अजीब आदमी हो, आपसकी बातोंमें माफ़ी कैसी ? लो, मैं न जाऊँगी, तुम सो रहो, मैं असबाब वगैरह देखती रहूँगी।"

हाथ पकड़कर प्यारके साथ 'तुम' कहनेवाली सुन्दरीके नृत्य-शील नेत्रों और स्मित-विकसित कपोलोंको देखकर युवकके आश्चर्य्यकी सीमा न रही। वह स्तब्ध होकर सुन्दरीका मुँह ताकने लगा। उसने अपना हाथ छुड़ाना चाहा, पर छुड़ानेकी कोशिश न कर सका—इसलिये कि शायद सुन्दरी फिर रंज न हो जाय। उसने सरलतासे कहा—"मैं अब सो रहना चाहता हूँ। नहीं तो कल रातको जब माताकी तीमारदारी करनेके लिये फिर जागना पड़ेगा, तब मैं भी खाट पकड़ लूंगा।"

सुन्दरीने उसका हाथ धीरेसे छोड़कर प्यारकी निगाहोंसे उसके मुखड़ेकी ओर देखते हुए कहा—"अच्छा, सो रहो, मैं हवड़ा पहुंचकर जगा दूँगी।"

युवक अपनी सीट पर बैठ गया और सुन्दरी सामनेकी सीट पर जा बैठी। युवकको अपने बिस्तरे पर लेटते हुए देखकर सुन्दरीने बत्ती बुझा दी। वह सो गया। सुन्दरी स्थिर दृष्टिसे उसके मुखकी ओर देखने लगी। युवकका मुखड़ा निहारते-निहारते वह अधीर हो गई। उसे गाढ़ी नींदमें सोते जानकर

वह आहिस्ते-आहिस्ते उसके पास आकर बैठ गई और उसकी गोरी-गोरी कोमल हथेलियोंको धीरेसे चूमकर उसके गालोंके पास डरते-डरते अपने ओठोंको ले गई। उसी समय युवकने करवट बदली। वह सहम गई। किन्तु अपनेको सँभाल न सकी। उसने युवकके गालोंको धीरेसे चूम लिया। उसे रोमाञ्च हो आया, अंग शिथिल हो गये, मन-ही-मन मुग्ध होकर बोली—"अहा! कैसी मोहिनी मूरत है! चेहरेपर नूर बरस रहा है! 'इलाही कैसी-कैसी सूरतें तूने बनाई हैं, हरएक सूरत कलेजेसे लगा लेनेके क़ाबिल है!' नहीं, यह तो दिलके तावीजमें मढ़ लेनेके क़ाबिल है, हर खड़ी आँखोंमें रखने लायक है।"

इसी तरहकी बातें सोचते-सोचते वह सुन्दरी बग़लकी सीट पर बैठ गई। उसके हृदयकी अवस्था न जाने कैसी हो गई।

लिलुआमें ज्यों ही गाड़ी पहुंची, कमबख्त टिकट-चेकरने आ कर युवकको जगाना चाहा। सुन्दरीने उसे मना किया और दस रुपयेका एक नोट उसके हाथमें देकर घूँघट सरकाते हुए कहा—"तबियत अच्छी नहीं है, मत जगाइये।"

बस, सुबह होते ही मामूकी मुट्ठी गरम हुई, टिकट गया हवा खाने! वह सलाम करके ज्यों ही गाड़ीसे उतरा, गाड़ी खुल गई, सुन्दरी हँस पड़ी। युवकको मधुर गान सुनाकर जगानेकी इच्छासे वह भैरवी गाने लगी—

"सइयाँ मोरी निंदिया उचट गई राम………"

एक सुन्दर कामिनी-कण्ठसे निकला हुआ कोमल कलस्वर

कुसुमित रजनी-गंधाके आमोदसे भरी हुई शीतल प्रातवायुकी मन्द लहरोंमें भर गया। तानकी तरङ्ग और अलापकी उमंगमें जो माधुरी थी, वह निद्रा-निमग्न युवकके कानोंमें जादू जगा रही थी। एकाएक वह जाग पड़ा। सुन्दरी गाती ही रही। युवककी अलसानी आँखोंने सुन्दरी पर और मंदस्मिता सुन्दरीके अभिनव कण्ठ-स्वरने युवक पर जो प्रभाव डाला, वही इस घटना-का प्राण है।

हवड़ा-स्टेशन क़रीब देखकर सुन्दरी अन्तिम बार बिदा माँग-नेके लिये खड़ी हो गई। युवकने कहा—"परिचय न पानेसे मैं तो असमञ्जसमें ही रह गया?"

सुन्दरी—"१७३ नम्बर याद रहेगा, तो परिचय मिल जाना बहुत आसान है।"

युवक—"मेरे वहाँ आनेसे कोई बुरा तो न मानेगा?"

सुन्दरी—"ऐसा कभी ख्वाबमें ख़याल करनेकी जरूरत नहीं है।"

युवक—"अच्छा, मैं आनेकी कोशिश करूँगा।"

सुन्दरी उद्विग्न होकर बोली—"कोशिश? खैर, जैसी मर्जी।"

युवक गाड़ीसे उतर कर टैक्सी मोटर पर सवार हुआ। सुन्दरी चुपचाप खड़ी होकर उसे देखने लगी। इतनेमें सुन्दरीके साथी आ गये। वह भी एक टैक्सी मोटर पर सवार होकर चल पड़ी। दोनों मोटरें हरिसन रोड तक एक साथ आईं। सुन्दरीके साथियोंको देखकर युवकने 'लिफ़ाफेके अन्दरवाले खत'

का मजमूँ भाँप लिया। युवककी मोटर २०१, हरिसन रोडके सामने खड़ी हो गई। सुन्दरीकी मोटर आगे निकल चली। अन्तिम बार युवकको प्यासी निगाहोंसे देखकर सुन्दरीने फिर मिलनेका इशारा किया। युवकने गम्भीरतापूर्वक सिर हिलाकर उसकी आशा पर पानी फेर दिया!

(२)

रोग-शय्यापर पड़ी हुई अशक्त माता प्यारे पुत्रको सामने देखते ही उठ बैठी। माताके स्नेह-गद्गद-कण्ठसे केवल दो स्फुट शब्द निकले—"जुगजुग जियो।"

माताके सजल नेत्रोंको पोंछते हुए युवकने कहा—"माँ, सो रहो, बोलनेमें कष्ट होता होगा।"

माता पुनः प्रसन्न होकर बोली—"बेटा, तुम्हें देखते ही······"

बस, कण्ठ रुद्ध हो गया। युवकने हाथोंका सहारा देकर माताको सुला दिया। माताने अपने मुँहके पास हाथ ले जाकर इशारेसे कहा—"जाओ, कुछ खा लो।"

नाश्ता करके युवक अपने पिताकी आज्ञासे डाक्टर बुलानेके लिये घरसे बाहर निकला। सड़क पर आते ही उसका एक साथी सेठ सोहागचन्दका लड़का बिहारीलाल मिल गया। बिहारीने हँसते-हँसते कहा—"क्यों दोस्त, आज तो मैंने स्टेशन पर तुम्हारे साथ एक नई सूरत गाड़ीसे उतरते देखी है। कहो, बनारससे कोई सोनेकी चिड़िया तो नहीं उड़ा लाये?"

युवकने गलबहियाँ डालकर हँसते ही हँसते कहा—"यार बिहारी, क्या कहूँ, कुछ कहते नहीं बनता, इस बार स्वप्न-लोककी यात्रा करनी पड़ी है।"

बिहारी—"स्वर्गलोककी ?"

युवक—"तुम भी अजीब आदमी हो, 'स्वर्गलोककी यात्रा' तो मनहूस होती है, अशुभ है। अब कुछ ऊँचा सुनते हो क्या ?"

बिहारीने हँसकर कहा—"अभी कई वर्ष कालेजमें पढ़ोगे, तो यह भाषा समझोगे। ठट्ठा नहीं है!"

युवक—"हाँ, अब समझा, अच्छा, सुनो, तुम्हें सारी बातें ज्योंकी त्यों बतलाता हूँ।"

युवक सब बातें कह गया। बिहारीने गलबहियाँ छुड़ाते हुए कहा—"तुम इस समय जा कहाँ रहे हो ?"

युवक—"डाक्टरके पास।"

बि०—"मैं भी चलूँगा। चलो मेरे घर, वहींसे अपनी मोटर ले लूँगा, आओ।"

युवकने आग्रहपूर्वक कहा—"नहीं, मैं जल्दीमें हूँ, तुम्हारे घर-पर जानेमें देर होगी।"

युवकके लाख कहने पर भी बिहारीलाल जबरदस्ती पकड़कर उसे अपने घर ले गया। दोनों मोटर पर चढ़ चले। जो मोटर कैलास बाबू डाक्टरके दरवाजे पर लगनेवाली थी, वह उसी नं० १७३ के सामने जा लगी। युवकने आश्चर्यित होकर कहा—

"क्या यही कैलास बाबूका मकान है? यह तो उनका नहीं जान पड़ता। तुम बातोंमें फँसाकर मुझे कहाँ ले आये? लौटो, चलो यहाँसे, मोड़ो मोटर।"

बिहारीने मुस्कराते हुए कहा—"तुम गाड़ी पर बैठे रहो, मैं अभी डाक्टर साहबको बुला लाता हूँ।"

युवकके मनमें रुग्णा माताका ध्यान बँधा हुआ था। गाड़ी-पर बैठे-बैठे वह माताकी ही चिन्ता कर रहा था। इतनेमें अन्दर-से वही सुन्दरी निकलकर बोली—"आह री क़िस्मत, चन्द घण्टोंमें ही हौसलेके बाग़में बहार आ गई!"

सुन्दरीको देखते ही युवक आग बबूला हो गया। यदि वह मोटर चलानेका हुनर जानता होता, तो उसी समय गाड़ी लेकर उड़ जाता। पर मन-ही-मन बिहारीलालकी धोखेबाजी पर घृणा प्रकट करनेके सिवा वह और कुछ कर न सका। मोटरसे उतर-कर जब वह अपनी राह जाने लगा, तब सुन्दरीने लपक कर उसकी बाँह पकड़ ली और भीतरकी ओर खींचते हुए कहा—"कमसे कम एक-आध बीड़ा पान तो खा लो। इतनी जल्दी क्या पड़ी है?"

युवक—"माफ़ करो, समझ लो कि मैं पान खा चुका, इस वक्त एक मिनट भी नहीं ठहर सकता।"

सुन्दरी—"मज़ाल है, बिना पान खाये हरगिज न जाने दूँगी।"

युवकने खिन्नताकी हँसी हँसकर कहा—"अच्छा भई, यही सही, लाओ पान, जल्दी करो।"

सुन्दरी—"यहाँ कहाँ पान है ? ऊपर कमरेमें चलना पड़ेगा।"

युवक—"सो तो न होगा, मैं यहाँसे न टलूंगा, इसके लिये चाहे जो हो जाय।"

सुन्दरी—"ईमानसे कहती हूँ, सिर्फ पान खाकर खुशीसे नीचे उतर आना, रोकनेवालीकी ऐसी-तैसी। मैं खुद मौका समझती हू ।"

युवक ऊपर चला गया। कमरा बड़ी नफ़ासतके साथ सजा हुआ था। एक तरफ़से धीरे-धीरे आकर बिहारीलालने मुस्क-राते हुए कहा—"आदाब भाई मोहन, कहो, खैरियत मिजाज़ ?"

बिहारीको देखकर मोहन भीतर ही भीतर कुढ़ गया और झुंझला कर बोला—"तुमने अच्छा नहीं किया, क्या दोस्तीका यही मतलब है ?"

सुन्दरीने बीचहीमें कहा—"अच्छा क्यों नहीं किया ? 'मोहन' और 'मोहिनी' से मुलाकात करा दी, तो क्या बुरा किया ? दोस्तीका तो मतलब ही है—बिछुड़े हुए दिलोंको एक कर देना !"

युवक अनायास हँस पड़ा और अनिच्छाकी हँसी हँसते हुए बोला—"अब बड़ी देर हो रही है, मैं एक मिनट भी न ठहरूँगा, मेरा शरीर मात्र यहाँ है, प्राण वहीं अटका है।"

बिहारी—"वहीं कहाँ ? बीबीके घूँघट-पटमें ?"

युवकने आँखें तरेर कर बिहारीलालको चुप रहनेके लिये इशारा किया, पर मोहिनी बीच ही से बात ले उड़ी और मोहनको

ठुड्डी पकड़ कर हिलाते हुए बोली—'मुझसे तो बेदाग़ झूठ कह-कर निकल गये थे, मगर बेमौके आखिर पकड़े गये न ? कहो, अब क्या बहाना है ? तुम तो पूरे 'छिपे रुस्तम' निकले !"

मोहन भी हृदयमें उद्विग्नताको दबाकर खिलखिला उठा और फिर झुँझलाहटके साथ बोला—"अब अधिक दिक़ मत करो, मुझे जाने दो।"

इतनेमें एक अधेड़ औरत चाँदीकी तश्तरीमें पान-इलायची लेकर आई और बोली—"अब आज कहाँ जाइयेगा ? आज सुनती हूँ कि 'मोहन' और 'मोहिनी' की गाँठ जोड़ी जायेगी !"

इसी बातपर सबके सब ठहाका मारकर हँस पड़े। बिहारी भी मोहनसे हाथ मिलाने लगा। किन्तु मोहनके हृदयमें प्रफुल्लता-का स्पर्श तक न हुआ। उसने शिथिल अँगुलियोंसे एक इलायची उठाकर मुँहमें डाल लिया और बिनतीके साथ कहा—"मैं बाजारू पान नहीं खाता।"

मोहिनी—"ये नखरे ? कबसे ? खाना पड़ेगा।"

इतना कहकर मोहिनी जबरदस्ती पान खिलाने चली। मोहन-ने मना किया, हाथ जोड़ा, पर वह तुल गई। मोहन मुँह फेरता जाता था, मोहिनीका आग्रह बढ़ता जाता था। हाथापाईका बहाना ढूँढ़कर मोहिनी ज़बरदस्ती मोहनसे लिपट गई।

मोहिनीके लिपटते ही मोहन झुँझला उठा। उसने मोहिनी-की अपने गलेसे लिपटी हुई भुजाओंको जबरदस्ती अलग करते हुए झिझकके साथ कहा—"तुम्हें इस वक्त दिल्लगी सूझी है !

मुझ पर जो बीत रही है, वह मैं ही जानता हूँ। इस वक्त न पान खानेकी इच्छा है और न दिल बहलानेकी। तुम्हें किसीके ग़रज़से क्या निस्बत? तुम तो बस अपने ही शौककी धुनमें हो।"

मोहनकी इतनी बात सुनकर मोहिनी गम्भीर और स्थिर हो गई। उसकी डबडबाई हुई बड़ी-बड़ी आँखोंके मनोहर अञ्चलमें अश्रुमुक्तावलीकी झालर लग गई! उसने फूटकर रोना चाहा, पर दिल खोलकर रो भी न सकी, केवल कातर दृष्टिसे मोहनके मुखड़ेकी ओर देखती रह गई। ज्यों ही मोहनकी त्यौरी उतरी, त्यों ही उसका हाथ पकड़कर मोहिनी एकान्त कमरेमें ले गई और रोनेकी बेगवती प्रेरणाको न रोक सकनेके कारण खुलकर रोती हुई बोली—"तुम अभी जाना चाहते हो तो जाओ, मैं तुम्हें बरबस रोकना नहीं चाहती। लेकिन एक बात याद रखना;—अगर प्रतिदिन तुम्हारे दर्शन न होंगे, तो मैं मर जाऊँगी। मैं तुमसे रुपये-पैसे नहीं चाहती। मैं तुम्हें छेड़ना भी नहीं चाहती। तुम्हारी मर्ज़ीके खिलाफ़ मैं कोई काम करना नहीं चाहती। मैं सिर्फ इतना ही चाहती हूँ, कि दिनरात तुम्हें जी भरकर देखा करूँ और तुमसे बातें करती रहूँ—अब किसी दूसरेसे बातें करनेमें जी नहीं लगता। तुम्हें न देखनेसे मालूम होता है, कि देहमें जान ही नहीं है। जान पड़ता है, कुछ ऐसी चीज़ भूल गई है, जो ज़िन्दगीके लिये निहायत ज़रूरी है। जिस वक्त हरिसन-रोड पर तुम्हारी मोटर खड़ी हो गई और मेरी कुछ दूर निकल आई, उस वक्त मेरी छाती इस क़दर ज़ोरसे धड़कने लगी, कि

पसीना हो आया ! दुनिया मुझे वेश्या कहती है, इसलिये मैं तुम्हें अपनी सच्ची प्रीतिका सबूत नहीं दे सकती। लेकिन पापी और धर्मात्मा—सब—के हृदयकी सारी बातें जाननेवाले उस ईश्वरको साक्षी मानकर, अपने अबतकके जीवनमें सबसे बढ़कर प्यारी तथा आनन्द और सन्तोष देनेवाली जो वस्तु आज मैंने तुम्हारी शक्लमें पाई है, उसकी क़सम खाकर कहती हूँ, कि तुम्हें देख लेनेसे यही मालूम होता है, कि मैं सबकुछ पा गई—अब मेरे लिये संसारमें कुछ भी दुर्लभ नहीं है—मैं निहाल हो गई। न जाने तुम किस जन्मकी तपस्याके फल हो और अबतक न जाने कहाँ छिपे थे। मैं तुम्हें फँसाना नहीं चाहती। मुझे तुमसे किसी तरहकी कोई चाह नहीं है। तुम कहीं रहो, पर रोज एकबार मेरी आँखोंको तर कर जाओ, मेरे कानोंमें अमृत घोल जाओ ; बस, और कुछ नहीं।"

असमंजस और मुरौवतमें पड़कर मोहनकी विचित्र दशा हो गई। वह जल्दी कुछ कह न सका। उसकी शान्त मुद्रा देखकर मोहिनी अधीर हो गई और फिर उसके कंधे पर अपनी दाहिनी भुजा शिथिलतासे रखती हुई कुछ कहने लगी। किन्तु बीचहीमें मोहनने उसकी भुजा अपने कंधेसे उतारकर आश्वासन देते हुए कहा—"इस वक्त मुझे जाने दो। मैं फिर कभी आऊँगा, तो तुम्हारी सारी बातोंका पूरा-पूरा जवाब दूँगा। इस वक्त मेरा शरीर मात्र यहाँ है, ध्यान माताकी रोगशय्याके पास है।"

इतनेहीमें बाहर किसीने ज़ोरसे छींका। एकाएक मोहनका

दिल धड़क उठा। वह उद्विग्न सा होकर कमरेसे बाहर निकला और सीढ़ीकी ओर आगे बढ़ा। सीढ़ीसे उतरते-उतरते मोहिनीने फिर कहा—"मेरी बातें याद रखना, कहीं भूल न जाना, नहीं तो फिर मुलाकात न होगी।"

मोहनने नीचेकी अन्तिम सीढ़ीपर पहुंचते-पहुंचते कह दिया—"जबतक माता बीमार हैं, मैं आनेका ठीक वादा नहीं कर सकता। अगर इधर मौक़ा मिल गया, तो आ जाऊँगा। नहीं तो, फिर कभी और ही दिन सही, इतनी जल्दी क्या पड़ी है?"

मोहिनी निराशाके साथ बिलखकर सिर्फ इतना ही कह सकी—"अब अधिक तुमसे क्या कहूं।"

मोहन यह वाक्य सुनते ही सुनते दरवाजेसे बाहर निकल गया। मोहिनी खिड़कीपर बैठकर उसे सड़कपर जल्दी-जल्दी जाते हुए देखने लगी। किन्तु कुछ मिनटोंमें ही वह आँखोंसे ओट हो गया!

बिहारीलाल इस आशासे कुछ देरतक अटका रहा, कि मोहिनी कुछ बातें करेगी, पर उसने तो बिहारीलालकी ओर आँखें उठाकर देखा तक नहीं। बिहारीने उसके पास जाकर कहा—"मैं आया तुम्हारे घर और तुम बैठी खिड़कीपर? इसके क्या मानी?"

मोहिनी उपेक्षाकी दृष्टिसे एकबार बिहारीकी ओर देखकर फिर चुपचाप खिड़कीकी ओर देखने लगी। बिहारी मुँह बिचकाकर भनभनाता हुआ नीचे उतर आया और मोटर

लेकर तेज़ीसे दौड़ा। थोड़ी दूर आगे जाकर उसने मोहनको जल्दीबाजीमें जाते हुए देखा। मोटरको आगे बढ़ाकर उसने मोहनको रोका। हद दरजे तक हठ करने पर मोहन मोटरपर सवार हुआ। मोटर चलाते हुए बिहारीलालने हँसकर कहा—"यार मोहन, तुम तो पक्के जादूगर निकले!"

मोहनने बात टालते हुए कहा—"फिर बातोंके फेरमें डालकर कहीं इधर-उधर बहकाना चाहते हो? इस बार अगर लंठाधिराजी करोगे, तो ट्रामके नीचे दबकर प्राण दे दूँगा।"

बिहारी—"अच्छा भई, लो, मैं चुप ही रहूंगा, इस क़दर रंज क्यों हो गये?"

मोहन—"रंज नहीं यार, ज़रा अवसर और अवस्था पर भी तो ध्यान दो, पिताजी क्या कहते होंगे?"

बिहारी—"कहते क्या होंगे? जानते नहीं, कि डाक्टर हमेशा अपने घर पर बैठे नहीं रहते? कह देना कि डाक्टर साहब मरीज़ देखने गये थे। बस, किस्सा तमाम!"

मोहन—"तुम्हारे लिये मेरे सामने इतना कह देना बहुत आसान है, पर मेरे लिये पिताजीके सामने इतना कह देना बहुत कठिन है, यह तो तुम समझते हो न?"

बिहारी—"मैं सब समझता हूं। लेकिन तुम्हारे साथ मोहिनीका क्या भाव-बर्ताव है, यही मेरी समझमें नहीं आया। मैं अभीतक इसी उधेड़बुनमें हूं, कि माजरा क्या है? वह चाहती है और तुम नहीं चाहते अथवा तुम्हीं उसे चाहते हो, पर वह

तुम्हें नहीं चाहती ? असलियतका पता ही नहीं लगता। कुछ बतलाओगे भी ?"

मोहन—"कहाँ तो तुम मुझे ही कहते थे, कि अभी कई वर्ष कालेजमें पढ़ोगे, तो यह भाषा समझोगे और तुम खुद इतना भी नहीं समझ सके, कि हम दोनोंमें कौन किसको चाहता है ?"

बिहारी—"अगर सच पूछो, तो मेरी समझमें वही तुमको चाहती है। तुम भी मन-ही-मन चाहते तो ज़रूर होंगे, पर मेरे सामने तुम उस प्यारको जाहिर न कर सके, क्यों ? बात ऐसी ही है न ?"

मोहन—"नहीं, मैं क्यों उसे चाहने लगा ? क्या वह मेरी बीबीसे ज्यादा खूबसूरत है ?"

बिहारी—"यह मैंने कब कहा ? बेशक मैं तुम्हारी स्त्रीकी सुन्दरताकी बड़ी तारीफ सुन चुका हूँ, मगर, भई, घरेलू और बाजारू चीजोंमें बड़ा भेद हुआ करता है।"

मोहन—"होता होगा भेद, पर मुझे क्या मालूम ? तुम्हारे जैसे मनचले नौजवानोंके सिवा ऐसे-ऐसे भेदोंको दूसरा कौन जान सकता है ? पढ़ना-लिखना है ही नहीं, नौकरी-चाकरी है ही नहीं, चिंता किस बातकी ? इफरात दौलत है, चैनकी बंसी बज रही है! मेरी तरह ट्रङ्क भर किताबें रटना और आँखोंका तेल निकालना पड़ जाय, तो एक ही महीनेमें यह मोटरकी सवारी छोड़कर कंधोंकी सवारी पर नीमतल्ला घाटकी ओर चल दो।"

डाक्टरके मकानके सामने मोटर खड़ी करते हुए बिहारीने कहा—"यहाँ नीमतल्लाघाटका नाम लेकर शकुन मत बिगाड़ो, यही डाक्टर साहबका मकान है।"

इतना कहकर बिहारी मोटरसे उतर पड़ा। मोहन दरवाजे पर "OUT ON CALL" की तख्ती लटकी हुई देखकर ही समझ गया, कि संयोग बिगड़ता ही चला जाता है। वह मोटरसे न उतरा और हताश होकर बिहारीसे बोला कि, यार, अब क्या करना चाहिये?

इतनेमें डाक्टर साहबकी मोटर आ धमकी। बिहारीने आगे बढ़कर उनसे कहा—"हमलोग दो घण्टेसे आपके इन्तजारमें बैठे हैं। मोहनकी माताकी हालत बहुत खराब है। वकील साहबने फौरन बुलाया है।"

डा०—"मोहन कौन?"

बि०—"वकील साहबके लड़के लालबाबूका ही नाम मोहन है।"

डा०—"अच्छा, अब समझा, अभी चलता हूं।"

मोटर पर बैठे ही बैठे डाक्टर साहबने रोगियोंको आधे घण्टेमें वापस आनेका आश्वासन देते हुए ड्राइवरसे कहा—"कल रातको दो बजे जहाँ गये थे वहीं चलो।"

मोटर चल पड़ी। उसीपर मोहन भी बैठ गया। बिहारी अपनी मोटर लेकर घर चला गया।

डाक्टर साहबने पहुँचकर ज्योंही अपने दोस्त वकील साहबसे

हाथ मिलानेके लिये हाथ बढ़ाया, त्योंही वकील साहबने लम्बी साँस खींचकर उदासीनतापूर्वक कहा—"हमलोग सुबहसे ही आपके इन्तजारमें बैठे थे। वह गुजर गई!"

इतना कहकर उन्होंने रूमालसे अपना मुँह छिपा लिया। डाक्टर साहबको काठ मार गया। मोहन तो मोटरसे उतरते ही अपनी माताके कमरेमें चला गया था।

(३)

मोहिनीकी आँखोंको एक सप्ताह तरसते बीत गया। नींद हराम हो गई, भोजनसे अरुचि हो गई, सिंगार-पटार तो कतई छूट गया, चेहरा मुर्झा गया, किसीने रहस्य न समझा। कभी वह फोटो लेकर कलेजेसे लगाती थी, कभी देखते-देखते अचेत हो जाती थी और कभी बारम्बार उसे चूमकर रोने लगती थी। एक रोज शामको उसने मोहनके घर चलनेकी ठानी और उत्कण्ठा तथा व्यग्रताके आवेशमें अपने सारे गहने उतार डाले। सिर्फ एक फटी हुई मामूली साड़ी पहनकर वह घरसे निकल पड़ी।

* * * * *

वकील साहब अपने कमरेके सामने बरामदेमें बैठे हुए थे। उनके पास ही मोहनका लड़का खेल रहा था। एकाएक उनके कानोंमें आवाज आई—"मैं दिनभरकी भूखी हूँ। भगवान आपके बच्चेका भला करें।" वकील साहबने पीछेकी ओर नजर करके देखा, कि एक भिखारिन हाथ जोड़े खड़ी है। वकील साहबकी

नज़र पड़ते ही उस स्त्रीने अपना घूँघट सरका लिया। उन्होंने उसके हाथमें एक एकन्नी देते हुए कहा—"तू कौन है? क्यों भीख माँगती है? कोई काम क्यों नहीं करती? कहाँ रहती है?"

लगातार किये गये इन प्रश्नोंका कुछ उत्तर न देकर वह मुँह फेरकर खड़ी हो गई और रोने लगी। वकील साहब कुर्सीसे उठ खड़े हुए और दया दिखाते हुए बोले—"तुम्हारा शौहर कहाँ है? कोई बालबच्चा भी है? यहाँ कैसे आई?"

रोनेके सिवा वह स्त्री इन प्रश्नोंका उत्तर भी न दे सकी। वकील साहबने फिर कहा—"अगर तू मजूरिनका काम करना चाहे, तो मैं अपने घरमें तुझे रख सकता हूँ, मगर खाना-कपड़ा छोड़कर और कुछ न दूँगा। देख, इसी लड़केकी सेवामें रहना होगा। बोल, है मंज़ूर?"

उस स्त्रीने कनखीसे लड़केकी ओर देखकर सिर हिला दिया। वकील साहबने उसे राज़ी देखकर उससे फिर पूछा—"तेरे और कोई है या नहीं?"

उसने सिर हिलाकर कहा—"कोई नहीं।"

वकील साहबने अपने प्यारे पोतेसे मुस्कराते हुए कहा—"लल्लू, इधर देख तो, इस मजूरिनकी गोदमें खेलेगा?"

दादाकी बात सुनकर किलकता हुआ लल्लू हाथमें झुनझुना लिये हुए उस स्त्रीके मुँहकी ओर झाँककर हँसता हुआ अपने दादाकी ओर चला। भिखारिन बेचारी बरबस मुस्करा पड़ी।

वकील साहबका छोटा नौकर इशारा पाकर उस स्त्रीको लल्लूकी माताके पास ले गया और बोला—"मालिकने एक मजूरिन रक्खा है, यह भीख माँगती थी, अब लल्लूबाबू इसीकी गोदमें खेलेंगे।"

यह कहकर नौकर चला गया। लल्लूकी माँके चरणोंको पकड़कर उस नई मजूरिनने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"अब आप ही लोगोंका भरोसा है। मालिकने मुझपर बड़ी दया की है।"

लल्लूकी माँने अपने चरणोंको पीछेकी ओर खींचते हुए मजूरिनका सिर दोनों हाथोंसे पकड़कर कहा—"हाँ, हाँ, हाँ, यह क्या करती हो? तुम खुशीसे रहो, तुम्हारे साथ मेरे लड़केका जी लगेगा, तो मैं तुम्हें कहीं न जाने दूँगी। मुझे तो अब भगवानने घरमें अकेली कर छोड़ा। मैं तो यही चाहती थी, कि कोई दिल बहलानेवाली मजूरिन भी मिल जाती, तो एक सहारा रहता।"

इतना कहकर किशोरी उस मजूरिनका हाथ पकड़कर घरमें ले गई और अपनी एक साड़ी उसके हाथोंमें देती हुई बोली—"पहले इसे पहन लो और कुछ खानेको देती हूँ, सो खा लो, तब आगे बातचीत होगी।"

मजूरिन बड़े संकोचमें पड़ गई, मगर किशोरीने खुलासगीके साथ समझाते हुए कहा—"अब घरमें हमीं दोनोंको रहना है, इस तरह लजानेसे काम न चलेगा।"

किशोरीका आग्रह मजूरिनसे टालते न बना। वह साड़ी

पहनते-पहनते मन-ही-मन वह सोचने लगी—"क्या गृहस्थोंके घर-की देवियाँ ऐसी दयावती होती हैं? कभीकी देखादेखी—न जान-पहचान और एक राहकी भिखारिन पर इतनी दया? हे ईश्वर, 'गृहलक्ष्मी'की चर्चा तो बहुत सुनती थी, पर आज प्रत्यक्ष उसके दर्शन मिल गये! मैं धन्य हो गई! अबतक मैं अपने रूप पर बड़ा ग़रूर करती थी, पर इस देवीके रूपमें जो पवित्र शोभा है, इस खिले हुए मुखड़े पर जो प्रेम और लज्जाकी सुन्दर झलक है, इस कोमल हृदयमें जो दयाका अनूठा भाव है, वह मेरी जैसी पतिता अभागिनीको कहाँ और कब देखना नसीब होता? मेरा अहोभाग्य!"

खा-पी चुकनेपर किशोरीने मजूरिनसे तरह-तरहके सवाल करने शुरू किये। मजूरिन भी बड़ी होशियारीसे जवाब देती चली गई। सरल-हृदया किशोरीने मजूरिनकी बातोंको सोलहो-आने सच्ची समझकर कहा—"तुम्हारी हालत सुनकर मेरा कलेजा फट रहा है। यह सब सुनकर तो पत्थरका दिल भी पिघल जायगा। अच्छा, तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो, तुम्हें कोई कष्ट न होगा।"

मजूरिन प्रसन्न होकर बोली—"लल्लू बाबूके पिता कहाँ हैं? अबतक मैंने उन्हें एकबार भी नहीं देखा।"

किशोरीने हँसते हुए कहा—"उन्हें देखकर क्या करोगी? मैं उनसे तुम्हें बोलने न दूँगी। कहीं तुम्हारी सुन्दरता उनकी आँखोंमें गड़ गई, तो वही मसल होगी कि—'गाडर लाये ऊनको

'लागी चरन कपास !' आजकल तुम्हारी जैसी मजूरिनको कोई भलामानस अपने यहाँ नहीं रख सकता, क्योंकि सुन्दरता और जवानीके प्रतापसे आजकलकी मजूरिनोंको घरकी मालकिन बनते देर नहीं लगती। तुम इसे अपने ही ऊपर मत समझ लेना, मैं दुनियाका रंग-ढंग देखकर ऐसा कह रही हूँ।"

किशोरीकी बात सुनकर मजूरिनका मुँह छोटासा हो गया। उसने दीनतापूर्वक कहा—"क्या मुझपर आपका विश्वास नहीं है ?"

किशोरी—"विश्वास तुमपर भी है और उनपर भी है, मगर अपने-अपने धनकी रक्षा सबको करना चाहिये। ज़माना बड़ा नाजुक है।"

मजूरिन—"तो मजूरिनोंको जवान और सुन्दर न होना चाहिये ?"

किशोरी—"यह कहनेका मुझे अधिकार नहीं है, यह तो ईश्वरके हाथकी बात है। आजकलकी दासियाँ जो तमाशा कर रही हैं, वही मैंने तुमसे बयान किया है, तुम कोई दूसरी बात मत समझो।"

मजूरिन अनिच्छाकी हँसी हँसकर चुप रह गई। उसने फिर कभी किशोरीसे इस बातका ज़िक्र भी नहीं किया। वह लल्लूके लाड़-प्यारमें ही दिन-रात मग्न रहने लगी। लल्लू ही उसके प्राणोंका आधार बन गया। मजूरिनकी सजल आँखें उसीके भोलेभाले सुन्दर मुखड़े पर किसी अदृश्य प्रेमका प्रतिबिम्ब

चलकता हुआ देखने लगीं। किन्तु, फिर भी वह इस चिन्ताके कारण सदा उदास रहने लगी, कि अब लल्लूके पितासे बोलने-चालनेकी स्वतन्त्रता न रह सकेगी। जब वह इस चिन्तासे व्याकुल हो उठती थी, तो यही सोचकर सन्तोष ग्रहण करती थी, कि "बलासे, बातचीत नसीब न होगी, दर्शन तो होते रहेंगे, मैं उसीकी भूखी हूँ।"

मोहन बनारससे आया, तो पिताजीके चरण छू कर सीधे किशोरीके कमरेमें चला गया। वहाँ लल्लूको गोदमें लेकर बैठी हुई एक दूसरी सुन्दरी पर नज़र पड़ते ही वह झट कमरेसे बाहर चला आया। किशोरीने चञ्चल चरणोंसे बरामदेमें आकर कहा—"चले आइये, मजूरिन थी, हट गई।"

मोहन कमरेमें चला गया। मजूरिन अलगसे ही छिपकर मोहनको देख रही थी। वह नाश्ता-पानी लानेका ख़याल ही भूल गई। जब किशोरीने झुँझलाकर पुकारा, तब वह ताबड़-तोड़ जलपान वग़ैरह लेकर पहुँची। तश्तरी और गिलास तिपाई पर रखते-रखते मजूरिनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्वेद और पुलकसे भर गये। उसके पैर इस क़दर काँपने लगे, कि वह खड़ी न रह सकी, वहीं फ़र्श पर खेलते हुए लल्लूके पास धीरेसे बैठ गई। हृदयमें अत्यन्त तीव्र दर्शनोत्कण्ठा रहनेपर भी वह मोहनकी ओर आँख उठाकर देख न सकी। मोहन उसे पहचान तो गया, पर तो भी सन्देह और आश्चर्य्यसे छुटकारा न पा सका।

जब किशोरीकी दी हुई बाधाएँ उसके सन्तोष और धैर्य्यपर

असह्य अधिकारका भार लादने लगीं, तब वह बेचारी चिन्ता और ग्लानिके कारण ईश्वरसे मौतकी भीख माँगने लगी। अपनी स्वच्छन्द लालसाओंके नियन्त्रित हो जानेसे वह शय्याग्रस्त हो गई। मोहन जब कभी उसे देखने जाता था, किशोरी हँसते-हँसते कह उठती थी—"आप क्यों उसकी इतनी चिन्ता कर रहे हैं? क्या हमलोगोंकी सेवाशुश्रूषा पर विश्वास नहीं है?"

मोहन तो चुपचाप बाहरके बैठकखानेमें चला जाता था, पर ये वाक्य मजूरिनके कलेजेमें विषके बुझाये तीर-से चुभ जाते थे!

जिस दिन उसे मोहनके फिर काशी जानेकी बात सुन पड़ी, वह उद्विग्न होकर किशोरीसे हाथ जोड़कर बोली—"एकबार लल्लू और लालबाबूको देख लेती, तो अच्छा होता, अब मर रही हूँ।"

किशोरीका सदय-हृदय इस प्रार्थनाको अस्वीकार न कर सका। मोहन अपनी गोदमें लल्लूको लेकर रोग-शय्याके पास पन्द्रह मिनटतक खड़ा रहा, मजूरिनने भर नज़र देखकर आँखें बन्द कर लीं। फिर कभी वे आँखें न खुलीं!

"यह रहस्य काहु नहिं जाना।"

खादीकी शादी !

गत वसन्तपञ्चमीके दिन विन्ध्याचलके पास परमानन्दपुरमें लाला रामनाथकी लड़कीके साथ प्रेमापुरके लाला हरदयालके लड़केका विवाह हुआ है। लड़कीका नाम रामदुलारी और लड़केका केदारनाथ है। केदारकी अवस्था इस समय बाईस बरसकी है और रामदुलारी पन्द्रह बरसकी है। केदार हिन्दू-विश्वविद्यालयमें पढ़ता था। असहयोगके आरम्भकालमें उसने पढ़ना छोड़ दिया। इसलिये उसके घरवाले उसपर बहुत ख़फ़ा हो गये। वह आवारा समझा जाने लगा।

लाला रामनाथ कुछ गरीब हैं। खेतीबारी करते हैं, पर ऊपरकी कोई आमदनी नहीं है। किसी तरह गुज़र कर लेते हैं। इधर चार वर्षोंसे चरखेका बड़ा भारी सहारा है। उनका लड़का यदुनाथ चुनारमें टिकट-कलक्टर है। वह जो कुछ कमाता है, अपनी बीबीको सौंप देता है।

लाला रामनाथ आजसे पचीस-तीस वर्ष पहले पटनामें अफ़ीमके महकमेमें हेडक्लर्क थे। उस ज़मानेमें उनका क़लम खूब ओदा था। उन्होंने जो कुछ कमाया, इधर-उधरमें उड़ा दिया। यहाँतक कि क़र्ज़दार हो गये। जब ख़र्च न चला, तब

घूस लेने लगे। एकबार गहरी घूसखोरीके कारण पकड़े गये और बरख्वास्त हो गये। बरख्वास्त होनेके बाद पेन्शनकी उमीद भी जाती रही।

जब रामदुलारी नौ-दस सालकी थी, तभीसे लाला रामनाथ किसी अच्छे लड़केकी तलाशमें घूमने लगे। बुढ़ापाके कारण सालमें सिर्फ चार-पाँचबार लड़केकी तलाशमें बाहर निकलते थे। उनकी इच्छा थी, कि घर और वर दोनों अच्छे मिलें। जब वे हेड क्लर्क थे, तब हरदयाल भी उसी महकमेमें एक ओहदेदार थे। उसी ज़मानेमें लाला रामनाथसे लाला हरदयालने वादा किया था, कि मैं अपने लड़केकी शादी आपकी लड़कीसे करूँगा। किन्तु लाला रामनाथके सैकड़ों बार दौड़नेपर भी लाला हरदयालने अपना वादा पूरा न किया।

लाला हरदयाल हर तरहसे खुशहाल हैं। उनके पिता लाला गौरीशङ्कर बनारसके नामी वकील थे। उनके छोटे भाई लाला शम्भुदयाल जौनपुरकी अदालतमें बड़े मुनसरिम हैं। जब वे बनारसकी अदालतमें नौकर थे, तब केदारनाथ उन्हींके साथ रहकर विश्वविद्यालयमें पढ़ता था। उन्होंने असहयोग करते समय केदारनाथसे कहा था—"हुल्लड़शाहीमें पड़कर तुम लड़कपन तो कर रहे हो, पर आगे चलकर बहुत पछताओगे।"

केदारनाथ बड़ा शीलवान था और सङ्कोचके कारण मुनसरिम साहबके सामने कभी कुछ बोलता न था, पर उस दिन उसने छूटते ही कहा—"आप नौकरशाहीकी चक्की चला रहे हैं, इसलिये

आपकी दृष्टिमें यह हुल्लड़शाही है, पर मैं भारतमाताकी पुकार सुनकर उसके त्राणके लिये स्वतन्त्रताकी बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने जा रहा हूँ। इस समय समस्त भारतके नवयुवकोंका यही कर्तव्य है, कि देशोद्धारके लिये आगे बढ़ें।"

लाला शम्भुदयाल केदारनाथको बेटेकी तरह मानते थे। किन्तु उसी दिनसे वह उनकी नज़रोंसे गिर गया। उन्होंने सोचा था, कि एम० ए० पास कर लेनेके बाद इसका विवाह करूँगा। किन्तु वह तो बी० ए० की वार्षिक परीक्षामें भी सम्मिलित नहीं हुआ। वह तो दो-तीन बार जेलखानेकी हवा खा आया। इससे उसके घरवाले एकदम हताश हो गये।

हालमें जो युक्तप्रान्तीय राजनैतिक सम्मेलन काशीमें हुआ था, उसमें केदारनाथने अँग्रेज़ीमें ऐसी अच्छी स्पीच दी थी, कि नेताओंने उसे बार बार गले लगाकर सराहा था। उसकी प्रतिभा और वाक्पटुताकी भूरि-भूरि प्रशंसा सुनकर मुनसरिम साहब मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुए, परन्तु प्रकट रूपसे उसके मुँहपर कुछ कह न सके। हाँ, उसे सांसारिक बन्धनमें जकड़-कर उसकी स्वच्छन्दता और निरंकुशतामें बाधा डालनेका विचार उन्होंने स्थिर कर लिया। दूसरे ही दिन काशीके साप्ताहिक 'सूर्य्य' और गोरखपुरकी 'ज्ञानशक्ति' में विज्ञापन प्रकाशित हुए, कि 'आवश्यकता है एक उच्च कुल और शिक्षित परिवारकी सुन्दरी सुशीला कन्याकी, जो अधिकसे अधिक १२ वर्षकी हो और

जिसका फ़ोटो भी सुलभ हो।' फिर क्या था, पत्र और तार आने लगे, दरजनों फ़ोटो एकत्र हो गये।

केदारनाथको सभी फ़ोटो दिखलाये गये। उसने देखकर आगराके एक रायसाहबकी लड़कीका फ़ोटो पसन्द किया। लड़कीका नाम चन्द्रतारा था। रंगीन बूटेदार साड़ीमें उसका शरीर ढका हुआ था। मुखमण्डलपर विलक्षण प्रसाद और आह्लादका प्रतिबिम्ब चमकता था। मालूम होता था, कि तारा-ओंके समाजमें पूर्णचन्द्र शोभायमान हो रहा है। नयन और अधर प्रान्तमें मन्द मुस्कानकी माधुरी थी। शरीर हृष्टपुष्ट और ललाट उन्नत था। दृष्टि मधुर और कान्ति रमणीय थी। सबसे बड़ी तारीफ़ यह थी, कि हारमोनियम बजानेमें वह बड़ी प्रवीण थी।

शादीकी बातचीत होने लगी। रायसाहबने दो-तीन हज़ारमें ही यह यज्ञ पार लगानेका विचार किया। किन्तु मुनसरिम साहबने पाँच हज़ार एक मुश्त नक़द तलब किया। यह बात केदारनाथको अच्छी न लगी। वह बड़े असमंजसमें पड़ गया। फ़ोटोने उसका चित्त चुरा लिया था। एक ओर था लावण्यका स्वाभाविक अनुराग और दूसरी ओर सामाजिक कुप्रथा नष्ट करनेका दृढ़ साहस। साहस और अनुराग मानस-क्षेत्रमें परस्पर लड़ने लगे। दो दिनोंतक लड़ाई जारी रही। इसी दरम्यानमें केदारने आगराके अर्द्ध-साप्ताहिक 'देशभक्त' में पढ़ा, कि राय-साहबने म्युनिसिपैलिटीकी मीटिङ्गमें राजनैतिक नेताओंको नाम-

पत्र देनेका घोर विरोध किया है। बस, अनुरागपर साहस विजयी हो गया। केदारने साफ कह दिया, कि रायसाहबों और रायबहादुरोंकी लड़कियोंके साथ मैं विवाह नहीं कर सकता। यद्यपि रायसाहबकी कन्याका फ़ोटो मुझे निहायत पसन्द है, तथापि मैं ऐसे पिताकी सन्तानको जीवनसंगिनी बनाना नहीं चाहता, जो साधारण मनुष्यत्वसे भी गिरा हुआ है। शील, गुण और सौन्दर्य्यपर मुग्ध होकर आदर्श-भ्रष्ट हो जाना मेरे जैसे शिक्षित नवयुवकके लिये अत्यन्त लज्जाजनक है। किसी तरहका प्रलोभन मुझे देशके हितसाधनसे विमुख नहीं कर सकता।

मुनसरिम साहब हाथ मलकर रह गये। केदार चुपकेसे देहातमें प्रचार-कार्य्य करनेके लिये चला गया। देहातके लोग बड़े कौतूहलके साथ उसके व्याख्यानोंको सुनने लगे। एक तो कोमल अंग, दूसरे सुन्दर रूप, तीसरे मधुर भाषण और चौथे देशभक्तिके सच्चे भाव। बस, जहाँ कहीं जाता था, जादू डाल देता था। लाला रामनाथके गाँवमें तो उसने ऐसा जादू डाला, कि लोग उसे 'गाँधीजीका पायक' कहने लग गये। झुण्डकी झुण्ड देहाती औरतें 'गाँधीजीके पायक' को देखनेके लिये एकत्र हुईं। औरतोंके झुण्डमें केदारने देखा, कि एक भोलीभाली बालिका शुद्ध खद्दरकी साड़ी पहनकर खड़ी है—उसकी दृष्टिमें सरलता और शान्तिकी शोभा तथा चेहरेपर पवित्रता और सन्तोषकी झलक है। केदारने उस बालिकाकी ओर इशारा करके अन्य स्त्रियोंसे उसका अनुकरण करनेके लिये कहा। औरतें

खिलखिला उठीं! बालिका भी हँस पड़ी और धीरेसे झुण्डमें छिप गई। औरतोंने मुस्कराते ही मुस्कराते कहा—"यह बहुत बढ़िया सूत कातती है और इसके बाप तो पूरे जुलाहे हैं।"

बेचारी बालिका लजाकर भाग चली। औरतोंसे पूछकर केदार थोड़ी ही देरके बाद लाला रामनाथके घर पहुंचा। उसने देखा, कि आँगनमें बैठकर वही बालिका चरखा चला रही है और मृदुल मधुर कण्ठसे गाती जाती है—

"चरखा चला चलाकर
अब तो स्वराज्य लेंगे।"

केदारने दूरहीसे करबद्ध बन्दना की, फिर निकट जाकर कहा—"देवि! तुम धन्य हो। तुम्हीं भारतमाताकी सच्ची पुत्री हो।" यह सुनकर बालिका मुँह फेरकर बैठ गई और चुपचाप चरखा चलाने लगी।

केदारने करघा आदि देखकर फिर एकबार उस बालिकाको बड़ी श्रद्धा और प्रीतिके साथ देखा। बालिकाने भी आँगनसे बाहर जाते समय केदारको एकबार नीची निगाहोंसे देख लिया।

उसकी माताने पूछा—"यही गाँधीजीका पायक है? चरखा करघा देखकर बड़ा खुश हो गया है!"

लड़कीने मुस्कराते ही मुस्कराते कहा—"चरखा ही तो गाँधीजीका सुदर्शनचक्र है।"

केदारके नेत्र और कान 'सुदर्शन' से सन्तुष्ट हो गये। उसने काशी आकर दैनिक 'आज' में अपने विवाहका विज्ञापन प्रकाशित

किया और उसकी एक प्रति लाला रामनाथको भी भेज दी। लाला रामनाथ आर्य्यसमाज और तहसील-किसान-सभाके सदस्य थे। उन्होंने संकल्प किया था, कि सच्चरित्र और समाज-सुधारकसे ही रामदुलारीका विवाह करूँगा। 'आज' में जो विज्ञापन छपा था उसमें 'चरखा कातनेवाली लड़कीसे विवाह' करनेकी इच्छा प्रकट की गई थी। लाला रामनाथ अन्तिम बार लाला हरदयालके पास गये। उस समय लाला शम्भुदयाल भी अपने घर पर मौजूद थे। लाला शम्भुदयालने कहा, कि "पाँच हज़ार रुपये मिल रहे हैं। अगर आप चार हज़ार भी दें, तो शादी हो सकती है।"

बेचारे लाला रामनाथ हताश होकर लौट आये। उन्होंने फिर सोचा, कि लड़की दिन-दिन सयानी होती जा रही है। इसलिये, दस बीघे खेतमेंसे यदि पाँच बीघे क़बाला कर दूँगा, तो पाँच हजार रुपये मिल जायँगे और लड़कीकी शादी करके मैं निश्चिन्त हो जाऊँगा। फिर पाँच बीघेमें किसीतरह अपनी जिन्दगी कटती रहेगी। यही सोचकर वे फिर दुबारा लाला शम्भुदयालके पास गये और उनसे यह प्रस्ताव किया, कि रुपयेके बदलेमें पाँच बीघे खेत ही ले लें। लालाजी राजी हो गये। केदारको सूचना मिली। उसके मनमें रामदुलारीकी प्रत्येक क्षणकी स्मृति एक अविरल आनन्दका भाव जगा रही थी। उसने खोलकर कह दिया—"यदि बैल या घोड़ेकी तरह मुझे बेचा जायगा, तो मैं आत्महत्या कर लूँगा। खद्दर-धारिणी और चर्खा कातनेवाली

लड़कीसे मैं सहर्ष विवाह करनेको तैयार हूँ। यदि इसमें मुझ-पर किसी तरहका अनुचित दबाव डाला जायगा, तो परिणाम भयंकर होगा।"

लाला शम्भुदयालने सिर पीटते हुए कहा—"गाँधीकी आँधीने लड़कोंके दिमाग़में फ़तूर पैदा कर दिया!"

लाला रामनाथका मनोरथ और लाला हरदयालका वादा पूरा हो गया। केदारने दहेज़में केवल एक चरखा स्वीकार किया। यह वही चरखा है, जिसे रामदुलारी आँगनमें बैठकर चला रही थी। आज प्रेमापुरके प्रत्येक घरकी स्त्रियोंको वही चर्खा सूत कातनेकी शिक्षा दे रहा है और केदारनाथ जब कभी रामदुलारी को गाँवकी स्त्रियोंके सामने यह कहते हुए सुनता है, कि "बहनो, अपने पतियों और पुत्रोंको खद्दर-प्रचार और अछूतोद्धारके लिये उत्साहित करती रहो, इसीसे देशका कल्याण होगा।" तब मन-ही-मन प्रसन्न होकर ईश्वरसे कहता है—"हे प्रभो! वह दिन कब देखनेको मिलेगा, जब भारतवर्षका प्रत्येक नवयुवक ऐसी ही गृहलक्ष्मीको अपनी जीवनसंगिनी बनानेके लिये कटिबद्ध होगा?"

थैली लेकर चम्पत !

(१)

लालच भगतने अपने पुरोहितको एकान्तमें ले जाकर पूछा—"क्यों महाराज, मेरा काम तो आपने खूब किया ? वाह ! आपके भरोसे रहना तो बड़े धोकेका काम है। पुरोहितीको क्या दिल्लगी समझ लिया है ?"

पुरोहितने गिड़गिड़ाकर कहा—"नहीं जजमान, आपके लायक कोई असामी मिलता ही नहीं, क्या करूँ ? एक जगह तो पासा फेंककर आया हूं, आपका भाग्य जाने।"

लालच भगत—"मेरे लायक असामी मिलता ही नहीं ? क्या दुनियाँ सूनी हो गई ? ज़रा जी लगाकर तलाश कीजिये। अच्छा, अबतक कैसे असामी मिले हैं ? कुछ अन्दाज बतलाइये, तो मैं उन्हें फँसानेका ढंग बता ।"

पुरोहितजीने अपनी पाँचों अँगुलियाँ दिखलाकर कहा—"इससे बेशी नहीं मिलता।"

भगतजी—ऊपरसे तीन बिन्दियाँ भी हैं न ?

पु०—तीन कहाँ ? सिर्फ दो हैं।

भ०—गोली मारो। नहीं पट सकता। (दोनों हाथोंकी

अँगुलियाँ दिखलाते हुए) इसपर दो होनेसे पटरी बैठेगी। इससे कमका तो नाम न लेना।

पु०—अच्छा, तो कुछ दिन ठहरिये।

भ०—हाँ हाँ, ठहरनेके लिये तो मैं बरसों ठहर सकता हूं। जितने साल बीतेंगे, उतने हज़ार बढ़ते जायँगे। कोई चिन्ता नहीं। आप निश्चिन्त होकर ढूंढ़िए।

पु०—मगर डबल कमीशन लूंगा जजमान!

भ०—उसकी चिन्ता न कीजिये महाराज, आधा आपका और आधा मेरा। अगर इसमें उन्नीस-बीस हुआ, तो मैं अपने बापके असल पेशाबका नहीं।

पु०—बस बस, मैं पा चुका। अब क्या कार्त्तिक चढ़ते ही चढ़ते लीजिये न। गण्डों असामी जुटा दूँगा। घरसे सिर्फ बाहर निकलनेकी देर है।

(२)

भगतजी बैठे-बैठे हुक्का पी रहे थे। रातका समय था। इधर-उधर ताकते-झाँकते चुपकेसे पुरोहितजी आ पहुंचे। भगतजीका हाथ पकड़कर अन्दर ले गये।

बड़ी उमंगके साथ धीरे-धीरे बोले—"एकबार आपने कहा था कि भोलानाथको फँसाइये, वह बड़ा मोटा असामी है; तो मैंने उन्हें फँसा लिया।"

भगतजी हाथका हुक्का एक कोनेमें रखते हुए बड़ी स्पष्टताके

नाथ बोले—"मैं भोलानाथ या काशीनाथको नहीं पहचानता, मैं तो सिर्फ़ रूपचन्दको पहचानता हूँ। साफ़ कहिये, कहाँतक उनकी हिम्मत है?"

पुरोहितजीने भगतजीके लिहाफ़के अन्दर अपना हाथ ले जाकर उनकी पाँचों अँगुलियोंको दबाते हुए कहा—"इसीपर तीन बिन्दी। बस, इससे अधिक आशा नहीं है। तय कीजिये। हटाइये झंझट।"

भ०—मुझे आप पट्टी पढ़ाते हैं महाराज?

पु०—भगतजी अब जबान मत हिलाइये। बात मानिये। पहले उनके साथ सरोकार तो पैदा कीजिये। कितनी बिन्दियाँ हाथ लगेंगी। मैं जिम्मेवार हूँ।

भ०—नहीं महाराज, हाथसे चिड़िया निकल जानेपर फिर कौन पूछता है? दुनियाँ बड़ी चालाक है।

पु०—अच्छा तो जैसी आपकी मर्जी। मेरी तो यही अन्तिम चेष्टा है। मैं तो दौड़-धूप करके हार गया।

भ०—वाह, हार जानेसे पिण्ड थोड़े छूटेगा? उनके पास आनाजाना जारी रखिये। धीरे-धीरे पटाइये। समझाइये कि चोखा काम है, तो चोखा माल भी है। पुरोहितीमें बाल सफेद हो गये; मगर बात करनेका ढङ्ग अभीतक आपको मालूम नहीं हुआ।

पु०—अच्छा, आप जजमान हैं, जो कहना हो सो कह लीजिये। आपहीकी बात सही। उनके यहाँ आनेजानेका

सरोकार कहाऊँगा। उन्हें समझाऊँगा भी। आगे रामजीकी इच्छा।

(३)

गत माघ वदी ६ शुक्रवार (ता० १६ जनवरी १९२५) को भगतजीके घर बरात आई। भोलानाथकी सँवारी ज़ुल्फ़ोंमें ख़िज़ाब, नए दाँतोंमें सोना, आँखोंमें सुरमा, कानोंमें इत्र, हाथोंमें मेहँदी, मुँहमें पान,—समझिये कि पतझड़में वसन्तकी बहार थी! देख-देखकर स्त्रियाँ कानाफूसी करने लगीं। कोई अञ्चलमें मुँह छिपाकर खिलखिलाती और कोई मन-ही-मन मुस्कराती। भोलानाथको क्या परवा? वे तो अपनी धुनमें थे। खँडहरकी दीवारों पर गुलाबी पुचारा होने जा रहा था, मरुभूमिमें गङ्गाकी नहर निकलने जा रही थी, फिर ख़ुशीका क्या पूछना? भीतर-ही भीतर उछल रहे थे।

बेचारी यमुना बैठी तो थी मंगलमय मण्डपमें, मगर हृदयमें आधी रातके श्मशानकी तरह भयङ्कर लीला हो रही थी। भोलानाथको देखकर नहीं, थैली देखकर दिल-ही-दिलमें जल रही थी। भोलानाथ तो भाग्यकी रेखा थे, परन्तु वह थैली जीवनका कलङ्क थी—हृदयकी ज्वाला थी—आँखोंका काँटा थी।

शादीकी रस्में पूरी हो चुकीं। यमुना अपनी माँके पास चली गई। माँ ने उसके हाथोंमें कुञ्जियोंका गुच्छा और थैली देते हुए कहा—"बेटी, ज़रा इसको मेरी सन्दूकमें रख तो दे।

सन्दूक अच्छी तरहसे बन्द करके कुञ्जीका गुच्छा अपने ही पास रखना।

यमुना कुछ भी न बोली। कुञ्जियोंका गुच्छा और थैली लेकर कोठेपर चली गई। सबेरा हो रहा था। टिमटिमाते हुए दीपकके धुंधले प्रकाशमें थैलीको बड़े ध्यानसे देखा। दाँत पीसते और आँखें तरेरते हुए झुंझलाकर थैलीको पटक दिया। उसे पैरोंसे ठुकराकर थर-थर काँपने लगी। आँखें भर आईं। अङ्ग शिथिल पड़ गये। धीरेसे चुपचाप बैठ गई। आँखोंके आगे अँधेरा-सा छा गया। सिरमें चक्कर आने लगा। पसीने-पसीने हो गई! शरीरमें भीषण क्रान्तिकी लहरें उमड़ आईं।

दो-चार युवतियाँ दबे पाँव आकर दरवाज़ेसे झाँककर मनही मन हँसती चली गईं। दम-पट्टी देकर बुला लाईं भोलानाथको। घरके अन्दर जाकर बैठनेका इशारा करते हुए धीरेसे बोलीं— "चलकर बैठिये, हमलोग औरोंको भी बुला लाती हैं।" कहकर चञ्चल चरणोंसे चली गईं।

भोलानाथको तो ससुरालका रासमण्डल पसन्द था ही, चले गये घरके अन्दर। उनके पैरोंकी आहट पाकर यमुना अचानक सँभल गई। आधी रातकी तरङ्गहीन गम्भीर नदीमें जैसे किसी जबरदस्त मछलीके उछलनेसे सन्नाटेमें खलबली पैदा हो जाती है, वही दशा यमुनाकी हुई। सन्नाटा कमरा एकाएक गहनोंकी झनकारसे भर गया। बड़ी चञ्चलतासे साड़ीके अन्दर सारे अङ्गोंको समेटकर जहाँ बैठी थी, वहीं बैठी रह गई।

भोलानाथकी हालत न पूछिये। मशीनगनके सामने अहिंसात्मक असहयोगीकी-सी दशा हो गई। यमुना घूँघटकी घटामें चन्द्रमाको छिपाये बैठी थी। भोलानाथने काँपते हुए हाथोंसे यमुनाका घूँघट छूते हुए कहा—"अपनी सारी जमींदारी बेचकर दस हज़ार रुपयेमें तुम्हें पाया है। इतने पर भी अगर तुम्हारे दर्शनकी चाह बनी ही रह गई, तो मुझसे बढ़कर अभागा इस संसारमें कौन होगा?"

यमुना कुछ कहना ही चाहती थी, कि हमजोली सहेलियोंने धीमें स्वरसे पुकारा। भोलानाथकी बात सुनकर यमुनाके हृदयमें तीर चुभ गया। क्रोधसे उन्मत्त होकर उठी। नोटों और रुपयोंकी थैली अपनी गहनोंकी पेटीमें बन्द करके सहेलियोंके साथ नीचे चली गई। भोलानाथ चुपचाप बाहर चले गये।

यमुनाने अपनी माताको कुञ्जीका गुच्छा देकर अन्तिम बिदाई ली। फिर सब लोगोंसे मिलजुलकर अपने गहनोंकी पेटीके साथ पालकीमें सवार हुई और चली गई भोलानाथ और भगतजी —दोनों—का सर्वस्व लेकर।

कन्याकी बिदाईके बाद भगतजी फूले फूले घरमें आये, हँसते ही हँसते भगताइनसे कुञ्जीका गुच्छा लिया, उछलते कूदते कोठे पर गये, आनन्द-कम्पित हाथोंसे सन्दूक खोली—हाय! थैली गायब! छातीमें मुक्का मारकर चिल्ला उठे—"हायरे दादा! यमुना तो थैली लेकर चम्पत हुई!!"

पापका घड़ा फूटा।

पहली तारीखको आफ़िससे मुशाहरेके रुपये लेकर मैं ताबड़-तोड़ घरकी ओर आ रहा था। महीने भर खटने पर तीस रुपये मिले थे। सात बजेका समय था। शहरकी बिजली बत्तियाँ जल चुकी थीं। पसीनेकी कमाई अंटीमें थी। कलेजा काँप रहा था। शायद कोई छुरा लेकर पहुँच जाय और कलाई पकड़कर कहे—"कहाँ जाते हो? जो कुछ हो, सो यहीं चुप-चाप गिन दो।" चींचपड़ करूँगा, जीविका हाथसे निकल जायेगी। सोचता था, क्या कलकत्तामें महीने भर एँड़ीका पसीना चोटी पहुँचाकर मैंने मौत ही कमाई है? दस-दस रुपयेके तीन नोट जो मिले हैं, क्या वे मौतके परवाने हैं? लोग कहते हैं, कमाई ही जीवनका सहारा है। पर इस समय तो कमाई जीका जंजाल हो रही है। अभी तो सड़क पर चल रहा हूँ, अब चोरबागानमें पहुँचकर गलियाँ पार करके घरकी ओर जाने लगूँगा, उस समय क्या होगा? वहाँ तो पुलिस-का पहरा भी नहीं है। अगर हो भी, तो छुरा मारनेवाले अकसर पेशगी इन्तज़ाम किये रहते हैं। चोर चोरी करने जाते हैं, तो भूकनेवाले कुत्तोंके लिये पहलेहीसे गोश्तके टुकड़ेका

इन्तज़ाम कर लेते हैं। अभी चौथे ही रोज़की बात है, चिराग़-बत्ती होनेसे पहले ही इसी आगेवाले नुक्कड़पर एक मालदार मारवाड़ी लुट गया है। पुलिस ताकती ही रह गई। मारवाड़ी मोटर पर था। चाहता तो भाग भी सकता था। मैं तो एक ही डपटमें पेशाब कर दूँगा। अगर कहीं चमचमाता हुआ छुरा या पिस्तौल देख लूंगा, तो पाजामा बिगड़े बिना न रहेगा।

राम राम करके मैं मछुआबाज़ार स्ट्रीटसे बाहर निकला। छातीकी धड़कन कुछ कम हो गई। बार-बार आँखें बन्द कर परमात्माका ध्यान करने लगा। आगे बढ़ते ही शिवजीका मन्दिर मिला। हाँफता हुआ मन्दिरके अन्दर पहुँचा। सिरसे टोपी उतारकर शिवजीके चरणोंमें रख दी और आतुरतासे कहा—"प्रभो! आज कुशलसे घर पहुँच जाऊँगा, तो कल एक पैसेके कपूरसे आरती करूँगा।"

अधिक करता हो क्या, तीस रुपयेमें एक कौड़ी भी नहीं बचती। आकस्मिक आवश्यकताओंके लिये पेट काटकर बचाना पड़ता है, मेरा क्या दोष? शिवजीकी इच्छा ही नहीं है, कि मैं अपनी श्रद्धाभक्ति चरितार्थ करनेके लिये उनकी पूजा करूँ। जब कभी फूल-कटरेकी ओरसे निकलता हूँ, इच्छा होती है—एक माला लेता चलूँ शिवजीपर चढ़ाकर पत्नीके लिये लेता आऊँगा। अकस्मात ध्यानमें आ जाता है—आज तरकारी नहीं है, सब्जीके बाड़ेसे कुछ लेता चलूं। भक्ति हवा हो जाती है। क्या शिवजी यह सब नहीं जानते?

मन्दिरसे निकलकर गलीके मुहानेपर मैं खड़ा हो गया। उसी बग़लकी गलीसे घर जाना था। इधर-उधर ताक-झाँककर गलीमें घुसने लगा। रोंगटे खड़े हो गये। पैर थरथराने लगे। छातीके भीतर कोई सुर्खी कूटने लगा। हाथोंकी बार-बार यही इच्छा होती थी, कि अंटीके पास चिपके रहें। मैं जबरदस्ती उन्हें रोकता चला जाता था। शायद कोई अंटी पकड़नेसे ताड़ जाय। हाथ छटपटाते थे। मैं उन्हें हिलाता और झकझोरता हुआ क़दम बढ़ाये चला जाता था। अगर दाहना हाथ नोटोंको छूता था, तो बायाँ हाथ उसपर झपट पड़ता था, मरोड़ डालता था। आगेसे एक उड़िया आ रहा था। जान घपलेमें पड़ गई। वह तगड़ा था। एक चपत कसकर जमा देता, तो मैं बिना सोचे-बिचारे प्राणोंका मूल्य चुका देता। उसदिन मेरे प्राणोंका मूल्य क्या था ? सिर्फ तीस रुपये !

मैं निर्विघ्न आगे बढ़ता गया। थोड़ी-थोड़ी दूरपर लालटेनें मिल जाती थीं। एक लालटेनके पास पहुँचते ही मैंने एक स्त्रीके रोनेकी आवाज़ सुनी। मैं खड़ा हो गया। उस सिसकमें मानसिक वेदना थी। वह वायुमण्डलमें करुणा भर रही थी। मालूम होता था, सहानुभूति उससे कोसों दूर है। छातीका धड़कना एकाएक बन्द हो गया। भयकी भावना लुप्त हो गई। हाथ शिथिल और कान सावधान हो गये। आँखें चकित होकर चारों ओर देखने लगीं। सामनेकी खिड़की पर एक बालिका बैठी रो रही थी। मैं उसे अच्छी तरह देख न सका। उसके

कमरेमें बिजलीबत्ती जल रही थी। मैं लालटेनके खम्भेके पास खड़ा था। आँखें चौंधिया जाती थीं। मैं आगे बढ़कर अन्धकारमें चला गया। गौरसे ऊपरकी ओर देखने लगा। बालिकाकी अवस्था १२-१३ वर्षकी थी। रूपवती खूब थी। सिङ्गार भी किये हुए थी। कभी सिर नीचा करके सिसकने लगती थी। कभी खिड़कीसे बाहर चकित नयनोंसे झाँकती हुई आँसू ढालती थी। मैं करीब दस मिनटतक दाँतों अंगुली दबाए वहीं खड़ा रहा। घर पहुँचनेकी सुध भूल गई। हृदय अधीर हो चला। उद्वेग बढ़ने लगा। आगेसे किसीके आनेकी आहट मिली। मैं धीरे चलने लगा। एक बूढ़ा शौकीन आदमी नज़र आया। साथमें एक अधेड़ औरत भी थी। मैंने समझा, दोनों शराब पीकर झूमते चले आते है—रण्डी और बदमाश हैं। फिर अंटीपर हाथ चला गया। सिरके बालतक खड़े हो गये! भयके सञ्चारसे कलेजा धड़कने लगा। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ता ही चला गया। जब उन दोनोंको पारकर आगे निकल गया, तो एक-दो बार पीछेकी ओर मुड़कर देखा, दोनों उसी घरमें घुस गये, जिसकी खिड़कीपर बैठी, वह सुन्दरी बालिका रो रही थी। मैं लौटकर देखनेकी हिम्मत न कर सका। त्राहि त्राहि करते घर पहुँचा। रुपये बच जानेकी खुशी ज़रा भी नहीं हुई। उस रुलाईमें किसीकी जुदाईकी पीड़ा थी या किसी सामाजिक अत्याचारका हाथ था, इसी उधेड़-बुनमें रातभर नींद नहीं आई।

* * * * *

उसी गलीसे मैं रोज़ ही आफिस जाया करता हूँ। तीसरी तारीखको मैंने देखा, कि उस घरके दरवाज़ेपर खड़े होकर दो नवयुवक बङ्गाली उपर्युक्त अधेड़ औरतसे हँस-हँसकर बातें कर रहे थे। मैंने सोचा, दालमें कुछ काला ज़रूर है। इसलिये, शामको चिराग़-बत्तीके वक्तसे पहले ही आफिसका काम ख़त्म करके मैं चल पड़ा। ज्योंही उस गलीमें घुसा, पीछेसे मेरे एक सैलानी मित्रने ज़ोरसे पुकारते हुए कहा—"कनक! कहाँ जा रहे हो यार, इस गलीसे?"

मैं—इसी गलीसे तो मैं रोज अपने घर आया करता हूँ। क्यों, बात क्या है?

मित्र—"क्यों छिपाते हो यार?"

मैं—"तुम्हारी बातका मतलब मैं नहीं समझा।"

मित्र—"क्या खूब! तुम कैसे समझोगे? अच्छा आओ, अकेले ही अकेले कबतक निभेगी?"

मैं—"केवल सूत्र ही बोलोगे या उसका भाष्य भी करोगे?"

मित्र—"आजकल तुम्हारे जीवनमें नये प्रेमका सूत्रपात हुआ है—यही सूत्र है और तुम इस समय अपने उपास्यके पास आ रहे हो—यह भाष्य है।"

मैं—"आह! तुम भी अच्छे अटकलपच्चू निकले। इस तरह हवामें गिरह बाँधोगे?"

मित्र—झूठे बहानेकी सूखी राखमें धधकती आगको क्यों छिपाते हो दोस्त?"

मैं मित्रकी बात सुनकर भौंचक सा रह गया। मैंने शपथ खाकर अपनी सफ़ाई दी और आग्रहपूर्वक उसका आशय पूछा। मेरी सरलतापर विश्वास करके मेरे मित्रने मेरे कन्धेपर हाथ रख-कर गलीमें आगे बढ़ते हुए कहा—"मैं तुमसे तफ़रीह नहीं, बल्कि सच्ची और कामकी बात कह रहा था। इसी गलीमें हमलोगोंका मित्र चन्द्रकुमार छला गया है। शायद तुम्हें मालूम नहीं है, क्यों-कि यह परसों ही की घटना है। मैंने हँसी ही हँसीमें तुमसे यह जाननेकी इच्छा की थी, कि शायद तुम भी तो आजकल कहीं ठगे नहीं जा रहे हो।"

मेरा कौतूहल और भी बढ़ गया। मैं खड़ा हो गया और बोला—"जबतक सब बातें स्पष्ट न कहोगे, मैं एक क़दम भी आगे न बढ़ूँगा।"

मित्र—"चलो, मैं तुम्हें घटनास्थल पर ही ले चलता हूँ।"

मैं—"एक इञ्च भी नहीं टलूंगा। यहीं सब बातें कह लो। फिर जहाँ कहोगे, बेखटके चला चलूंगा।"

मित्र—"बहुत खूब। यहीं सही। पहली बात यह, कि इस गलीसे आना-जाना छोड़ दो। आगेके मोड़के सामनेवाले मकान-में एक औरत रहती है। वह सात-आठ कमसिन लड़कियोंको कहींसे उड़ा लाई है। एक बूढ़ा उसका मददगार है। वह पक्का दलाल है। उसने चन्द्रकुमारको ऐसा चूना लगाया है, कि उनका सारा 'सत्यार्थप्रकाश' ही भूल गया!

मैं—"अच्छा! हाँ, फिर—

मित्र—"तुम कुछ गम्भीर और चकितसे क्यों हो गये ?"

मैं—"तुम कहते जाओ, बतलाऊँगा ।"

मित्र—"हाँ, तो चन्द्रकुमारको तुम जानते ही हो, कि वह कैसा कट्टर आर्य-समाजी है। उसने प्रण कर रक्खा था, कि बाल-विधवासे ही विवाह करूँगा। मामूका ऐसा विवाह हुआ, कि विवाहके पीछे तबाह हो गये।"

मैं—"सो कैसे ?"

मित्र—"क्या पूछते हो यार, हँसी भी आती है और रुलाई भी।"

मैं—"पहले बात भी तो पूरी कर लो। फिर हँसना-रोना होता रहेगा।"

मित्र—"उस दलालने चन्द्रकुमारको उसी मकानमें ले जाकर एक सुन्दरी लड़की दिखलाई। लड़की बेशक विधवा थी। चन्द्र-कुमारके मनमें जँच गई। दलालने पेशगी माँगी। बच्चूने अधीर होकर पूरी रक़म दाख़िल कर दी। एक दिन तो हवनकी सामग्री-की फिहरिस्त तैयार करनेमें ही बीत गया। दूसरे दिन लड़की लापता हो गई। अब बच्चू घरके रहे न घाटके! चुपके-चोरी आठ सौ रुपये कर्ज लाये थे! अभीतक यह सारा मामला हम-लोगोंसे छिपाते थे! जब थानेमें जानेकी नौबत पहुँची है, तब भंडा फूटा है। मित्रोंसे दग़ा करनेका फल आनन-फानन मिलता है।"

मैं—"इसमें क्या शक? मगर भई, बात तो बड़ी बुरी हुई।

मामला बेढब है। उसने दगा किया तो क्या, हमलोगोंको उसका सच्चा मित्र बनना चाहिये।"

मित्र—"ज़रूर। इस वक्त चलते हो थानेमें? अभी सुना है, कि वह दलाल साला गिरफ्तार हो गया है।"

मैं—"चलो थानेमें सिपाहियोंको कुछ पैसे चटाकर साले दलालको दो-चार-दस घूँसे-थप्पड़ लगवाएँ।"

मित्र—"चुप, कहीं आग लगी है। सुनते हो शोरगुल? आओ, चलो, देखें तो सही क्या है।"

हमलोग सिर्फ पचीस या तीस कदम आगे बढ़े होंगे। इतने हीमें सशस्त्र पुलिस-दलसे घिरी हुई ग्यारह लड़कियाँ, वही अधेड़ औरत और बूढ़ा मर्द तथा तीन और भी बूढ़ी स्त्रियाँ नजर आईं। उन ग्यारह लड़कियोंमें वह "एकादशी" भी थी, जिसके कारण उस रातको मेरी नींदने एकादशी मनाई थी। वह "चन्द्रकुमारी" ही उस नक्षत्र-समाजकी शुभ्र चन्द्रलेखा थी। अड़ोस-पड़ोसकी स्त्रियाँ अपने-अपने घरोंकी खिड़कियोंपर बैठकर हाय-हाय करती हुई छाती पीट रही थीं और टोले-मुहल्लेके पुरुष कहते थे—"न जाने यह किस मूजीका मकान है। पता नहीं कबसे इसमें इतनी लड़कियाँ कैद थीं। ओफ! बेचारी बालविधवाओं पर कैसी आफ़त है! खैर, पापका घड़ा फूटा तो सही!

गड़बड़ घोटाला

उस साल मि० कचूमरके 'प्रेतनी-पिशाच' की बाज़ारमें भयङ्कर धूम थी। पार्सी थियेटरके स्टेजपर यह पहला नाटक था, जिसे दर्शकोंने इतना पसन्द किया था। लोग लँगोटी बेंचकर उसे देखनेके लिये टूट पड़ते थे। महीनों पहलेसे 'सीट रिजर्व' कराने पर, तब कहीं जाकर नाटक देखनेका सौभाग्य प्राप्त होता था। थर्ड क्लास और फोर्थ क्लासके दर्शकोंमें 'सीट' के लिये प्रायः रोज ही लट्ठमलट्ठा और घुस्समघुस्सा हो जाया करता था।

बात असल यह थी, कि 'प्रेतनी-पिशाच' की रचना करनेमें नाटककारने कलम तोड़ दिया था। रचना-कौशल, सीन-सीनरियोंका समावेश, चरित्र-चित्रण और घटनाओंकी घटाटोप, स्थान स्थानपर भावपूर्ण गानोंका समावेश आदि सभी नाटकोचित गुण इसमें ठूंसठूंसकर भर दिये गये थे। इस नाटकका अभिनय करनेमें अभिनेताओं और अभिनेत्रियोंने भी कोई दक़ीक़ा बाक़ी नहीं रखा था। जिस तरह नाटककी रचनापर कितने ही परलोकवासी नाटककारोंकी आत्मायें लट्टू थीं और थियेटर हालपर मँडराया करती थीं, उसी तरह अभिनय देखकर दानी बाबूको भी दाँतों अँगुली दबा लेनी पड़ती थी, और गाने सुनकर गौहरजानको

ग़श आ जाता था। साथही सीन-सीनरी और पर्दा-पोशाकमें प्रचुर द्रव्य खर्चकर कम्पनीवालोंने भी सोनेमें सुगन्ध भर दी थी।

आज 'प्रेतनी-पिशाच' की अन्तिम अभिनय रजनी है। क्योंकि समस्त देशको इस नाटकसे लाभान्वित करनेकी इच्छासे कम्पनी मुफस्सिलका दौरा करनेवाली है। नाटक आरम्भ होनेमें पहरोंकी देर है, परन्तु अभीसे दर्शकोंका समुद्रसा उमड़ पड़ा है। इधर प्रातःकालसे आकाश भी मेघाछन्न है। कुछ कुछ बूँदें भी पड़ रही हैं। अभिनय आरम्भ होनेमें केवल एक घण्टेकी देर है। थियेटर हालके सामनेवाली सड़कपर मोटरों, गाड़ियों और रिकशों का बाजार सा लग गया है। थियेटर-हाल दर्शकोंसे खचाखच भरा है। 'न स्थानम् तिल धारणम्' वाली कहावत अक्षरशः चरितार्थ हो रही है। बहुतसे मनचले दर्शक अपनी पत्नियों और उपपत्नियोंको भी साथ लाये हैं। ऐसे अपूर्व्व अवसरसे भला स्त्रियाँ क्योंकर बञ्चित रखी जा सकती हैं?

ऐसे ही मनचले शौकीनोंमें हमारे मि० मनोहरदास भी हैं। अभी हालमें ही आपने, द्वितीयवार एक सुन्दरी किशोरीका पाणि-पीड़न किया है। उनकी नवोढ़ा वधू कृतिका लज्जाकी साक्षात् मूर्त्ति है। लज्जावती लताकी तरह सदैव संकुचित रहती है। दूसरोंसे तो क्या स्वयं मनोहर बाबूसे भी भरमुँह बोलनेमें उसे संकोच मालूम होता है। इधर मनोहर बाबू शहरके सुधरे हुए 'अपटूडेट' जेण्टिलमैन हैं। कृतिकाका संकोचभाव और दिनरात घूँघट काढ़े रहना उन्हें जरा भी अच्छा नहीं लगता।

तकियेकी तरह पत्नीका सिरसे पैरतक कपड़ोंसे आच्छादित रहना देखकर वे मन ही मन कुढ़कर रह जाते हैं। उसकी यह भद्दी आदत बदलनेका उन्होंने पूरा क़स्द कर लिया है और इसीलिये आज उसे 'प्रेतनी-पिशाच' दिखानेके लिये अपने साथ लाये हैं। उनकी दृढ़ धारणा है, कि इस तरह दस जगह आने जानेसे कृतिकाका 'कूपमण्डूकपन' धीरे धीरे छूट जायगा।

अभिनयका समय सन्निकट है। दर्शकोंके कर्ण-कोंच कोलाहलसे थियेटर-हाल थर्रा रहा है। मालूम होता है, लोगोंने सरपर आसमान उठा लिया है। दर्शकोंकी उत्सुकता बढ़ रही है। इतनेमें घण्टी बजी—पर्दा उठा। हजार हजार आँखें एक साथही रङ्गमञ्चकी ओर जा पड़ीं। गगनभेदी आनन्दध्वनि तथा तालियोंकी गड़गड़ाहटसे आकाश गूँज उठा! अभिनय आरम्भ हुआ। चारों ओर सन्नाटा छा गया। अभिनेतागण अपना विचित्र कौशल दिखाकर दर्शकोंके हृदयोंमें करुणा, भय, आतंक, आश्चर्य, विस्मय आदि विविध भावोंका संचार करने लगे। मनोहर बाबूकी नवोढ़ा बधू कृतिका आज अपने जीवनमें प्रथमवार नाटक देखने गई थी। नाटकका एक एक दृश्य, उसे विमुग्ध कर रहा था। वह चित्रवत् निश्चल भावसे बैठी हुई नाटक देखने लगी।

* * * *

रातके एक बज गये हैं। अभी अभी अभिनय समाप्त हुआ है। दर्शक अपने अपने घर जानेके लिये व्याकुल हो रहे हैं। एक

दूसरेको पीछे ढकेल कर आगे बढ़ जानेकी चेष्टामें लगे हैं। थियेटरवाले बत्ती बुझाने और पंखा बन्द करनेमें लगे हैं। इधर इन्द्रदेवने भी अपनी महती मेघवाहिनी लेकर नगर पर चढ़ाई कर दी है। मूसलधार वृष्टि हो रही है। मेघमण्डल भीषण गर्जन कर रहा है। हवाके तुन्द झोंके मानों विश्वको हिलानेकी चेष्टा कर रहे हैं। बीच बीचमें बिजली चमककर लोगोंकी आँखोंमें चकाचौंध पैदा कर रही हैं। थियेटर हालसे निकलकर गाड़ीतक जाते जाते शौकीन बाबुओं और बाबुनियोंकी दुर्गति हो जाती है। बहुत दिनोंके घाटेकी पूर्त्ति करनेकी इच्छासे गाड़ीवानोंने भी चौगुना पँचगुना भाड़ा कर दिया है।

ख़ैर, जिनके पास घरकी गाड़ियाँ थीं, उन्होंने किसी तरह घरका रास्ता लिया। पैदल चलनेवालोंने जूता उतारकर बगलमें दबाया और कुछ लोगोंने रिकशों पर बैठकर जीतेजी मनुष्यकी सवारीका मज़ा लूटा।

बहुत कुछ जहमत उठाकर हमारे मनोहर बाबूने भी एक मीलके लिये नकद साढ़े तीन रुपये पर एक थर्डक्लास गाड़ी किराये पर ली। गाड़ी आकर फाटक पर लगी, इधर थियेटरकी बुढ़िया परिचारिका एक अवगुंठनवती युवतीका हाथ थामे "मनोहरबाबू, मनोहरबाबू" कहकर चिल्ला रही थी। परिचारिकाको अपना नाम लेकर पुकारते सुनकर मनोहरबाबूने कहा—मैं यहाँ हूं—इधर—इस गाड़ीमें ले आओ।"

युवतीको गाड़ीमें बिठाकर तथा इनाम पाकर परिचारिका

चली गई ! गाड़ीवालोंने गाड़ी आगे बढ़ाई। विषम वृष्टि और हवाके झोंकोंसे युद्ध करते हुए, घोड़ोंने मनोहरबाबूके घरका रास्ता लिया।

गाड़ी चल पड़ी—मनोहरबाबूकी जानमें जान आई। वर्षासे उनके सब कपड़े भींग गये थे। ठण्ढकसे देह काँप रही थी। शरीरके अन्दर किञ्चित गर्मीका समावेश करनेके लिये उन्होंने सिगरेट पीनेका विचार किया और ज्योंही दियासलाई बालकर सिगरेट जलाने लगे, त्योंही उनके सामने सीट पर बैठी हुई युवती बेतहाशा चीख उठी। एकाएक स्त्रीका चिल्लाना सुनकर मनोहर-दास हक्के-बक्केसे हो गये। मुँहका सिगरेट नीचे गिर पड़ा। बड़ी मुशकिलसे अपनेको सँभालकर बोले—"क्यों चिल्लाती हो प्रिये ! तबीयत कैसी है ?"

यह सुनकर स्त्री और भी ज़ोर सोरसे चिल्लाने लगी और बार बार गाड़ीका दरवाजा खोलनेकी चेष्टा करने लगी मनोहरदासने समझा, शायद इसका दिमाग़ खराब हो गया है। वे उसे आश्वासन देनेकी चेष्टा करने लगे। इतनेमें गाड़ी एक चौराहे पर पहुंची। चिल्लाहट सुनकर, कौतूहलवश गाड़ीवानने गाड़ी खड़ी कर दी। उधर दो पुलिसमैनोंके साथ एक सारजन भी आ पहुंचा। बेचारे मनोहरदास अजीब 'गड़बड़ घोटाले' में पड़ गये। पुलिसको सामने देखकर उनके होश पैंतरा कर गये !

सारजनने आते ही बाबके मुँहपर दो वजनदार घुँसे जमाकर

कहा,—डेम ब्लाडी, टुम गुण्डा है! किसकी औरटको गारीमें ले आटा है?

मनो०—साहब मैं गुण्डा नहीं हूँ। यह मेरी—!

सार०—चुप, सूअर, टुम आलबट गुण्डा है। कान्सटेबिल ले जाओ इसको ठानेमें।

यह कहकर सारजनने कसकर दो तीन और घूँसे उनकी पीठपर रख दिये! बेचारे कोमलकाय मनोहर बाबुकी आँखोंके आगे अँधेरा छा गया। इसलिये इस उजड्ड सारजनसे अधिक बातचीत करना उन्होंने उचित नहीं समझा।

इसके बाद पुलिसमैनोंने मनोहरबाबूको मय गाड़ीके थानेमें पहुंचाया। बेचारे मनोहरके मुँहपर हवाइयाँ उड़ रही थीं। सारजनके घूसोंने पीठमें पीड़ा उत्पन्न कर दी थी। कृतिकाका स्मरणकर उनका चित्त व्याकुल हो रहा था। भगवन्! इस गड़बड़ घोटालेमें पड़कर बेचारीकी क्या दशा होती होगी। मालूम होता है थियेटरकी बदौलत स्त्रीसे भी हाथ धोना पड़ा! इस स्त्रीके तो भाग्य अच्छे हैं जो मेरे हाथ पड़ी। अब किसी न किसी तरह अपने घर पहुंच ही जायगी! परन्तु बेचारी कृतिका कहाँ होगी। कहीं ऐसा न हो, कि किसी बदमाशके हाथोंमें पड़ जाय। आजकल स्त्रियोंको फँसानेको कितने ही गुण्डे इधर-उधर फिरा करते हैं। यदि अभागिनी किसी बदमाशके पाले पड़ गई तो दीन-दुनिया दोनोंसे गई!

मुन्शीने केस लिखकर 'असामियोंको' थानेदार साहबके पास

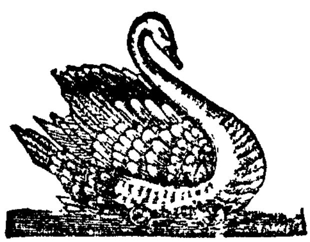
भेजा। थानेदारने मनोहरदासको सिरसे पैरतक देखकर पूछा—“कौन हो? इस स्त्रीको कहाँसे उड़ा लाये हो?”

मनोहरदासने आँखोंमें आँसू भरकर कहा—बाबू साहब, मैं बहूबाजारके रईस बाबू जवाहरलालका लड़का हूं। मेरा नाम मनोहरदास है।” इसके बाद उन्होंने अपनी बीती रामकहानी सुनाकर उस स्त्रीकी ओर इशारा करके कहा,—मालूम नहीं ये कौन हैं। मेरी स्त्रीके धोखेमें थियेटरकी दासी इन्हें मेरी गाड़ीमें बैठा गई। वर्षा, तूफान और अन्धकारके कारण मैंने कुछ ख़याल नहीं किया और गाड़ीका दरवाजा बन्द कर लिया गया। उस समय इन्होंने भी मुझे नहीं पहचाना। रास्तेमें, जब सिगरेट जलानेके लिये मैंने दियासलाई जलाई तो मुझे देखकर चिल्लाने लगीं। उस वक्त भी मैं नहीं समझ सका, कि मामला क्या है। बाबू साहब, आप एकबार थियेटरवालोंको टेलीफोन करके मेरी स्त्रीकी खबर लीजिये। मालूम नहीं इस गड़बड़ घोटालेमें पड़कर बेचारी पर क्या बीत रही है।

मनोहरदासकी मनोहारिणी बातें सुनकर थानेदार हँस पड़े। इसके बाद टेलीफोन द्वारा थियेटरवालोंसे पूछा गया तो मालूम हुआ कि श्यामबाजारके डाक्टर मनोहरलाल भार्गवकी स्त्री थियेटरसे लापता हो गई है, और उसके बदले एक दूसरी स्त्री यहाँ बैठी है। वह न तो कुछ बोलती है और न अपना परिचय देती है! मालूम नहीं किसकी स्त्री है।

“सूखत धान परा जनु पानी।” बेचारे मनोहरदासके निराश-

हृदयमें आशाका संचार हुआ। इसके बाद इन्सपेक्टर साहबके साथ सब लोग थियेटर पहुंचे। वहाँ बेचारे डाक्टर साहब स्त्री खोकर बैठे बैठे झँख रहे थे। थानेमें 'हुलिया' लिखानेकी तैयारी कर रहे थे। इतनेमें थानेदार साहब सदल-बल पहुंच गये। दोनों मनोहरोंको उनकी बिछुड़ी हुई बीवियाँ मिल गईं। 'गड़बड़-घोटाला' खतम हुआ!



कुढ़धू बारिस्टर !

रामाकान्त ज्योंही बम्बे-मेलके सेकण्ड क्लाससे मुगलसराय स्टेशनके प्लैटफार्मपर उतरा त्योंही उसके पिता, चाचा, भाई, सह-पाठी और मित्र, उसे गले लगानेके लिये, बड़ी ललकके साथ, आगे बढ़े। रामाकान्तने हैट उठाकर संकोचके साथ कुछ पीछे हटते हुए कहा—Shake hand, dear Papa how are you ?

सबके सब आवाक् हो रामाकान्तके मुंहकी ओर ताकते रहे। रामाकान्तने हँसते हुए कहा यह आजकलका फैशन है, हम (old) पुराने रिवाजोंको नहीं मानता। रामाकान्तके इस वाक्यसे उमाकान्तका हौसला पस्त पड़ गया।

वेटिङ्गरूममें आतेही रामाकान्त टेबुलपर हैट रखकर सामनेकी कुर्सीपर पैर फैलाकर लेट गया और चुरुट भकभकाते हुए बोला—Take the chair Dear Papa, मैं उमीद करता हूं कि इसके लिये मुझे माफ करेंगे, क्योंकि इस वक्त मैं बहुत थका हूं। कृपाकर हमारे वास्ते एक "कप" चायका प्रवन्ध कर दें। फौरन ही होटलसे बेराने चाय लाकर टेबिलपर रख दिया, चायका कप उठाते ही रामाकान्तने फिर वही बेसुरी छेड़ी। My dear

Papa and all friends, जबकि मैं हिन्दुस्तानके लिये जहाज पर रवाना हुआ था तो मैंने ख्याल किया था कि आपलोग बम्बे-पोर्टमें आकर मुझसे मिलेंगे। खैर, आपलोगोंने बनारससे मोगलसराय तक आकर मेरा स्वागत किया, इसके लिये मैं आपलोगोंको many many Thanks देता हूं। रामाकान्तने अँग्रेजीकी झड़ बाँध दी, Thanks के थैलीकी पेंदी काट दी, Shake-hand की सैकड़ों आवृत्तियाँ कर डालीं। उमाकान्तकी रही सही आशा भी काफूर हो गई!

उमाकान्तकी छाती, आज घरसे निकलते समय फूले न समाती थी कि आज मेरा रामू बैरिस्टरी पास करके आता है, बहुत दिनोंके बाद बिछुड़े हुए पुत्रको गले लगाऊँगा। लेकिन रामाकान्त के असभ्य व्यवहारने सारी आशापर पानी फेर दिया! मिला क्या दो-चार अँग्रेजीके "टुटपुटे" शब्द। गजरा पहनाया Thanks पाया! चायका प्याला पिलाया Thanks पाया! बात बातमें Thanks, बात बातमें Please बात बातमें excuse, बात बातमें Soory, उमाकान्त दंग हो गये। क्रोधके मारे छाती जल उठी! किन्तु सबके सामने कुछ बोल न सके।

इधर रामाकान्तने फिर वही लेकचर शुरू किया। अपने मित्रों और सहपाठियोंकी ओर मुखातिब होकर बोला—My dear friends and collegues; मैं आपलोगोंको Thanks देता हूं, कि अबतक आपलोग हमें भूले नहीं, और यहाँतक कष्ट उठाकर हमारे reception को आये।

जो रामाकान्त इतना बोदा था, उसे इतना चुस्त-चालाक देख उसके दोस्त चकित हो गये। लल्लूने कहा—यार रामू, तुमतो इतने थोड़े अरसेमें ही क्या से क्या हो गये? इतने चलतापुर्जा तो तुम कभी न थे?

रामाकान्त अकबकाकर लल्लूकी ओर देखते हुए कहा—what do you mean by चलतापुर्जा? क्या मैं घड़ी हूं, तुमने जरूर हमारे नेचरको समझनेमें भूल की है, लेकिन हाँ मैं अब वह रामू नहीं हूं, अब मेरे लिये मिस्टर R. K. Sinha ही मौजू है?

सबलोगोंने उपेक्षाकी हँसी हँसकर रामाकान्तकी बात ही उड़ा दी। किन्तु उसे इसकी कुछ परवा न थी। वह तो घर पहुंचने पर अपनी माताके सामने भी हैट उठाने और 'शेकहैंड' कहने से बाज़ न आया। भोलीभाली माता उसका मुंह ताकने लगी। भाभी बेचारी तो Shake-hand सुनकर वैसे ही भड़क गई जैसे छाता देखकर भैंस।

वह छनककर रामाकान्तकी बीबीके घरमें चली गई और बोली—'अरे किस लिये यह सब सिंगार-पटार कर रही हो? मेम बननेकी तैयारी करो, गौन और बूट पहनो, साहब आ रहे हैं, साहब। सुना बीबी।

लीला उमङ्गकी तरङ्गमें बह चली। उसके हृदयमें उत्कण्ठाकी ज्वार आ गई। इतनेमें रामाकान्तने पुकारा—My darling lady, तुम कहाँ हो! Come along. Let me have a warm embrace and a soft kiss. लीला सहम गई।

वह शरमाती और मुस्कराती हुई रामाकान्तके पास गई। उसके ताम्बूल-रञ्जित अधरों और कज्जल-रञ्जित नेत्रोंको देखते ही उसकी आलिङ्गनाभिलाषिणी बाहुवल्लरीको झटकेके साथ अपने कन्धेसे अलग हटाते हुए रामाकान्तने तिरस्कार पूर्वक कहा—ओह, "डरटी" (dirty) लेडी ! हट जाओ मेरे सामनेसे। अगर तुम हमसे प्रेम करना चाहती हो तो अपनी होठों और आँखोंसे गंदगी बिलायती साबुनसे धोकर सेनटेड पाउडर लगाओ, पम्पोजा लोसन और लभेण्डार लगाकर आओ।

लीलाकी सारी आशाएँ बैठ गईं। पाँच बर्षों तक उसने जिस अरमानको अपने दिलमें बड़े लाड़-प्यारसे पाला था, रामाकान्तने उसका गला घोंट दिया। प्रभञ्जन-प्रकम्पित सुकुमार लतिकाकी तरह लीला थरथरा उठी। मालूम हुआ कि उसकी संज्ञाशून्य देह निर्वात मन्दिरकी दीपशिखाकी तरह शय्याके पास आकर खड़ी है। उसके कमनीय कुसुमित देह-द्रुमपर भूषण-बिहंग मौन बैठे हैं।

रामाकान्तने अपने पितासे जाकर कहा—Dear Papa मैं ऐसी गन्दी औरतसे प्रेम करना नहीं चाहता, और न ऐसे गन्दे घरमें रहना चाहता हूँ, हमें एक European lady चाहिये और हमारे रहनेके लिये गार्ड बंगलो (Banglow) बनवाइये।

रामाकान्तकी बात सुनकर उमाकान्तके क्रोधकी सीमा न रही। वे लाल-लाल आँखोंसे रामाकान्तको सिरसे पैरतक निहारने लगे।

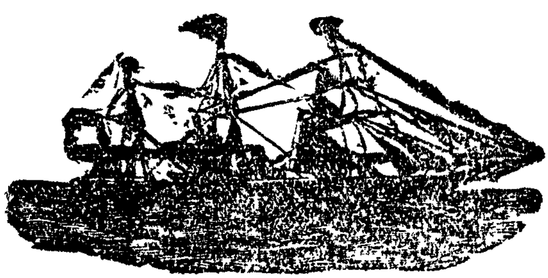
किवाड़की ओटसे रामाकान्तकी माताने अपने पतिदेवको इशारेसे मना किया। उन्होंने अपना क्रोध सँभाल लिया। किन्तु रामाकान्त पिताका रुख देख पतलूनसे बाहर हो गया। O God एक जेण्टिलमैन बैरिस्टरका इतना (Insult) अपमान! ओह अब मैं एक मिनिट भी इस गन्दे मकानमें नहीं ठहर सकता, इसी तरह बड़बड़ाते हुए रामाकान्त बरामदेमें निकल आया और अपने खानसामेसे बोला—ओ बेयरा, बैग, बेडिङ्ग और बौक्स अबी फौरन स्टेशन ले चलो।

माता-पिताने बहुत समझाया, पर रामाकान्तके मनमें एक न आया। माताने कहा—'तुम बगीचेके बंगलेमें ही जाकर रहो, पर लीलाको अपने साथ लेते जाओ, उसे क्यों छोड़ते हो?

रामाकान्तने दाँत पीसते हुए ज़ोरसे बूट पटककर कहा—Foh I shall Shoot Leela अगर वह मेरे सामने आई तो बूटकी ठोकरोंसे मार डालूंगा। हम ऐसी बेवकूफ गन्दी औरतको देखना नहीं चाहता। सबलोग अवाक् हो गये। बेहरा गाड़ी लाया, असबाब रख गये, रामाकान्त सवार हुआ, गाड़ी स्टेशनकी ओर चल पड़ी। उमाकान्त पीछे पीछे स्टेशन तक गये। रामाकान्तने उनसे बात तक न की। बेचारे बूढ़े बाप हताश होकर घर लौट आये।

रामाकान्त दूसरे ही दिन बम्बे मेलसे बम्बे चला गया। वहां ताजमहल होटलमें उसकी प्यारी मेम ठहरी हुई थी! उससे मिलकर रामाकान्त शान्त हुआ। मेम साहबने एक अँग्रेज बैरिस्टरको

पटा रखा था। उसने रामाकान्तको दीवानी मामला दायर करनेकी राय दी। बस फिर क्या था, रामाकान्तने बिना सोचे विचारे पचास हजारका दावा पिताके विरुद्ध बनारस आकर दीवानी अदालतमें दायर कर दिया। यह दावा बनारसकी दीवानी अदालतमें वर्षों चलता रहा। मेम साहबका मल्लूसा मुखड़ा देखकर दो-दो उल्लू फँसे हुए थे—एक तो मुफ़्त ही खटनेवाला अँग्रेज बैरिस्टर और दूसरा अपने बापके विरुद्ध अदालत करनेवाला बुद्धू बैरिस्टर !



ऐसकी ठेस !

आज दिसम्बरकी २५ तारीख "क्रिसमस डे" ईसाइयोंका सबसे बड़ा धार्मिक त्यवहार है। पूसका महीना, खासी सर्दी पड़ रही है। सन्ध्या होनेमें बहुत विलम्ब नहीं है। कलकत्तेके अंग्रेजी महल्लों और होटलोंमें खासी चहल-पहल मची है। कहीं बेंड बज रहे हैं, कहीं बाल डान्स हो रहा है और कहीं दूसरे तरहके आमोद्-प्रमोद् हो रहे हैं। निउमार्केटकी रौनकका तो पूछना ही क्या है। झुण्डकी झुण्ड फैशनेबिल लेडियाँ रंग-बिरंगी कीमती पोशाक पहने अपने अपने प्रेमीके हाथमें हाथ मिलाये मस्तानी चालसे इधर-उधर टहल रही हैं। अँग्रेजोंकी तरह कुछ फैशनेबुल देशी बाबू भी निउमार्केटकी सैरको आये हैं। इसमें अधिकांश अस्त्रीक और कुछ सस्त्रीक यानी अपनी उपपत्नियोंके साथ हैं।

रातके आठ बज गये हैं, बिजलीकी रोशनीसे निउमार्केट जगमगा रहा है। वास्तवमें आज उसकी शोभा इन्द्रपुरीको भी मात कर रही है। अन्यान्य बहुतसे काले और गोरे-गोरियोंके साथ, इस शहरके रईस श्रीललितचन्द्र भी निउमार्केटकी सैरको आये हैं और पृथ्वीपर स्वर्गकी शोभा देख रहे हैं। कुछ देरतक

इधर-उधर टहलते रहनेके बाद ललितबाबूकी नज़र एक सुन्दरी पर पड़ो। दोनोंकी आँखें मिलते ही सुन्दरीने ललितचन्द्रकी ओर इशारा करके कहा, यहाँ बहुत भीड़ होती जा रही है, मुझे गर्मी मालूम होती है। आइये, जरा इडनगार्डनकी ओर चलें। बाहर सुन्दरीकी शानदार मोटर खड़ी थी, दोनोंके बैठते ही मोटर "भोंभों" करती हुई तेजीके साथ इडनगार्डनकी ओर जाने लगी और कुछ ही क्षण बाद गार्डनके दरवाजे पर जा लगी। मोटरसे उतर युवती ललितबाबूके हाथमें हाथ मिला गार्डनकी सैर करती हुई इधर-उधर टहलने लगी। इसके बाद लताकुञ्जके भीतर दोनों एक बेंचपर बैठ गये। बैठते ही जरा भौंहे चढ़ाकर ललित बाबूसे सुन्दरीने कहा,—क्यों बाबू! आजकल तो आपका दर्शन होना ही दुशवार है। क्या प्रेम इसीको कहते हैं? अगर आज मैं मार्केट न आती तो शायद आपसे मुलाकात भी होना मुश्किल थी। ललितने लज्जित होकर कहा—नहीं सुन्दरी मैंने कईबार कोशिश की कि तुमसे मिलूं, लेकिन इधर कुछ ऐसे झंझटोंमें था कि मिल न सका। सुन्दरी—खैर, अब तो कोई झंझट नहीं है। ललित—हाँ हाँ, अब जरूर आऊँगा। इसके बाद घण्टोंतक दोनों प्रेमी आपसमें घुल घुलकर बातें करते रहे। अचानक गिर्जाघरके घण्टेने बातका सिलसिला तोड़ दिया। ललित चौंक पड़ा और बोला, रात तो बहुत ज्यादा बीत गई १० बज चुके, अब घर चलना चाहिये। इसके बाद दोनों जल्दी जल्दी दरवाजेकी ओर बढ़े। एक टैक्सी खड़ी देख ललित उसपर जा बैठा। इधर

सुन्दरीने अपनी मोटर पर बैठते हुए मुस्कराकर तिरछी चितवनसे देखते हुए ललितसे कहा, कल जरूर आइयेगा। बातें याद रहेंगी न ? ललित—तुम सब ठीक रखना, मैं जरूर समयसे पहले ही पहुंच जाऊँगा। इतना कह ललितने अपनी मोटरको बहूबाजार की ओर जानेका इशारा किया। इधर सुन्दरीकी मोटर भी उसे लेकर हवा हो गई।

रातके दस बजे होंगे, अबतक ललितचन्द्र घर वापस नहीं आये। इसी घोर चिन्तामें मालती दरवाजेकी ओर टकटकी लगाये देख रही है। करीब ११ बजेके ललित घर पहुंचा। कपड़े उतार भोजन आदिसे छुट्टी पा पलँगपर जा लेटा, मगर चैन कहाँ, फिर वही घुड़दौड़की चिन्ता सवार हो गई, सोनेकी बहुत कोशिश की मगर निद्रा कहाँ। जेबसे रेस गाईड निकाल बड़े गौरसे घोड़ोंके नाम और नम्बर देखकर सारी रात आँखें फोड़ता रहा। मालतीने कईबार कहा, सो रहिये ज्यादा रात बीत गई है। आपको कष्ट होता होगा। लाख समझाया लेकिन उस बिचारी को सुनता कौन है ? वहाँ तो सिरपर 'रेस' का भूत चढ़ा था। उलटे मालतीको ऐसी फटकार मिली कि बेचारी सिटपिटाकर रह गई और लाचार हो वहीं ज़मीनपर सो रही। मगर ललितने उसकी ओर ज़राभी ध्यान नहीं दिया और सारीरात बस वही औरेंज विलि-यम और गौरीशङ्कर नामकी माला जपता रहा। प्रातःकाल होतेही मालती नित्यक्रियासे छुट्टी पा भोजन बनाने चली गई। इधर ललित भी स्नान आदिसे छुट्टी पा नौ बजते ही कपड़े पहन

मालतीके पास पहुंचा और बोला,—मालती क्या कर रही हो ?

मालती—भोजन बनाती हूं, कहिये क्या आज्ञा है ?

ललित—मालती आज अन्तिमबार अपने भाग्यकी परीक्षा करूँगा। अगर "वायेसरा कप" में जीत गया तो तुम्हारे सब गहने छुड़ा लाऊँगा। आजही पौवारहका दिन है।

प्यारे ! मैं प्राण भी देनेको तैयार हूं, गहनेकी तो कोई बातही नहीं। गहनोंकी शोभा तो आपहीसे है। आपही मेरे सौभाग्य और अलङ्कार हैं। पर अब घुड़दौड़में—"

बस चुप रह ज़बान खींच लूंगा। मैं गहने लेने आया हूं, उपदेश नहीं। तेरे बापके गहने हैं ? तेरी कमाईके उनमें कितने पैसे लगे हैं ?

"मेरी कमाई ? हे भगवन् आज मैं अपने पतिदेवके मुंह क्या सुन रही हूं, नाथ मेरी कमाई कैसी ? मेरी जन्मजन्मान्तरकी कमाई के फल तो आपही हैं। भगवान् न करें मैं अपनी कमाईके गहने पहनूं। गहने मेरे बापके भी नहीं हैं। उन्होंने तो सिर्फ इस दासीको ही आपके चरणोंमें सौंपा था। प्रभु मैं तो सेवा करने-वाली आपकी दासी हूं, उपदेश कैसे दे सकती हूँ ?

बस बस, त्रियाचरित्र रहने दे। यह पाखण्ड किसी औरको दिखाना, मुझपर तुम्हारा चोंचला नहीं चल सकता।"

आप जो कुछ कहिये, सब सही है। जो गहने बच गये हैं, उन्हें मैंने आपहीके लिये रख छोड़ा है। मकान बिकही गया, जमींदारी बरबाद ही हो गई, जमा जो था खर्चही हो गया, घरके

साजो सामान रहे ही नहीं, मौके बेमौके काम देनेके लिये अब इन गहनोंके सिवा और क्या बचा है ? इन्हें तो रहने दीजिये, बल्कि मुझपर विश्वास न हो तो आपही अपने पास रखिये, मगर हाथ जोड़ती हूं, घुड़दौड़में आज—"

फिर वही बेतुकी राग अलापने लगी ? क्या मैं तुझसे सलाह पूछने आया हूँ ? यह घर कोई कालेज नहीं है जो तू प्रोफेसरकी तरह लेकचर झाड़ती चली जाती है ? भूत झाड़ दूँगा याद रहे। उस दिनके डण्डे याद हैं कि नहीं ?

मारडालिये ! गहने भी ले लीजिये मैं सब सह सकती हूं पर अब इन आँखोंसे आपको घुड़दौड़ में जाते—"

"चुप हरामजादी" इतना कह ललितचन्द्रने मालतीको बड़े जोरसे ढकेल दिया। वह धड़ामसे ज़मीनपर गिर पड़ी, सोनेके कंगन, हीरेकी अँगुठियाँ और गिन्नीका एक दर्जन बटन लेकर ललितचन्द्र चम्पत हुआ। सड़कपर आते ही उसे मोटर मिल गई, टैक्सी उसे लेकर हवा हो गई।

गोल्डन स्ट्रीटके १६ नम्बरके मकानके सामने टैक्सी खड़ी हो गई। तीसरे मञ्जिलसे एक नरम कलाईने, चिकके अन्दरसे थोड़ा बाहर निकालकर हरे रंगके रूमालकी झण्डो फहरा दी। ललितचन्द्रने लाईन क्लियर देखकर ताबड़तोड़ टैक्सीसे उतरा और सीढ़ियों पर चढ़ गया। ललित एक मञ्जिल ऊपर चढ़ा और प्रफुल्ल एक मञ्जिल नीचे उतरी।

प्रफुल्लने मुस्कराकर कहा—चीजें लाये हो ?

ललितने प्रफुल्लको गले लगाते हुए कहा—यह देखो मैंने तो अपना कौल पूरा किया, अब तुम भी करार पूरा करो।

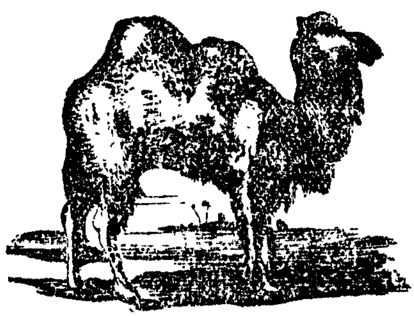
प्रफुल्ल—अच्छा इधर दो, पहले पेटीमें रख आऊँ।

ललित—हाँ हाँ लो इसे रखकर वह नोटका बण्डल—।

प्रफुल्ल—अब वह नोटका बण्डल कैसा? यह कहती हुई चञ्चल चरणोंसे प्रफुल्ल ऊपर चली गई। ललितने पीछा करना चाहा, तबतक बग़लसे एक आदमीने हाथ पकड़कर तमञ्चा दिखा दिया। होश ग़ायब हो गया। चुपचाप अपनासा मुँह लेकर नीचे उतर आये। टैक्सी नीचे खड़ी थी उसपर सवारी होते ही उसने देखा कि कलाईकी सुनहली घड़ी भी हांथ पकड़नेवालेने टीप ली है। चकित नेत्रोंसे उसने ऊपरकी ओर देखा, तो तमञ्चावाले हाथके सिवा और कुछ नज़र न आया।

आज ११ बजेसे ही सारे शहरमें घुड़दौड़की धूम मची है, आज "वैसराकप" है, जिस रास्तेमें देखो मोटर ट्रामकार घोड़ा-गाड़ीकी चहल-पहल है। घुड़दौड़का मैदान मनुष्योंसे भरा है, उसके चारो तरफ घोड़ेगाड़ियोंकी कतारें लगी हैं, घड़ीमें अब दो बजना ही चाहता है, इतनेमें ललितचन्द्रकी मोटर घुड़दौड़के दरवाजे पर आ लगी, ललितने देखा रेस शुरू होनेमें सिर्फ पन्द्रह मिन्टकी देर है। वह अधीर हो गया। उसने टिकेट घरके पास पहुंचकर एक सेठके जेबसे सौ-सौ रुपयेके पाँच नोट झटक लिया। संयोगकी बात, पुलिस सरजेंटने देख लिया। उसने ललितका गट्टा पकड़ लिया। अब तो ललित अपनेको फँसा देख

इधर-उधर ताकने लगा, इतनेहीमें सारजेंटने कसकर एक थप्पड़ ज़मा पाँचों नोट छीनकर सेठके हवाले किया और ललितको धक्के दे घुड़दौड़के मैदानसे बाहर किया। लोग आश्चर्य्य और घृणाके साथ कहने लगे—यह ठाट बाट, यह शान-शौकत, यह लिफाफा और यह करतूत! आये थे बच्चू 'रेस' खेलने, मगर ऐसी ठेस लगी कि सारी जेंटिलमैनी घुस गयी, लेते जाओ मामू तोड़ा बीबी बाट जोहती होंगी।



भविष्य गणना ।

(एक अँग्रेजी कहानीके आधारपर)

(१)

उन दिनों काशीमें ज्योतिषाचार्य्य पण्डित दक्षिणानन्दजीका बड़ा नाम था। लोगोंका कहना था, कि गणनामें ऐसे निपुण पण्डित बहुत कम देखनेमें आते हैं। भूत, भविष्य और वर्त्तमान सभी दक्षिणानन्दजीके लिये हस्तामलकसे थे। 'मूक' प्रश्नोंका सटीक उत्तर देनेमें तो मानो उन्हें कमाल हासिल था। यही कारण था, कि सुबहसे दोपहर तक पण्डितजीके बैठकखानेमें मेलासा लगा रहता था। दक्षिणा भी यथेष्ट मिल जाया करती थी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह था, कि पण्डिताइनजीकी छोटी-सी सींककी 'पिटारी' रुपयोंसे भर गई थी। थोड़े ही दिनोंमें उसमें 'पाँच बीस' साढ़े सात रुपये एकत्र हो गये थे। इसलिये वह शीघ्र ही एक लकड़ीकी बड़ीसी सन्दूक खरीदनेवाली थीं।

सवेरेका समय था। लम्बी चोटीवाले मुण्डित मस्तकपर पूरे आठ गज कपड़ेका बृहदाकार 'पग्गड़' बाँधे, पेशानीपर चन्दन छोपे पण्डित दक्षिणानन्दजी महाराज अपने बैठकखानेमें विराजमान थे। भाग्य-परीक्षार्थियोंकी भीड़ लगी थी। पण्डितजी कभी

आँख बन्द करके, कभी 'मेष' 'वृष' 'कर्कट' 'सिंह,' आदि जन्तुओं-के नामोंकी आवृत्ति करके, कभी अङ्गुलियोंके पोरोंपर बार-बार वृद्धाङ्गुल स्थापित करके लोगोंका भविष्य बता रहे थे। किसे कब नौकरी मिलेगी, किसके रोजगारमें कब मुनाफा होगा, अमुक कन्याके साथ अमुक वरकी ग्रहमैत्री कैसी बनती है। वर राक्षस गण और कन्या ब्राह्मण गण हो, तो विवाहका परिणाम क्या होगा। पण्डित दक्षिणानन्दजी इण्टेलिजेण्ट बायकी तरह 'जोहैसो' कर करकों, आदि, महागूढ़ वाक्योंके साथ इन जटिल प्रश्नोंका धड़ाधड़ उत्तर दे रहे थे और श्रोतामण्डली मन्त्रमुग्धकी भाँति ज्योतिष विद्याका अद्भुत करश्मा देख रही थी।

इतनेमें एक मोटर गाड़ी हूल-स्थूल मचाती हुई पण्डितजीके बैठकखानेके सामने आ लगी और उसमेंसे एक सुश्री नवयुवकने उतरकर पुकारते हुए कहा—"पण्डितजी, प्रणाम।"

पण्डितजी—"आयुष्मान आयुष्मान" जोहैसो आइये श्याम-सुन्दर बाबू, आप किधरसे रास्ता भूल गये?

श्याम—"आपके दर्शनोंके लिये ही चला आया—"

पण्डितजी—"कहिये, क्या आज्ञा है?"

श्याम—"जी हाँ, निवेदन करता हूं। आप तबतक अपना काम कीजिये।"

श्यामसुन्दर बाबूकी अनुमति पाकर पण्डितजी पूर्ववत् 'मेष, "वृष, कर्क' करते हुए अपना काम करने लगे।

श्यामसुन्दर काशीके एक रईसका लड़का था। इसी साल

हिन्दू विश्वविद्यालयसे एम० ए०की डिग्री प्राप्त की थी। और अगले साल वकालतकी परीक्षामें सम्मिलित होनेकी तैयारी कर रहा था। सम्प्रति एक धनवानकी रूपवती अथच विदुषी कन्यासे उसके विवाहकी बातचीत भी पक्की हो चुकी थी। एक साथ ही कामिनी-काञ्चन-लाभका स्वर्ण सुयोग उपस्थित था। क्योंकि उसके भावी ससुर महाशयकी अतुल सम्पत्तिकी एकमात्र उत्तराधिकारिणी उसकी भावी पत्नी ही थी। श्यामसुन्दरने स्वयं कन्याको पसन्द किया था और बड़ी उत्सुकतासे मधुर प्रणयके शुभ दिनका इन्तजार कर रहा था। इस असीम उत्सुकतानेही उसे भावी दाम्पत्य-जीवनके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करनेके लिये विवश किया था।

धीरे धीरे भाग्य परीक्षार्थियोंकी भीड़ कम हुई। यद्यपि अभी भी बहुतसे आदमी मौजूद थे, परन्तु विज्ञ दक्षिणानन्दजी श्यामसुन्दर बाबू जैसे "जेण्टिलमैन" के समयका मूल्य समझते थे। उन्होंने कहा,—श्यामसुन्दर बाबू, यह भीड़ बारह बजेतक कम नहीं होगी। आप कबतक अपना अमूल्य समय नष्ट करेंगे। आपको यदि कोई प्रश्न आदि करना हो तो कीजिये।

अधिक इन्तजारी श्यामसुन्दरके लिये भी असह्य हो रही थी, इसलिये उसने अत्यन्त संकुचित भावसे मुसकराते हुए अपना दाहिना हाथ पण्डितजीके सामने पसार दिया।

एकबार श्यामसुन्दरके मुँहकी ओर देखकर मुस्कराते हुए पण्डितजी उसके हाथकी रेखायें निरीक्षण करने लगे। परन्तु

पण्डितजीके होठोंकी मुस्कराहट चिरस्थायिनी न हुई। थोड़ी देर तक मनोनिवेशपूर्व्वक देखनेके बादही उनके चेहरे पर आशंकाकी एक क्षीण छाया पड़ गई! उन्होंने एकाएक उसका हाथ छोड़ दिया। परन्तु वास्तवमें दक्षिणानन्दजी व्यवहार-चतुर मनुष्य थे। अपने मनोभावको इस तरह प्रकट होने देना उन्होंने उचित नहीं समझा। इसलिये फौरन उसका बाँया हाथ लेकर गौरसे देखने लगे। इसके उपरान्त साधारण भावसे उन्होंने फलाफल कहना आरम्भ कर दिया—"श्यामसुन्दर बाबू, ईश्वरकी दयासे आप बड़े भाग्यशाली हैं। आप दीर्घजीवी होंगे। लक्ष्मी तथा सरस्वतीकी कृपा आप पर सदैव बनी रहेगी। भार्य्या गुणवती मिलेगी और आपका जीवन सुख-पूर्व्वक व्यतीत होगा।"

यह कहकर पण्डितजी चुप हो गये। कुछ सोचकर श्यामसुन्दरने भी विदा ली। परन्तु उसके मनका कौतूहल दूर न हुआ। उसे मालूम हुआ कि पण्डितजीने कोई बात छिपा रखी है। इसलिये घण्टे डेढ़ घण्टेके बाद वह फिर पण्डितजीके पास लौट आया। इस समय भीड़ कम हो गई थी। पण्डितजी उठनाही चाहते थे। परन्तु श्यामसुन्दरको फिर आया देखकर ठहर गये। इस समय फिर पण्डितजीके चेहरेका भाव कुछ बदल गया। परन्तु शीघ्रही सँभल कर बोले—'आइये श्यामसुन्दर बाबू!'

श्यामसुन्दरने बिना किसी भूमिकाके कहा,—'पण्डितजी, संभवतः उस समय आपने कोई बात छिपा रखी थी। कृपाकर साफ़ साफ़ बता दीजिये।"

पण्डितजीने कोई उत्तर नहीं दिया। श्यामसुन्दरने एक सौ रुपयेका एक नोट पण्डितजीके सामने रखकर कहा, "यह लीजिये अपनी दक्षिणा और जो बात आपने उस समय छिपा रखी थी, उसे कह डालिये।"

बेचारे दक्षिणानन्दजी बड़े पशोपेशमें पड़े। एक मुश्त सौ रुपयेकी दक्षिणा उन्हें आजतक कभी नहीं मिली थी। नोट पाकेटमें रखकर कहने लगे,—आपकी हस्तरेखा देखनेसे प्रतीत होता है, कि आपके द्वारा किसीकी प्राणहानि होगी। किन्तु मनुष्यसे भूलभ्रान्ति भी हो जाती है। संभव है, मुझसे भूल हो रही हो। इसलिये आप इसके लिये दुश्चिन्ता करके अपने मनको खराब न कीजियेगा। मनुष्य किसीको मारने या जिलानेवाला नहीं होता। ईश्वर ही सब करता है,—"त्वया हृषीकेश हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि!"

पण्डितजीका कथन सुनकर श्यामसुन्दरका मुँह उदास हो गया। उसने प्रणाम कर चट अपने घरका रास्ता लिया।

(२)

ज्योतिषी दक्षिणानन्दकी जबानी उक्त बात सुनकर श्यामसुन्दर विशेष चिन्तित हुआ। खाना पीना, पढ़ना लिखना और घूमना फिरना छोड़कर दिनरात उसी चिन्तामें रहने लगा। विवाहकी बातचीत पक्की हो चुकी थी। वह काल्पनिक सुखसागरमें गोते लगा रहा था, परन्तु पण्डितजीकी भविष्य-वाणीने सारा मजा

किरकिरा कर दिया। वह सोचने लगा, यदि विवाहके बादही खूनके इलज़ाममें फँसा तो सारी जिन्दगी बरबाद हो जायगी। यदि पकड़ा गया तो फाँसीकी सज़ा मिलेगी। उस समय क्या होगा ? प्रियतमाको विषम वैधव्यके दिन काटने पड़ेंगे। उसका जीवन नष्ट हो जायगा। तो क्या विवाह न करूँ ? यह कैसे हो सकता है ? ऐसी रूपवती रमणीका प्रलोभन कैसे छोड़ा जा सकता है ? सब बातचीत पक्की हो चुकी है। हठात् इन्कार कर देनेसे लोग क्या समझेंगे। तो फिर क्या किया जाये ; इस विपत्तिसे बचनेका उपाय क्या है ?

सोचते सोचते कई दिन बीत गये। हठात् एक दिन श्यामसुन्दरको एक तदबीर सूझ पड़ी। आनन्दसे उसका चेहरा खिल उठा। काशीमें उसके दादाकी एक बूढ़ी साली रहती थी। वह अतुल सम्पत्तिकी अधिकारिणी थी, पर उसका कोई उत्तराधिकारी न था। उमर भी लगभग सौ वर्षतक पहुंच चुकी थी। शरीर जर्ज्जर हो चुका था। इसके सिवा उसके पेटमें शूल भी उठा करता था। बेचारी प्रत्यह मृत्युकामना किया करती थी। परन्तु कहावत है, कि 'मांगनेसे मौत नहीं मिलती।' अन्तमें कैलाश-प्राप्तिकी इच्छासे उसने काशीवास आरम्भ किया था। परन्तु, शायद यमराजको उसकी याद भूल गई थी। इसीसे बार बार प्रार्थना करने पर उसकी मृत्यु नहीं होती थी। वास्तवमें वृद्धाका जीना वृथा था। क्योंकि उसे इस जीवनमें कष्टके सिवा सुख नहीं प्राप्त होता था। इसलिये बहुत तर्क-

वितर्कके बाद श्यामसुन्दरने उसे भवबन्धनसे विमुक्त कर देना उचित समझा। उसने सोचा, बूढ़ीकी मृत्युसे किसीकी कोई हानि न होगी और उसकी भवयन्त्रणा भी दूर हो जायगी। इसके सिवा शास्त्रानुसार काशीमें अपमृत्यु भी हो जाय तो सुगति प्राप्ति-में कोइ बाधा नहीं पड़ती। ऐसी दशामें उसे किसी तरह मारकर अपने भविष्य-सुखका मार्ग निष्कण्टक कर लेनेमें क्या हानि है? ईश्वरकी दयासे उसे अकसर शूलकी बीमारी हुआ करती है। बस, दवाके बहाने कोई जहर खिला देनेसे ही बखेड़ा पार हो जायगा। किसीको खबर तक भी न होगी। ऐसा आसान तरीका रहते हुए भी मैं अबतक चिन्ताकुल था।

अगत्या एक दिन कहींसे 'भवबन्धन-विमुक्त-कारिणी बूटी' संग्रह कर श्यामसुन्दर बृद्धाके पास पहुंचा।

अबकी श्यामसुन्दर बहुत दिनोंके बाद उसके पास गया था। इसलिये उसे देखते ही बृद्धाने उपालंभके तौरपर कहा,—"बेटा, इसी शहरमें रहते हो और कभी आकर मेरी खबर भी नहीं लेते। तुम्हारे सिवा इस संसारमें मेरा कौन है?"

वास्तवमें बृद्धा श्यामसुन्दरको बहुत मानती थी, उसे ही वह अपना उत्तराधिकारी समझती थी। बृद्धाका उपालम्भ सुनकर श्यामसुन्दर लज्जित हुआ। उसने संकुचित भावसे कहा, "दादी, आजकल फ़ुरसत बहुत कम रहती है, इसीसे नहीं आ सका। ख़ैर, अब ऐसी गलती कभी न करूँगा।"

बृद्धाने कहा,—"हाँ बेटा, आया करना। इस जराजीर्ण

शरीरका अब क्या ठिकाना है? पका फल कब चू पड़ेगा, यह कौन जानता है?"

श्यामसुन्दर,—"अच्छा दादी, अब मैं प्रति दिन आया करूँगा। हाँ तुम्हारे लिये एक दवा लाया हूँ। इसके सेवनसे तुम्हारा शूल सदैवके लिये अच्छा हो जायगा।"

यह कहकर श्यामसुन्दरने जेबसे एक सुन्दर डिबिया निकाल कर बृद्धाको देते हुए कहा,—'जब शूल उठे तब इसे खा लेना।'

"अच्छा बचा!" कहकर दादीने डिबिया रख ली।

श्यामसुन्दरका कलेजा एकबार काँप गया। उसने कहा,—"दादी, अब मैं जाता हूँ फिर, आऊँगा। प्रणाम।"

"जीते रहो बच्चा, भगवान् तुम्हारा मङ्गल करें।"

दादीसे बिदा लेकर श्यामसुन्दरने उसी दिन काशी छोड़ देनेका इरादा किया। कहीं ऐसा न हो, कि किसी तरह बात खुल जाये। यह सोचकर वह उसी दिन दिल्ली चला गया।

ठीक पन्द्रह दिनके बाद दिल्लीसे वापस आने पर श्यामसुन्दरने सुना कि उसकी बृद्धा दादीका देहान्त हो गया, बेचारी मृत्युके समय उसे बहुत याद करती थी।

बृद्धाकी मृत्युका संवाद सुनकर श्यामसुन्दर बहुत प्रसन्न हुआ। ईश्वरकी दयासे उसकी मनोकामना पूरी हो गई। अब वह प्रसन्नतापूर्व्वक विवाह करके निष्कण्टक संसार-सुखका उपभोग कर सकेगा।

परन्तु कई दिनोंके बाद बृद्धाके घरमें उसकी दी हुई डिबिया

देखकर श्यामसुन्दरका हृदय कांप गया। उसने धीरेसे डिबिया खोलकर देखा तो उसकी दी हुई 'विषवटी' ज्योंकी त्यों रखी थी। वृद्धाने उसे छुआ तक न था। तब क्या उसकी मृत्यु योंही हो गई। मेरे प्रयत्नका कुछ भी नतीजा नहीं निकला? हा अदृष्ट!

(३)

विफल मनोरथ होनेपर भी श्यामसुन्दर हताश नहीं हुआ। वह दूसरा शिकार ढूंढ़ने लगा। उसके पड़ोसी और सजातीय लाला निहालचन्द प्रायः पैंसठ वर्षके बूढ़े थे। उन्हें घड़ियोंका बड़ा शौक था। अपने कमरेको उन्होंने घड़ीसाजकी दूकान बना रखा था। जिधर देखिये उधर घड़ी ही घड़ी दिखाई पड़ती थी। छोटी, बड़ी, मझोली; टाईमपीस, क्लाक और जेबघड़ी आदि तरह तरहकी घड़ियाँ चारों तरफ टंगी थीं। लालाजी प्रति दिन सबेरे उठकर अपने हाथसे उनमें चाबी दिया करते थे। इस कामको वे वृद्धावस्थाके एकमात्र संबल भगवद् भजनसे भी बढ़कर आवश्यक समझते थे।

अबकी श्यामसुन्दरकी दृष्टि इन्हीं लाला निहालचन्द पर पड़ी। उसने घड़ीके अन्दर विस्फोटक पदार्थ रखकर लालाजीको देनेका विचार किया। जिसमें चाबी देते ही वे उड़ जायें अथवा चूर चूर होकर ढेर हो जायें।

यद्यपि सरकारने बंगालके बमबाजोंको पकड़ कर कालेपानी भेज दिया था, परन्तु एकबारगी उनका अस्तित्व नहीं मिटा सकी

थी। शीतकालके खटमलकी तरह कुछ अब भी जहाँ तहाँ छिपे पड़े थे।

"जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ" के अनुसार बड़ी तलाशके बाद आखिरकार श्यामसुन्दरने एक 'बमबाज' ढूंढ़ही निकाला और रब्तजब्त पैदा करके अपना उद्देश्य उससे कह सुनाया। पहले तो उसने श्यामसुन्दरको खुफ़िया पुलिसका आदमी समझकर उसके इच्छानुसार काम करनेसे इन्कार कर दिया। परन्तु अन्तमें बहुत विश्वास दिलानेपर तथा प्रचुर दक्षिणा प्राप्त करनेके बाद एक बम बना देनेको तैयार हो गया।

श्यामसुन्दरने कहा,—"भाई बमबाज, ऐसा बम बनाना जो बड़े आकारकी टाईमपीस घड़ीके भीतर रखा जा सके और चाबी देते ही फूट पड़े!"

अस्तु, श्यामसुन्दरकी मनोकामना पूरी हुई। बमबाजने उसके इच्छानुसार एक छोटासा बम बनाकर घड़ीके अन्दर रख दिया। श्यामसुन्दर उसे लेकर प्रसन्नतापूर्व्वक एक दिन लाला निहाल-चन्दके पास पहुंचा और भक्तिपूर्व्वक प्रणाम करके बोला, चाचाजी आपके वास्ते एक नये तर्जकी टाईमपीस घड़ी लाया हूँ। लीजिये कहीं इसे भी टाँग दीजिये।

घड़ियोंके 'आशिकजार' लाला निहालचन्द नये तर्जकी घड़ी देख खुश हो गये। इसके बाद थोड़ी देरतक इधर-उधरकी बातें कर श्यामसुन्दर घर आया। परन्तु रातको उसे नींद नहीं आई! सबेरा होतेही वह उत्सुकता पूर्व्वक लालाजीके घरकी ओर

चला। परन्तु बम फूटनेके कारण उनकी आकस्मिक मृत्युकी कोई खबर उसे नहीं मिली। अन्तमें हिम्मत करके उसने लाला निहालचन्दके घड़ियोंवाले कमरेमें प्रवेश किया। उस समय दिनके आठ बज चुके थे। लालाजी नित्य नियमानुसार घड़ियोंमें चाबी देकर मोटे तकियाके सहारे लेटे हुए हुक्का पी रहे थे। श्यामसुन्दरको देखते ही हँसकर कहने लगे,—वाह भाई! तुम्हारी घड़ी तो बड़ी विचित्र निकली। वास्तवमें विलायतवाले भी कमाल करते हैं। इस घड़ीके बनानेवालेने इसमें पटाखे रख दिये हैं। चाबी देतेही 'फ़टाफट्' आवाज आती है। मैं तो यह अद्भुत कारीगरी देखकर दंग रह गया।

श्यामसुन्दरने एक फोकी हँसी हँसकर कहा,—जी हाँ, इसीलिये तो मैं उसे लाया ही था।

अन्तमें मनही मन अनाड़ी बमवालेको गालियाँ देता हुआ श्यामसुन्दर अपने घर लौट आया। अबकी उसे बड़ी चिन्ता हुई। वह सोचने लगा, मालूम होता है, विधाताने मेरे भाग्यमें सुख नहीं लिखा है। नहीं तो दो दो बार इस तरह बना बनाया खेल न बिगड़ता!

(४)

अनवरत चिन्ताके कारण श्यामसुन्दरके मनकी अवस्था बड़ीही खराब रहने लगी। उसे बड़ी आशा थी, कि ज्योतिषीजीकी भविष्यद्वाणीका निबटारा करके वह सुखपूर्व्वक जीवन-यात्रा

निर्वाह करेगा। परन्तु वह आशा पूरी न हुई। दो-दो बारका प्रयत्न बिलकुल निष्फल हो गया। विषम नैराश्यने उसे हतोत्साह कर दिया। वह सदैव उदास भावसे कालातिपात करने लगा। इधर बार बार मुकद्दमेकी तारीखकी तरह विवाहकी तिथि टलते देखकर कन्या-पक्षवाले भी विचलित होने लगे। श्यामसुन्दरके भरोसे 'सयानी' लड़कीको वे कबतक अनूढ़ा रखते। साथ ही ऐसे सुपात्रको छोड़ना भी उनके लिये कठिन हो गया। खैर, कुछ दिन और श्यामसुन्दरका आसरा देखना ही उन लोगोंने उचित समझा।

इधर श्यामसुन्दरकी अवस्था उत्तरोत्तर खराब होने लगी। नाना प्रकारकी दुर्भावनायें उसके चित्तको चञ्चल करने लगीं। नैराश्यके कारण मनमें कभी कभी वैराग्य उत्पन्न होने लगा।

इसी तरह चिन्ता-तरङ्गमें बहते कई मास बीत गये। भीषण भविष्यसे बचनेकी कोई तदबीर श्यामसुन्दरके दिमागमें नहीं आई।

सन्ध्याका समय था। घरके एक निर्ज्जन स्थानमें बैठे-बैठे श्यामसुन्दरकी तबीयत ऊब गई थी। उसने कुछ देर इधर उधर टहल कर जी बहलानेका बिचार किया, छड़ी लेकर घरसे निकला और टहलता हुआ राजघाटके पुलपर जा पहुंचा। भगवती भागीरथीका कल निनाद सुनकर मानों उसके मनको कुछ शान्ति मिली। वह पुल पर टहलने लगा। इतनेमें उसकी नजर एक मनुष्य पर पड़ी। वह भी निर्ज्जन स्थानमें खड़ा होकर गङ्गाकी

तरल तरङ्गोंकी क्रीड़ा देख रहा था। श्यामसुन्दरने देखते ही पहचान लिया। स्वयं पण्डित दक्षिणानन्दजी थे। शायद सान्ध्यवायु सेवनकी अभिलाषासे पुलपर आकर खड़े हो गये थे।

सूर्य्यास्त हो चुका था। आकाशमें दो चार तारे भी निकल आये थे। गङ्गाकी लहरों पर चन्द्रमाका प्रतिबिम्ब बड़ा ही सुहावना दीख पड़ता था। ज्योतिषीजी तन्मय होकर यह अपूर्व्व शोभा देख रहे थे। पुलपर कोई नहीं था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। एकबार ज्योतिषीजीको अच्छी तरह देखकर श्यामसुन्दर सोचने लगे,—"इसी मनुष्यके कारण आज मेरा जीवन विड़म्बनामय हो रहा है। यदि मेरा हाथ देखकर यह मेरे मनमें ऐसी आशंका न उत्पन्न कर देता, तो मेरी यह दशा कदापि न होती। क्या इससे बदला नहीं लिया जा सकता? मौका अच्छा है, यदि मैं इसे उठाकर गङ्गामें फेंक दूँ, तो सारा बखेड़ा मिट जायगा। बदला भी मिल जायगा और इसकी भविष्यत् वाणी भी सफल हो जायगी। यदि सावधानीसे यह कार्य्य कर सकूँ तो मेरी सारी चिन्ता बातकी बातमें दूर हो सकती है और किसीको कानोंकान खबर भी न होगी। बस, शुभस्य शीघ्रम्।"

मनहीमन यह भीषण संकल्प कर, वह धीरे धीरे जाकर ज्योतिषीके पीछे खड़ा हो गया। ज्योतिषीजी सदैव दूसरोंका भविष्य देखा करते थे, अपने भविष्यकी उन्हें ज़रा भी खबर न थी। कराल काल उनके सिरपर नाच रहा था और वे तन्मय होकर गङ्गाकी लहरोंका नाच देख रहे थे।

श्यामसुन्दरने अपने शरीरकी सारी शक्ति लगाकर पण्डितजी को उठा लिया और झटपट गङ्गामें फेंककर नौ-दो ग्यारह हो गया। बेचारे दक्षिणानन्दको सोचनेका भी अवसर न मिला!

दूसरे दिन "आज" में खबर छपी, कि काशीके सुप्रसिद्ध ज्योतिषी पण्डित दक्षिणानन्दजीने दुर्भाग्यवश अधिक बूटी छान ली थी और नशेके झोंकमें राजघाटके पुलपरसे गङ्गामें कूदकर मर गये!



प्रत्यक्ष देवता ।

(१)

"देखो, बहू, मेरी बात मानों। एकबार बाबा नरसिंहदाससे आशीर्वाद लो। उनकी कृपासे तुम्हारी मनोकामना अवश्य ही पूरी होगी। वे सिद्ध महात्मा हैं। उनकी दयासे कितनी ही बाँझ स्त्रियोंकी गोद भर चुकी हैं।"

यशोदाने उदास भावसे उत्तर दिया—"तुम्हारे लालाजी मानें तब तो! वह तो साधु महात्माओंका नाम सुनते ही बिगड़ उठते हैं। कहते हैं, आजकलके साधु ढोंगी और धूर्त होते हैं। सीधे सादे लोगोंको ठगा करते हैं।"

रोहिणीने कानोंपर हाथ रखकर कहा—"राम राम! ऐसे महापुरुषको ढोंगी और धूर्त कहते हैं। बाबाजीकी अद्भुत शक्तिका हाल कौन नहीं जानता। बड़े बड़े राजा-महाराजा और सेठ साहूकार उनके सामने हाथ बाँधे खड़े रहते हैं। दूर दूरसे लोग उनके दर्शनोंके लिये आते हैं। जिसे सुनो, वही उनके गुण गाता है। उनको भगवानका साक्षात् दर्शन होता है।"

यशोदा—"अच्छा चाची, मैंने सुना है, कि वह जो भोग लगाते

हैं, उसे ठाकुरजी साक्षात् रूप होकर ग्रहण कर लेते हैं। क्या यह बात सच है?

रोहिणी—सच क्यों नहीं है। मैं तो अपनी आँखसे देख चुकी हूं। मैं ही क्यों हजारों आदमियोंने देखा है। अभी तो उस दिनकी बात है, मैं हुनमुनकी अम्मा, मोहनकी चाची, बड़ी बहू, चौबाइनजी, साहुजोकी लड़की बुधिया, और बुढ़िया मामी वगैरह महल्लेकी बीसियों स्त्रियोंने जाकर ठाकुरजीको भोग खाते देखा है। बहू, एक दिन तुम भी बाबाका दर्शन करने चलो। अहा, कैसा रूप है, कैसा दमकता हुआ चेहरा है, शरीर ऐसा है, कि मक्खी भी बैठे तो फिसल जाये। बाबाजीके बड़े चेले कहते थे, कि गुरुजीकी उमर एक सौ पैंसठ वर्षकी हो गई है। सन सत्तावनके गदरमें इन्हींके आशीर्वादसे 'दुबहा बाबा' (कुंवरसिंह) ने फिरङ्गियोंको हराया था। बाबाजी आजके नहीं हैं। उनको भगवानका आशीर्वाद है। जबतक संसारमें रहेंगे, तबतक इसी तरह जवान बने रहेंगे। अबकी बहू, तुम जरूर हमलोगोंके साथ चलो।

यशोदाने ठण्ढी साँस खींचकर कहा,—"मेरे भाग्यमें ऐसे महात्माओंका दर्शन कहाँ बदा है! मैं हजार कहूंगी, परन्तु वे जाने न देंगे। उनको संसारमें सब चोरही बदमाश दिखाई पड़ते हैं।"

रोहिणीने अपने कण्ठ-स्वरको किञ्चित धीमा करके कहा,—"उनसे पूछनेकी क्या ज़रूरत है। जिस दिन इलाक़ा पर जायें,

उस दिन धीरेसे हमलोगोंके साथ चलो चलना। कोई चोरी करने थोड़े ही जाना है, कि इतना डरती हो।"

यशोदा—बिना उनसे पूछे कैसे आऊँगी। सुन लेंगे तो क्या कहेंगे।

रोहिणी—"तुम भी बहू, अजीब औरत हो। कौन उनसे कहने जायेगा, जो सुन लेंगे। इतना डरनेसे भी कहीं काम चलता है। तुम्हारे चाचाजी जब जीते थे तब मुझे घरकी देवढ़ी भी नहीं लांघने देते थे, परन्तु मैं उनकी आँख बचाकर सब काम कर लिया करती थी। कोई मेला तमाशा ऐसा नहीं होता था जहाँ मैं नहीं जाती थी, परन्तु उनको कानों कान खबर तक नहीं होती थी। बुधियाका भी तो वही हाल है। केशव जानते हैं कि मेरी बीबी घरसे बाहर होती ही नहीं और बुधिया इसी उमरमें सबकुछ देख सुन चुकी है।

लाला मेघूमलकी स्त्री यशोदा बड़ी सुशीला और आज्ञाकारिणी थी। भगवानने उसे रूप और गुण दोनों दिये थे। ऐसी स्त्री पाकर लालाजी अपनेको परम सौभाग्यशाली समझते थे। यशोदा उनकी चोरीसे कोई काम करनेकी कल्पना भी कभी न करती थी। इसलिये रोहिणी चाचीकी बातें सुनकर डर गई। परन्तु पुत्र प्राप्तिकी अभिलाषाके कारण कलेजेको किसी तरह मजबूत करके पतिकी चोरीसे बाबा नरसिंह दासके दर्शनोंके लिये जानेको राजी हो गई!

*　　*　　*　　*

(२)

आजकल सारे शहरमें बाबा नरसिंहदासकी चर्चा है। ऐसे सिद्ध साधु—पहुंचे हुए फकीर कलियुगमें बहुत कम देखनेमें आते हैं। बड़े बड़े बूढ़ोंने अपने जीवनमें ऐसा महात्मा नहीं देखा है। बाबाजीमें अद्भुत शक्ति है। गांजा, भांग, चरस और चण्डू आदि कोई नशा आपसे छूटा नहीं है। सच पूछिये तो आप साक्षात् शिव हैं। कई युग तक कैलास शिखरपर रहकर घोर तप कर चुके हैं। बाबाजीका चमकता हुआ चेहरा, लाल लाल बिशाल नेत्र, सुपुष्ट शरीर और एक सौ पैंसठ वर्षकी उमर लोगोंको आश्चर्य्यमें डाल देती है। ऐसे साक्षात् देवता तुल्य महापुरुषका शुभागमन राहतगञ्जके रहनेवालोंके सौभाग्यका विषय है।

शहरसे बाहर, एक निर्ज्जन स्थानमें बाबाजीने एक गुफ़ा बनवाई है। यह विशाल गुफ़ा बाहरसे तो मट्टीके टीलेकी तरह मालूम होती है, परन्तु भीतरसे बिलकुल बँगलानुमा बनी है। हवा और रोशनीका इसमें काफी इन्तजाम है। बाबाजी दिनरात गुफ़ाके भीतर बैठे तप किया करते हैं। जब दर्शनाभिलाषी भक्तोंकी भीड़ बहुत बढ़ जाती है, तो अपने चेले महोदरानन्द और निरक्षरानन्दके प्रार्थना करने पर कभी कभी कुछ देरके लिये बाहर चले आते हैं।

बाबाजी भगवान नरसिंह देवके उपासक हैं। इसीसे आपका

नाम 'नरसिंहदास' है। नरसिंह भगवानकी एक छोटीसी किन्तु सुन्दर प्रतिमा आपके पास है। उसी मनोहर मूर्त्तिके आप उपासक हैं। यह मूर्त्ति आपको आपके गुरुदेवने दी थी, जो आजकल गौरीशङ्कर शिखरपर बैठे हुए घोर तप कर रहे हैं। बाबा नरसिंहदासकी नृसिंह मूर्त्ति भी उन्हींकी तरह अद्भुत और विचित्र है। उनके चेलोंका कहना है, कि मूर्त्ति बोलती है, खाती है, सोती है, खेलती है। यह सुनकर एक दिन एक अकाल पक्क छोकड़ेने बाबा नरसिंहदासके चेलोंसे पूछा था,—"महाराज, जब मूर्त्ति खाती पीती है. तब तो उसे पैखाने पिशाबकी भी हाजत होती होगी।"

यह सुनकर दोनों चेले उसपर बहुत बिगड़ गये। परन्तु छोकड़ा चालाक था। रंग बेढब देखते ही फौरन नौ दो ग्यारह हो गया।

जो हो, मूर्त्तिकी करामात तो राहनगंजके सैकड़ों बुद्धिमानोंने अपनी आँखोंसे देख ली हैं। बात असल यह है, कि आजकल अङ्गरेजी शिक्षा-दीक्षाके कारण लोगोंकी मति-गति बिलकुल बदल गई हैं। देव-देवियों तथा साधु-सन्तोंपर लोगोंकी आस्था बहुत कम हो रही है। इससे धर्मको भयङ्कर धक्का लग रहा है। इसे इस अधोगतिसे बचाना साधुसन्तोंका ही काम है, इसीसे अपने पूज्यपाद गुरुदेवकी आज्ञासे अधःपतित धर्मके कल्याणके लिये तपस्या छोड़कर बाबा नरसिंहदासजी राहतपुर आये हैं और देवमूर्त्तियोंके प्रति लोगोंकी आस्था स्थापित करनेकी इच्छासे

श्री नरसिंह देवकी प्रत्यक्ष करामात लोगोंको दिखा दिया करते हैं।

जिस सुन्दर सिंहासन पर श्रीनरसिंह देवजी विराजा करते हैं वह है तो छोटा ही परन्तु उसकी बनावट बड़ी ही सुन्दर और अद्भुत है। महोदरानन्दका कहना है, कि यह सिंहासन स्वयं विश्वकर्माने बनाकर बाबाजीको दिया था। सिंहासनमें दो खण्ड हैं। पहले खण्डमें क्या है, यह किसीको मालूम नहीं। दूसरे खण्डमें स्वयं नरसिंहजी विराजमान हैं। प्रतिदिन पूजा कर लेनेपर मूर्त्तिके सामने बाल-भोग रख दिया जाता है। इसके बाद श्यामाके पिंजड़ेको ढकनेवाली 'तह्री' की तरह एक दोहरे मोटे वस्त्रसे सिंहासन अच्छी तरह अच्छादित कर दिया जाता है। भक्तमण्डली उच्चस्वरसे स्तोत्रपाठ करने लगती है। शंख, घण्टा घड़ियाल बजने लगते हैं। इसी समय बाबाजी सिंहासनका एक खटका दबा देते हैं, उनका इशारा पाकर श्रीनरसिंहजी महाराज, पर्देकी आड़में बैठकर बाल-भोग उड़ाना आरम्भ कर देते हैं। इस तरह जब प्रायः दस पन्द्रह मिनिट बीत जाते हैं, तो खटका उठाकर पर्दा हटा दिया जाता है। मूर्त्ति पूर्व्ववत् निश्चल भावसे अपने स्थानपर बैठी हुई और बाल-भोगकी कटोरी ख़ाली दिखाई देती है। देवमूर्त्ति और उसके भक्तकी अद्भुत करामात देखकर जनता दङ्ग रह जाती है। इस पापताप पूर्ण घोर कलिकालमें, देवताका प्रत्यक्षरूपसे प्रगट होकर भोग ग्रहण करना आश्चर्य्य नहीं तो क्या है? केवल यही नहीं, बाबा नरसिंहदासमें और

भी बहुतसे गुण हैं। कितनी ही बंध्या स्त्रियाँ आपके प्रसादसे पुत्रवती हो चुकी हैं। केशव साहुकी नव विवाहिता स्त्री बुधिया-के भी पैर बाबाजीकी बदौलत भारी हो रहे हैं।

बाबाजीकी कुटीपर घी, दूध, आटा, चीनीका ढेर लगा रहता है। बाबाजी तो केवल छटाँक डेढ़ चटाँक दूध पी लिया करते हैं, सो भी रोज नहीं। राहतगञ्ज आये बरस बीत गये, परन्तु आजतक आपको किसीने खाते पीते या शौचक्रियाके लिये जाते न देखा। इन्हीं सब अलौकिक गुणोंके कारण बाबाजीकी प्रतिपत्ति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। दूर दूरसे बड़े बड़े घरोंकी स्त्रियाँ आपके दर्शनोंके लिये आती और मनोवाञ्छित फल लाभ कर वापस जाती हैं। आजकल चेलोंकी संख्या भी बहुत बढ़ गई है।

(३)

'अपटुडेट' शिक्षित होनेपर भी लाला मेघूमल सच्चे हिन्दू हैं। मूर्त्ति-पूजा, पितृश्राद्ध, व्रत-उपवास और अवतारवाद आदि, विषय जिनकी निन्दा आजकलके काण्डज्ञान हीन, निरक्षर टुच्चे लोग भी किया करते हैं, उनपर भी लालाजीकी असीम आस्था है। हिन्दू धर्मकी उदारता और समदर्शिताके वे खूब कायल हैं। लोगोंकी मूर्खता, स्वार्थपरता और अज्ञानताके कारण जो धार्मिक और सामाजिक कुरीतियाँ इस जातिमें घुस गई हैं, उन्हें दूर करनेके लिये आप यथासाध्य सदैव चेष्टा किया करते हैं। आपका कहना है, कि यदि पुरोहितों और साधुओंका सुधार कर दिया

आये, तो हिन्दू धर्मकी सारी कुरीतियाँ आपसे आप दूर हो सकती हैं। इसीसे इन दो कामोंके लिये धन खर्च करनेमें भी वे मुक्त-हस्त हैं। साथ ही धर्मकी आड़में दुराचार करनेवालोंके लालाजी जानी दुश्मन हैं। धर्म-ढोंगियोंकी सूरत देखकर उनका आपाद-मस्तक जल उठता है। ऐसे पापियोंकी क्षमा करना वे महापाप समझते हैं।

लोगोंकी जबानी लालाजी बाबा नरसिंह दासका हाल सुन चुके हैं। उनका दृढ़ विश्वास है, कि वह दुराचारी हैं और धर्मके नामपर भोलीभाली धर्मभीरु जनताको ठग रहे हैं। इसलिये वे शीघ्र ही उनकी मक्कारीकी जाँचकर उसे समुचित दण्ड दिलानेकी व्यवस्था करनेवाले हैं। परन्तु गङ्गाकी बाढ़में उनकी जमीन्दारीके कई गाँव डूब गये थे। हजारों प्रजाके घरबार बरबाद हो गये थे। इस घोर संकटमें प्रजाकी सहायता करना वे अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। इसीसे आजकल सब कुछ भूलकर वे अपनी विपद्ग्रस्त प्रजाकी भलाईकी चेष्टा करनेमें लगे थे। इस पवित्र कार्य्यमें वे लाखों रुपये खर्च कर चुके हैं। इस आवश्यक कार्य्य-से फुरसत पाते ही वे नरसिंहदासकी खबर लेंगे।

आज अकस्मात लाला मेघूमलकी बाँई आँख फड़क उठी। साथ ही एक अज्ञात आशङ्कासे एकबार हृदय भी दहल गया। वे मन-ही-मन तरह तरहकी बातें सोचने लगे। थोड़ी देरके बाद सारा विचार प्रवाह सिमट कर यशोदाकी ओर चल पड़ा और साथ ही एक अव्यक्त अभावसे उनका हृदय भर गया। मालूम

हुआ मानों कोई अति मूल्यवान वस्तु खो गई है। परन्तु बहुत विचार करने पर भी उन्हें हृदयके इस आकस्मिक उद्वेगका कोई कारण मालूम नहीं हुआ। इसी समय हठात् उन्हें एक पुरानी बात याद आ गई। एक दिन यशोदाने पुत्रवती होनेके लिये किसी साधु-महात्मासे आशीर्वाद लेनेका प्रस्ताव किया था। परन्तु लालाजीने उसे स्वीकार नहीं किया! उन्होंने किञ्चित कुपित होकर पत्नीसे कहा था, इस तरहकी वाहियात बातोंका जिक्र मेरे सामने फिर कभी मत करना। यदि विधाताने लिखा होगा, तो सन्तान अवश्य ही होगी, नहीं तो हज़ार चेष्टा करनेसे भी कुछ न होगा। दुआ-दावीजके भरोसे पुत्रवती होनेका बेहूदा विचार छोड़ दो। अभी तो हम लोग बूढ़े भी नहीं हुए हैं। अभीसे इस तरहकी वाहियात चिन्ता तुम्हारे मनमें कहाँसे आई?' यह उत्तर सुनकर यशोदा चुप हो गई थी। फिर उसने कभी इस बातका जिक्र उनसे नहीं किया।

बड़ी देरतक विचार करने पर भी मनके इस आकस्मिक परिवर्तनका कोई कारण लालाजीके समझमें न आया। परन्तु हृदयका उद्वेग उत्तरोत्तर बढ़ने लगा। इसलिये उन्होंने उसी समय घर जानेका इरादा किया और चपरासीको पालकी-कहारका बन्दोबस्त करनेका आदेश प्रदानकर यात्राकी तैयारीमें लग गये।

प्रायः डेढ़ महीने पर आज लाला मेघूमल इलाके परसे घर जा रहे हैं। प्राणेश्वरी यशोदाको छोड़कर इतने दिनोंतक बाहर

रहनेका यह पहला ही मौका है। इससे यशोदा अवश्य ही दुखी हुई होगी। लालाजीका एक दिनका वियोग भी उसे असह्य हो जाता है। ऐसी दशामें यह सुदीर्घ डेढ़ मासका समय उसने अवश्य ही बड़े कष्टसे बिताया होगा। अफसोस तो यह है, कि कामके झंझटके कारण, एक पत्र लिखनेका भी मौका नहीं मिला। मालूम नहीं, बेचारी अपने मनमें क्या सोचती होगी। अवश्य ही उसके मनमें अभिमान हुआ होगा। स्त्रियाँ तो स्वभावतः ही अभिमानिनी होती हैं। ज़रा ज़रासी बातके लिये उन्हें अभिमान हो जाया करता है। परन्तु यशोदा बड़ी बुद्धिमती है। पढ़ी लिखी न होनेपर भी वह बड़ी समझदार है। जब उसे मालूम हो जायगा, कि मुझे विवश होकर इतने दिनोंतक इलाके पर ठहर जाना पड़ा है, तब उसका सारा रोष और अभिमान दूर हो जायेगा। ईश्वरने ऐसी रूपवती और सुशीला स्त्री देकर बड़ी कृपा की है। कृतज्ञतासे लालाजीका हृदय उमड़ आया।

इसी तरहकी बहुत सी बातें सोचते विचारते लालाजी अपने घर पहुँचे और हमेशाकी आदतके मुताबिक सबसे पहले यशोदाके कमरेमें चले गये। परन्तु यशोदा वहाँ न थी। लालाजीने समझा, किसी दूसरे कमरेमें होगी। अभी आ जायेगी। इतनेमें सामनेसे मुनिया नौकरानी आती हुई नज़र आई। लालाजीने उसे बुलाकर पूछा—मुनिया, बहूजी कहाँ हैं? उन्हें जल्दी भेज दे।

मुनियाँने किञ्चित संकुचितभावसे रुकते रुकते कहा,—"बहूजी न-न--नहीं हैं!"

ला०—"नहीं हैं ?"

मु०—"जी नहीं।"

ला०—कहाँ गईं, क्या नैहर चली गईं ?

मु०—जी नहीं, रोहिणी चाचीके साथ साधूबाबाका दर्शन करने गई हैं। गये तो घण्टा भर हो गया। अब आती होंगी।

लालाजीने किञ्चित व्यग्रभावसे पूछा—कौनसे साधूबाबाके दर्शन करने गई हैं ?

"बाबा नरसिंहका !"

मुनियाका उत्तर सुनकर लाला मेघूमल चुप हो गये। मानों एकाएक उनके पैरोंके तलेसे पृथ्वी सरक गई। कलेजा बड़े ओरसे धड़क उठा।

(४)

रोहिणीके साथ बाबा नरसिंहदासकी विचित्र गुफ़ामें पहुंचते ही अभागिनी यशोदाको अपनी भूल मालूम हो गई। एकान्त निभृत स्थान और वहाँकी परिपाटी देखकर पतिकी बातें उसे अक्षरशः सत्य प्रतीत होने लगीं। इसलिये भय, आशंका, संकोच और लज्जासे उसका चित्त बारम्बार उद्विग्न होने लगा। उसने अत्यन्त कातर स्वरसे रोहिणीसे कहा—"चाची, मेरी तबीअत बहुत डर रही है। अब मैं एक क्षण भी यहाँ ठहरना नहीं चाहती। मुझे घर ले चलो।"

रोहिणीने भर्त्सनापूर्ण स्वरमें कहा,—"पागल हो गई हो क्या

बहू! यहाँ डर किस बातका है? साधु-महात्मा और देवताके स्थान पर भी कोई डरा करता है। अब आई हो, तो बाबाजीके दर्शन कर लो, अपनी गरज़ सुनाकर आशीर्वाद ले लो तब चलना। तुरन्त आई हो और तुरन्त ही भाग जाओगी तो लोग क्या कहेंगे। ऐसे महात्माके दर्शन बड़े भाग्यसे मिलते हैं। अहा, बाबाजी दयाकी मूर्त्ति हैं। उनकी कृपासे आजकल न जाने कितने दुखियोंका दुःख दूर हो रहा है, कितनी बाँझ औरतोंकी गोद भर चुकी है, और कितने बरबाद घर आबाद हो चुके हैं। मैं उनसे तुम्हारा सब हाल कह चुकी हूं। इसीसे उन्होंने यहाँसे सब औरतोंको हटा दिया है। अगर उनकी दया हो जायेगी, तो जरूरही तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जायेगी।

परन्तु इस समय यशोदाको पुत्रकी आकांक्षा न थी। भयसे उसका कलेजा धड़क रहा था, एक एक क्षण एक एक युगकी तरह सुदीर्घ मालूम हो रहा था। चित्तकी व्याकुलता बढ़ रही थी, बेचारी अबला पिञ्जराबद्ध पक्षीकी तरह इस भयङ्कर स्थानसे निकल भागनेके लिये छटपटा रही थी। उसने गिड़गिड़ाकर कहा,—"चाची, मैं तुम्हारे पावों पड़ती हूं, मुझे यहाँसे ले चलो। फिर कभी आकर साधू बाबाके दर्शन कर लूंगी।"

रोहिणी भिड़ककर बोली,—"चुप रहो। क्या बकबक कर रही हो। मेघूलाला इलाके परसे आ जायगे तो फिर ऐसा मौका कहाँ मिलेगा?"

पतिदेवका नाम सुनते ही एकबार फिर यशोदाका हृदय काँप

गयी। ओह, वे कितने सरल है ? मुझपर कितना विश्वास करते हैं। आनेमें जरासी देर हो जाती है, तो अपराधीकी तरह आकर क्षमा माँगते हैं। इस समय यदि वह घरपर आ गये होंगे और मुझे न पायेंगे तो न जाने मनमें क्या सोचेंगे। उन्होंने मुझे यहाँ आनेको बहुत मना किया था। पतिकी आज्ञाका उल्लंघन कर मैंने घोर पाप कर डाला। ऐसे सरल हृदय पतिको धोखा देकर मैंने अच्छा नहीं किया। हा भगवान, मेरी क्या दशा होगी ?

इन बातोंके मनमें आते ही यशोदाका शरीर अवसन्न हो गया और वह अर्द्धमूर्च्छित सी चुपचाप बैठी रही। इतनेमें बाबा नरसिंह दासजी आकर अपने आसन पर विराज गये। आज वे निराले वेषमें थे। सुन्दर किनारेकी रेशमी धोती, जोगिया रङ्गका रेशमी कुर्त्ता, रतनारी आँखोंमें सुरमेकी पतली लकीर, और मस्तक पर केशरकी छोटी बिन्दी लगी थी। उन्होंने एकबार सतृष्ण दृष्टिसे यशोदाकी ओर देखकर रोहिणीसे कहा, —'क्यों मांजी, यही तुम्हारी बहू हैं ?' यह कहकर उन्होंने एकबार और यशोदाकी ओर देखा।

रोहिणी हाथ जोड़कर बोली "हाँ महाराज, यही है। बेचारी बड़ी दुःखिनी है। भगवानने सब सुख दिया है। परन्तु गोद खाली है। इसीलिये आपकी शरणमें आई है।"

यह कहकर रोहिणीने यशोदासे कहा,—चुपचाप क्यों हो। महाराजजीको प्रणाम करो।

यशोदाने अनिच्छापूर्वक सिर झुका दिया। बाबाजीने उसके

मस्तक पर हाथ रखकर कहा,—"नरसिंहदेव मनोकामना पूरी करें।"

इसके बाद कुछ इधर उधरकी बातें करके बाबाजीने यशोदासे पूछा,—"तुम्हारा नाम क्या है?"

यशोदाने कुछ भी उत्तर न दिया। उसे चुप देखकर रोहिणीने कहा,—"बहू, अपना नाम बता दो। साधु-सन्तोंसे लज्जा कैसी?"

परन्तु यशोदा चुप रही। बाबाजी बोले,—"अच्छा तुम्हीं इनका नाम बता दो।"

रोहिणीने कहा—"यशोदा।"

बाबाजी—"य—शो—दा। सन्तान तो होगी, परन्तु अनुष्ठानकी आवश्यकता है। ज़रा दाहिना हाथ तो दिखाना!"

रोहिणीने बलपूर्वक यशोदाका हाथ लेकर बाबाजीके हाथमें दे दिया। उस समय यशोदाका बाह्यज्ञान विलुप्त सा हो गया था। वह मिट्टीकी मूर्त्तिकी तरह निश्चलभावसे बैठी थी। इधर बाबाजी उसका अपूर्व सौन्दर्य्य देखकर विमुग्ध हो रहे थे। प्रतिदिन कितनी ही औरतें उनके पास आकर आशीर्वाद लेती हैं। परन्तु ऐसा अनुपमरूप बहुत कम देखनेमें आता है! बाबाजी ज्यों ज्यों उसे देखते थे, त्यों त्यों उनकी कामवासना बढ़ती जाती थी। उसका हाथ हाथोंमें आते ही बाबाजीका असंयत मन काबूसे बाहर हो गया। उन्होंने रोहिणीसे कहा,—"मांजी, तुम थोड़ी देरके लिये बाहर जाओ। मैं यशोदासे कुछ बातें करना चाहता हूं।"

रोहिणी बाहर गई। यशोदा बाबाजीकी दुरभिसन्धि समझ

गई। उसने रोहिणीके साथ ही वहाँसे निकल भागनेका प्रयत्न किया। परन्तु बाबाजी सावधान थे। चंगुलमें फँसे हुए शिकारको भागनेका उद्योग करते देखकर उन्होंने लपककर दृढ़ता-पूर्वक पकड़ लिया और बलपूर्वक आलिङ्गन करते हुए बोले,—"प्रिये भागती क्यों हो!" यह कहकर वे अपनी कुत्सित वासना पूर्ण करनेकी चेष्टा करने लगे और अभागिनी यशोदा अपने सतीत्वकी रक्षाके लिये छटपटाने लगी।

इसी समय गुफ़ाके द्वार पर तुमुल कोलाहल हो उठा और देखते देखते लाला मेघूमल अपने चन्द साथियों और पुलिसके एक दलके साथ धड़ामसे आ पहुंचे।

* * * *

नरसिंहदासके साक्षात् देवताकी पोल खुल गई! जिस अद्भुत सिंहासनपर श्रीनरसिंहजीकी मूर्त्ति थी, उसके निचले खण्डमें दो मोटे मोटे चूहे रहते थे। पर्दा डालकर खटका दबा देनेपर ऊपर आकर वे ही बालभोग भक्षण कर लिया करते थे।



चलता पुर्जा।

गोबिन्द हमारे स्कूलके सहपाठियोंमें सबसे बढ़ चढ़कर दुष्ट था। लड़के तो क्या मास्टर लोग भी उसके मारे हैरान रहते थे। ड्राइङ्गमास्टरकी कुर्सीमें एक दिन उसने आलपीन खोंस दिया। एक दिन पण्डित क्लासमें ही सो गये, यह देखकर गोबिन्दने उनकी लम्बी चोटी कुर्सीमें बाँध दिया। क्लासमें बैठकर सिगरेट पीना और पूछने पर साफ़ मुकर जाना तो उसके बाँये हाथका खेल था। मज़ा तो यह था, कि सिगरेट पीता था गोबिन्द और सिगरेटका जला हुआ आधा हिस्सा निकलता था, भूपति या बेनीके पाकेटसे। उसके अपराधोंको देखते हुए भी कोई उसके विरुद्ध गवाही देनेका साहस नहीं करता था। एक दिन हेडमास्टर साहबके कमरेमें उसने न जाने कहाँसे लाकर तीन चार कुत्तेके बच्चे छोड़ दिया। श्रीकृष्ण देखता था, जब पूछताछ होने लगी तो उसने साफ़ बता दिया कि गोबिन्दका कर्म है। इसके लिये गोबिन्दकी काफ़ी मरम्मत हुई। एक सप्ताह तक दससे चार बजेतक 'स्टैण्डप आन दी बेंच' का मज़ा भोगना पड़ा। परन्तु गोबिन्द इससे ज़रा भी हताश न हुआ और न अपने हरकतोंसे बाज़ आया। श्रीकृष्णको गवाही देनेका मज़ा चखानेके लिये उसने कठिन प्रतिज्ञा कर ली। श्रीकृष्ण भी कम

चालाक न था। बहुत दिनोंतक दोनोंमें चाणक्य और मन्त्रिवर राक्षसकी तरह दाँवपेंच चलते रहे। परन्तु अन्तमें गोबिन्दकी ही जीत हुई। एक दिन उसने श्रीकृष्णके बक्समें न जाने कहाँसे लाकर बर्रेका छत्ता रख दिया। श्रीकृष्ण ज्योंही बक्स खोलने गया त्योंही कुपित बर्रों ने उसे काट खाया। बस, उसी दिनसे श्रीकृष्णने गोबिन्दका लोहा मान लिया। सच पूछिये, तो इस घटनासे सारे स्कूलके छात्रोंपर गोबिन्दका सिक्का जम गया। किसीको उसके विरुद्ध बोलनेका साहस नहीं होता था। यदि उसे छकानेके लिये कोई चेष्टा की जाती थी, तो वह फौरन उसे जान जाता और चुपचाप ऐसी कोई तदबीर निकाल लेता, कि हमलोगोंकी सारी साजिश धूलमें मिल जाती। रातको जब हमलोग सो जाते और बोर्डिङ्गमें चारों तरफ़ सन्नाटा छा जाता तो गोबिन्द धीरेसे उठता और एक एक चुटकी सुँघनी सबकी नाकमें छोड़ देता। उस समय 'आक्छी' के तुमुल कोलाहलसे सारा बोर्डिङ्ग गूँज उठता था और सवेरे जब बोर्डिङ्ग सुपरिण्टेण्डेंट साहबके सामने मामलेकी पेशी होती थी, तो प्रमाणित हो जाता था, कि कल गोबिन्द अपने मामाके घर था। स्कूलके, मेरे जैसे सीधे सादे लड़के तो मानों गोबिन्दके चेले थे। उसकी बुरी भली तमाम आज्ञाओंका चुपचाप पालन करना उनका धर्म था। यदि किसीने गोबिन्द महाराजकी आज्ञाका उल्लङ्घन कर दिया तो बस, समझ लीजिये कि उसकी शामत आ गई। इस तरह हुक्म उदूली करनेवाले किसी न किसी गुरुतर अपराधमें वे अवश्य ही

गिरफ्तार होते और मास्टरों द्वारा दण्डित किये जाते। शरारत गोविन्द करता और दण्ड वह पाता जिसने उसकी आज्ञा न मानी। वह अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करनेके लिये लाख सर मारता परन्तु गोविन्दके पेश किये हुए प्रत्यक्ष प्रमाणोंके सामने उसकी एक नहीं चलती। ऐसी अवस्थामें कौन जानबूझकर आफ़त मोल लेता। फलतः ऊँची श्रेणीके कुछ छात्रोंको छोड़ सबने एक स्वरसे गोविन्दका लोहा मान लिया था। और इसीमें कल्याण भी था। क्योंकि गोविन्द एहसानफरामोश न था। अपने मातहतों पर वह बड़ी कृपा रखता था। हर तरहसे उनकी सहायताके लिये तैयार रहता था।

एक दिन किशोरके घरसे मिठाई आई। उसने अपने कमरेके दो-चार लड़कोंको थोड़ी थोड़ी मिठाई बाँटी और बाकी अपने बक्समें बन्द करके रख लिया। यह बात हमलोगोंको बहुत नागवार मालूम हुई। बहुत तर्क वितर्कके बाद बहुतसे यह प्रस्ताव पास हुआ कि श्रीमान किशोरबाबूकी सेवामें एक डेपुटेशन भेजकर उनसे प्रार्थना की जाय कि भलेआदमीकी तरह मिठाईकी हँड़िया बक्ससे बाहर करदें क्योंकि वह सार्वजनिक सम्पत्ति है। किशोरको कोई हक नहीं है, कि वे मिठाईको कैद करके रखें। यथा समय डेपुटेशन उनकी सेवामें पहुंचा। इस डेपुटेशनके प्रमुख थे, हमारे श्रीमान गोविन्द! उन्होंने एक सुदीर्घ वक्तृता देकर डेपुटेशनका अभिमत व्यक्त किया। परन्तु सरकारी अहलकारोंकी सेवामें गये हुए हमारे नेताओंके डेपुटेशनोंकी तरह

उसका कोई फल नहीं हुआ। किशोरने साफ़ इन्कार कर दिया कि मिठाई जो आई थी, वह बँट गई, अब नहीं है। उनसे कहा गया, कि अपने कथनकी सत्यता प्रमाणित करनेके लिये बक्सका तो ताला खोल दीजिये। परन्तु उन्होंने ऐसा करना स्वीकार नहीं किया। साथही उन्होंने यह धमकी भी दी कि यदि कोई बक्सका ताला तोड़नेका साहस करेगा तो उसे मैं देख लूंगा। गोबिन्दने कहा यदि देखना सुनना हो तो अभी देख सुन लो। परन्तु इस बातको कदापि न भूलना कि तुम्हारी स्नेहमयी माताने जो मिठाई भेजी है, उसपर हमलोगोंका समान अधिकार है। हमलोग किसी तरह अपना अधिकार नहीं छोड़ेंगे।

दूसरे दिन मुंहहाथ धोकर जलपान करनेके समय किशोरने देखा कि बक्सका ताला ज्योंका त्यों बन्द है और मिष्टानकी हण्डिका 'गजमुक्तकपित्थवत्' खाली पड़ी है।

और एक किस्सा सुनिये। गोबिन्दके बहनोईके छोटे भाईका विवाह था। निमन्त्रणमें गोबिन्द भी गया था। चूँकि उस गाँवमें उसकी बहिन ब्याही थी, इसलिये वहाँके अधिकांश नवयुवक आकर गोबिन्दसे हँसी दिल्लगी करने लगे और केवल जबानीही नहीं। एकदिन सो जानेपर किसीने सिन्दूरसे उसकी माँग टीककर ललाटपर एक बेंदी लगा दी। 'मनो नई नार बनाई!' परन्तु बदला न लेना तो गोबिन्दकी जन्मकुण्डलीमें लिखा ही न था। उसने माँग टीकनेवाले सज्जनका बहुत पता लगाया, परन्तु सफ़लता नहीं मिली! परन्तु

गोविन्दबाबू हताश होनेवाले जीव नहीं थे। उन्होंने इस मज़ाकका भरपूर बदला लेनेका पक्का इरादा कर लिया। जेठका महीना था। बारातसे थकेमाँदे लौटकर लोग दुपहरीमें विश्राम कर रहे थे। गोविन्दने इस सुवर्ण सुयोग को हाथसे जाने देना उचित नहीं समझा। एक कैंची लेकर सबकी थोड़ी बहुत मूँछें कतर दीं। बड़ा मज़ा रहा। गोविन्दसे दिल्लगी करनेका फल हाथोंहाथ मिल गया। लोग आये थे विवाह जैसे मांगलिक कार्यमें और चले मूँछें मुड़ाकर!

इसी तरह गोविन्द नित्य नई खुराफातें किया करता था। परन्तु पढ़ने लिखनेमें वह किसीसे पीछे न था। परीक्षाओंमें, क्लासभरमें सबसे अधिक नम्बर उसे ही मिलते थे। इसलिये उसकी बहुतसी शरारतें क्षन्तव्य थीं। अध्यापक लोग उसे बड़े स्नेहकी नज़रसे देखते थे। एक दिन हेडमास्टर साहब प्रसन्न होकर उसका नाम 'चलता पुर्ज़ा' रख दिया था, तबसे वह इसी नामसे मशहूर हो गया। सभी उसे इसी नये नामसे पुकारा करते थे।

* * * *

बहुत दिन हुए गोविन्दने पढ़ना लिखना छोड़ दिया है, परन्तु उसका चलतापुर्ज़ापन ज्योंका त्यों बना है। उसके पिता एक प्रतिष्ठित सरकारी कर्मचारी थे। सरकारी नौकरी उसकी पैतृक सम्पत्ति थी, इसलिये पिताने अपने एकमात्र पुत्रको उस सम्पत्तिका उत्तराधिकारी बनानेकी बड़ी चेष्टा की। सुनते हैं, लाटसाहबने

वचन भी दिया था, कि लड़केको बी० ए०, एल० एल० बी०, पास कराइये। मैं उसे डिप्टी मजिस्ट्रेटी दिलानेकी कोशिश कर दूँगा। परन्तु कालेजका क्लाइमेट चलतापुर्जाको पसन्द न थी। साथही नौकरीसे भी उसे आन्तरिक घृणा थी। इसलिये पिताके स्वर्गपयान करते ही उसने पढ़ना-लिखना छोड़कर खद्दरका व्यवसाय आरम्भ कर दिया और अपने गाँवमें रहने लगा। खद्दरका प्रचार, बीमारोंकी तीमारदारी, ग़रीबोंकी मदद और नवयुवकोंको व्यायाम आदिकी शिक्षा देना उसका जीवनव्रत था। इसके सिवा गाँजेका दम लगाना, पड़ोसियोंके मुर्दे जलाना, लड़कोंको कुश्ती लड़ाना और लोगोंसे हँसी-दिल्लगी करना उसके मनबहलावकी सामग्री थी। शामको गोविन्दके दरवाज़े पर गाँवभरके लड़कोंकी फौज़ एकट्ठी हो जाती थी पहले कवायद परेड आरम्भ होता था उसके बाद रस्से खींचे जाते थे या कबड्डी आदि कोई देहाती खेल आरम्भ हो जाता था। इसके बाद जोड़ चुनकर मल्लयुद्ध आरम्भ होता था। इस दङ्गलमें पाँच वर्षसे लेकर बारह चौदह वर्ष तकके पहलवान शामिल होते थे। छोटे छोटे पहलवानोंके लिये नरम ज़मीनकी विशेष व्यवस्था थी। कुश्ती मारनेपर पाँच रेवड़ी और हारनेपर दो रेवड़ी मिलती थी। जो इस दङ्गलमें नहीं शामिल होता था या चोट लगने पर रो देता था, वह कायर और 'फस्सड्डी' कहलाता था। उसकी रेवड़ी जब्त कर ली जाती थी।

इसी तरह आनन्दोल्लासमें गोविन्दका जीवन बीतने लगा।

परन्तु उसकी स्नेहमयी जननीको उसकी जीवनचर्य्या पसन्द न थी। उन्होंने उसे विवाहबन्धनमें बाँधकर सीधा कर डालनेका विचार किया। गोविन्दने पहले तो आना-कानी की, परन्तु जब देखा कि उसके बार बार इन्कार करनेसे माताके मनको दुःख हो रहा है, तो वह राजी हो गया। परन्तु इस शर्तपर कि जिसके साथ विवाह होगा, उसे देख लूँगा।

बड़ी मुशकिलसे एक कन्या मिली। उसके पिता ग़रीब थे लोगोंके बहुत समझाने बुझाने पर वे कन्या दिखानेको राजी हो गये। लड़की पढ़ी-लिखी थी, रूपरंग भी अच्छा था। बड़ी धूमधामसे शादी हुई। एकमात्र पुत्रके विवाहमें वृद्ध माताने जी खोलकर खर्च किया। अपना अन्तिम हौसिला पूरा करनेमें उन्होंने कोई कोर कसर नहीं रखी।

* * * *

'राम मिलाये जोड़ी, एक अन्धा एक कोढ़ी।' जैसे श्रीमान गोविन्द मशहूर चलतापुर्जा थे। सौभाग्यवश वैसाही श्रीमती रमा भी मिल गई थी। उनके यहाँ लड़कोंकी भीड़ लगी रहती थी, तो यहाँ लड़कियोंका मजमा एकत्र होता था। भीतर-बाहर समान चहलपहल मची रहती थी। इस नवीन दम्पतीका प्रेमालाप भी कुछ निराले ही ढंगका होता था। जरा उसका भी एक नमूना लीजिये। 'कुसुमिका' के सम्पादक गोविन्दके अन्तरंग मित्रोंमें थे। उन्होंने अपनी पत्रिकाके लिये एक वीर-रसात्मक कविता लिख भेजनेका अनुरोध किया था। गोविन्द

तन्मय होकर अपने बन्धुकी आज्ञा पालन करनेमें लगा था। इतनेमें रमादेवीने आँधीकी तरह कमरेमें प्रवेशकर पूछा,—यहाँ एकान्तमें बैठे बैठे क्या हो रहा है?

गोबिन्द,—एक कविता लिख रहा हूं।

रमा—देखूं क्या लिख रहे हो?

गोबिन्द—अभी नहीं पूरी हो जानेपर देख लेना। इस समय यहाँसे चली जाओ!

रमा—नहीं हरगिज नहीं जाऊँगी।

गो०—नहीं जाओगी तो मेरे काममें विघ्न पड़ेगा।

रमा—पड़ने दो।

गो०—दिक मत करो। हाथ जोड़ता हूं चली जाओ।

रमा—जो लिखा है, उसे दिखा दो तो चली जाऊँगी। नहीं तो यहीं बैठी रहूंगी।

इस तरह बड़ी देरतक दोनोंमें तर्क-वितर्क होता रहा। जब किसी तरह रमा जानेको राजी न हुई तो गोबिन्दको एक दिल्लगी सूझी। उसने बड़े प्यारसे रमाको अपने निकट बुलाकर उसके गालपर स्याही लगा दी। यह देख रमाने भी बड़े प्रेमसे गोबिन्दके गले लगकर अपना गाल उसके ललाटमें पोंछ दिया।

रमा जानती थी, कि उसके मियाँ चलतेपुर्जे हैं। इसलिये वह भी उन्हें मात करनेकी फिक्रमें लगी रहती थी। एक दिन गोबिन्दने कहा, माताजी तुम्हारी बड़ी शिकायत करती थीं। तुम दिनभर लड़कियोंको लेकर ऊधम मचाया करती हो। घरका

कामकाज कुछ नहीं देखती हो। यह आदत तुम्हें छोड़ देनी चाहिये।'

रमाने कहा,—अम्माजी तुम्हारी भी शिकायत करती थीं। तुम दिनभर लड़कोंको इकट्ठा कर उन्हें कुश्ती लड़ाया करते हो। घरका कामकाज कुछ नहीं देखते। तुम्हें भी अपनी यह आदत छोड़ देनी होगी।

यह उत्तर सुनकर गोविन्द चुप हो गया। वह समझ गया था, कि रमा स्कूलके लड़कोंकी तरह निरी भोंदू नहीं है। उसे मात करना बड़ा मुशकिल है। वह सेरका सवासेर लौटा देनेको सदा तैयार रहती है। अथच सास और पतिकी सेवासे भी नहीं चूकती।

· · · ·

महात्मा गाँधीके जन्मोत्सवके दिन गोविन्दने अपने गाँवमें एक बृहत् खादी प्रदर्शिनी की थी। महीनोंतक कठिन परिश्रम करके उसका प्रबन्ध किया था। इसी उपलक्षमें देशके नामी नामी वक्ता भी बुलाये गये थे। कई दिनोंतक धर्मनीति, समाज-नीति और राजनीति आदि विविध विषयों पर विख्यात विद्वानोंके व्याख्यान आदि होते रहे। व्यायाम सम्बन्धी खेल तमाशोंका भी आयोजन किया गया था। गोविन्द आहार निद्रा भूलकर महोत्सवकी तैयारीमें लग गया था। महीनों तक दिनरात घोर परिश्रम करनेके कारण उसका स्वास्थ्य खराब हो रहा था। यह बात रमाके लिये असह्य सी हो गई। उसने समयपर आकर

भोजन कर लेनेके लिये कई बार ताकीद की थी। परन्तु गोविन्द ने कुछ खयाल नहीं किया। उसने हंसते हुए कहा,—"तुम मेरे खाने पीनेकी चिन्ता न किया करो! आजकल मुझे भूख प्यास नहीं लगती।"

रमाने व्यंग्यसे कहा,—"बिलकुल नहीं?"

गोविन्द बोला—"नहीं।"

रमा—"बहुत अच्छा!"

उपर्युक्त बातचीतके कई दिन बाद, एकदिन तीसरे पहरको रमा बैठी हुई एक उपन्यास पढ़ रही थी। उसी समय गोविन्दने आकर कहा,—प्यास लगी है। एक गिलास पानी तो देना।

रमा उस समय मानों पुस्तक पढ़नेमें तन्मय हो गई थी। उसने गोविन्दकी बातपर बिलकुल ध्यान नहीं दिया।

गोविन्दने कहा,—सुनती हो?

रमा—"उँहूँ!"

गो०—"मुझे प्यास लगी है!"

रमा—"उँहूँ!"

गो०—"प्याससे मेरा कण्ठ सूखा जा रहा है और तुम बैठी बैठी उहूँ कर रही हो।"

रमा—"तुम्हें आजकल भूख प्यास लगतीही नहीं कण्ठ क्यों सूख रहा है?"

गोविन्दने इस प्रश्नका कोई उत्तर नहीं दिया। स्वयं उठकर

सुराहीसे जल ढालकर पी लिया। जब चलने लगा तो रमाने मुस्कराते हुए कहा,—'एक गिलास मुझे भी।'

"बहुत अच्छा हुजूर!" कहकर गोविन्दने एक गिलास जल ढालकर पत्नीके हाथमें दे दिया। रमाने जल पीकर गिलास अलग रख दिया और बोली—'नाराज़ तो नहीं हुए?'

गोविन्द—"बिलकुल नहीं। परन्तु इस कमरेकी सब पुस्तकें कल बाहरकी कोठरीमें बन्द कर दूंगा।"

रमा—"कोई चिन्ताकी बात नहीं। मैं भी ऊपरसे एक और ताला लगा दूंगी। परन्तु यह पुस्तक तो बड़ी अच्छी है। लेखकने पतिव्रता हिन्दू स्त्रीका एक उज्ज्वल चित्र अङ्कित कर दिया है!

गोविन्द—"तुम्हारी ही तरह? तुम भी तो हिन्दू स्त्री हो कि पतिका प्याससे गला सूख रहा है और बीबी बैठी नावेल पढ़ रही हैं!"

रमा चुप रही। उसने जो निष्ठुरता दिखाई थी, उसके लिये मनही मन लज्जित हुई। वह समझ गई कि इस तरहका बदला लेना अच्छा नहीं!

इधर गोविन्दने भी इस निष्ठुरताका बदला लेनेका पक्का इरादा कर लिया। दूसरे दिन रमाने सुना कि गोविन्द नैनीताल जा रहा है। सब तैयारी हो चुकी है! उसने पतिके पास जाकर कहा,—"मैं भी तुम्हारे साथ नैनीताल चलूंगी!"

गोविन्दने कहा,—मेरे साथ और भी कई आदमी जा रहे हैं, इतने पुरुषोंके साथ तुम कैसे जाओगी?

रमा तो मैं अपने नैहर चली जाऊंगी।

गो० हाँ, यह हो सकता है।

अन्तमें यही तै हुआ। गोविन्द नैनीताल गया और रमा मायके।

नैनीताल पहुंचकर गोविन्दने एक लम्बा पत्र रमाको लिखा। उसमें वहाँकी शोभाका विशद वर्णन था, हिमालयके स्वास्थ्यकर जलवायुका जिक्र था और अन्तमें विमला नामकी काल्पनिक सुन्दरीका भी जिक्र था। गोविन्दने लिखा था कि कल शामको हमलोग विमलाबाईके यहाँ चाय पीने गये थे। उन्होंने मेरा बड़ा आदर किया। रोज आनेके लिये बारंबार अनुरोध किया। इसके बाद विमलाके अलौकिक रूपराशि और उदार तथा सरल सुभावका वर्णन था। सबके अन्तमें यह भी लिखा था, कि विमलाबाई पूर्ण युवती होनेपर भी अभी अविवाहिता है, इत्यादि इत्यादि!

पत्र पढ़कर रमाका मुंह सूख गया। एक काल्पनिक आशंका से उसका हृदय कांपने लगा। उस दिन उठकर जल न देनेकी घटना—वह पिपासातुर सूखा हुआ मुंह उसकी आँखोंके सामने नाचने लगा। अपने निष्ठुर व्यवहारके लिये वह मनही मन अत्यन्त दुखी होने लगी।

इतनेमें श्यामाने पुकारा—"दीदी चूड़ीवाली आई है!" परन्तु रमाने कोई उत्तर नहीं दिया।

श्यामाने फिर पुकारा परन्तु कोई उत्तर नहीं। इसी तरह कई आवाज देनेपर भी जब रमाने कोई उत्तर नहीं दिया तो श्यामा खुद उसके पास गई! श्यामाने देखा कि उसकी दीदीका चिर-हास्यमय चेहरा भादोंकी घनकी तरह निविड़ हो रहा है। आँखें लोलायमान हैं। नासिकासे दीर्घनिस्वास निकल रहे हैं। श्यामा यह देखकर स्तम्भित हो गई। उसने बहिनके पास जाकर धीरेसे पूछा दीदी, यह क्या? उदास क्यों बैठी हो? यह हाथमें पत्र किसका है? क्या जीजाने कुछ लिखा है। इन तमाम प्रश्नोंके उत्तरमें रमाने केवल सिर हिला दिया।

अन्तमें श्यामाके बहुत पूछताछ करनेपर रमाने गोबिन्दका पत्र उसके हाथमें देकर रोते रोते कहा, "एक दिन मैंने उन्हें जल नहीं दिया, इसीसे नाराज होकर नैनीताल चले गये हैं और वहां जाकर बिमला नामकी किसी स्त्रीसे दोस्ती कर ली है।" इससे अधिक वह और कुछ भी नहीं कहने पाई। गला रुँध गया।

* * * *

नैनीतालमें गोबिन्दको एक तार मिला। उसमें लिखा था, कि रमा सख्त बीमार है। अन्तिमबार मिलनेके लिये जल्द आइये।

तार पढ़ते ही गोबिन्दकी अन्तरात्मा कूच कर गई। असबाब वगैरह मित्रोंको सौंप उसने फौरन स्टेशनका रास्ता

लिया। यथासमय गाड़ी इलाहाबाद पहुंची। एक तेज़ तांगेपर सवार होकर गोविन्द अपने ससुरके घर पहुंचा। श्यामा बैठी हुई रास्ता देख रही थी। उसने फौरन ही आदमी भेजकर जीजाजीको ऊपर बुला लिया और बड़ी मुशकिलसे हँसी रोककर बोली, आपने आनेमें बड़ी देर कर दी।

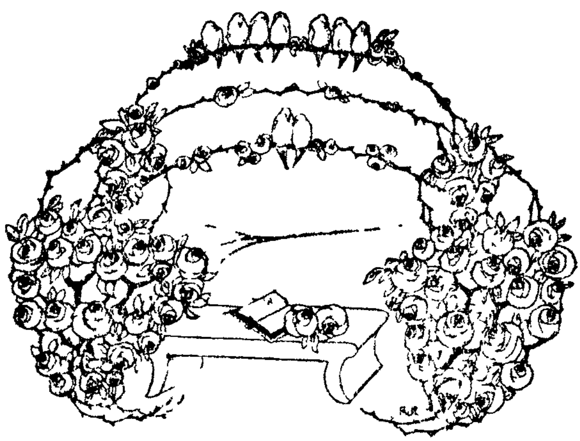
गोविन्दने पूछा, रमा कहाँ है?

श्यामाने उदास भावसे ऊपरकी ओर हाथ उठाया। गोविन्द की आँखें भर आईं! रूमालसे मुंह छिपाकर वह सिसकने लगा।

अन्तमें बहुत समझा बुझाकर श्यामा गोविन्दको ऊपर ले गई! गोविन्दने उसे अच्छी तरह देखकर कहा,—वाह, यह तो अच्छी दिल्लगी रही।

श्यामाने गोविन्दका पत्र दिखाकर कहा,—और यह भी तो कम दिल्लगी नहीं रही!

समाप्त



भूतनाथ तेल।

मलयागिरिके फूलोंसे लदे वृक्षोंकी खुशबूको भी लज्जित कर दिखानेवाला भूतनाथ तेल कहना ही पड़ेगा, कि एकबार व्यवहार करनेपर कुल दूसरे तेलोंकी ओरसे दिल खट्टा कर देगा। कारण यह है, कि यह एक विचित्र मनमोहिनी सुगन्धिके साथ साथ दिमागमें गुदगुदी और तरावट पैदा करनेकी ताकत रखता है और बालोंको मुलायम कर एकही बार लगानेसे रेशमकी सी चमक दे देता है।

भूतनाथ तेल शिरके चमड़ेके नीचे रहनेवाली खूनकी सोती हुई नाजुक नलियोंको जगाकर उनमें तेजी डाल, बालोंकी जड़ों को बलिष्टकर उन्हें लम्बा और चमकीला बनाता है। सिरदर्द खुश्की, तपाक, बातोंका भूलना, कठिन परिश्रमकी थकावटको क्षणमें दूर भगाता है। थोड़ी उमरवाले भाइयोंकी मस्तिष्ककी कमजोरीके कारण कुसमय गिरनेवाले बालोंको मजबूत करता है। अतः सुगन्धिके साथ औषधिका काम करनेके कारण यह तेल संसारके कुल तेलोंका राजा कहा जाता है। दाम फी शीशी ॥।) डाकमहसूल ।≠) दर्जनका दाम ७॥) डाकमहसूल १॥।)

भूतनाथ तेलके कुछ नये सार्टिफिकेट

—:०:—

(१) सरदार सुन्दरसिंहजी डेरा-गाजी-खाँ से लिखते हैं,—सचमुच आपका भूतनाथ तेल अत्यन्त मनोहर है। इससे शिरकी कुल बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। यह मस्तिष्कमें शीतलता लाकर स्मरणशक्तिको बढ़ाता है। मेरी राय है कि सुगन्धित और लाभदायक तेलोंके शौक़ीनोंको दूसरा तेल न व्यवहार कर भूतनाथ तेलको ही सदा व्यवहार करना चाहिये। मेहरबानीकर एक दर्जन भूतनाथ तेल वी० पी से फौरन भेज दें।

(२) श्रीयुत् बाबू कमलाप्रसाद साहब मुख्तार और भूतपूर्व सम्पादक "बिहार-बन्धु" मुकाम गुलजारबाग शहर पटनासे लिखते हैं :—मैंने बहुतसे तेलोंको व्यवहार किया परन्तु भूतनाथ तेलकी तरह कोई तेल न पाया, यथार्थ इसकी सुगन्ध इत्रको भी मात करती है। दरअसल यह तेल सब तेलोंका राजा है।

(३) श्रीयुत् लाला रणवीरलालजी रईस लाहौर से लिखते हैं :—मस्तिष्कमें तरावट और स्मरणशक्तिको बढ़ानेके सिवाय भूतनाथ तेल चन्दुलापनको भी दूर करता है। इसे कुछ दिन सेवन करने पर गिरे हुए बाल भी दोबारा निकल आते हैं। वाकई आपका भूतनाथ तेल लाजवाब तेल है।

———

किशोरीफ्लावर तेल.

देवलोककी देवियाँ जिस नन्दनकाननके सुन्दर और सुगन्धित पुष्पोंको धारणकर ब्रह्माण्डको विमुग्ध कर देती हैं, और मर्त्य-लोकमें मलयागिरिके सुहावन पुष्पोद्यान जिसकी एक छायामात्र है, उसकी कुछ झलक इस धरातलपर भी यदि देखना चाहते हैं तो किशोरीफ्लावर तेलकी एक शीशी उठा लीजिये और धीरे धीरे उसकी रङ्गीन टोपीके नीचेवाली डाटको खोल दीजिये !—मालूम होगा कि स्वर्गकी खिड़कियाँ खुल पड़ीं ! दिमाग़ ताजा और हरा हो जायगा, आँखोंमें तरावट आयेगी और मस्तक तथा शरीरमें दैवी स्फुरण आ जायगा। हमने तमाम खुशबूके खजानें ढूंढ़कर अत्यन्त गुणकारी महौषधि और खुशबूदार फूलोंके प्रयोगसे इस जगद्विख्यात "किशोरीफ्लावर तेल" को तैयार किया है। इसकी मीठी सुगन्ध तेजीके साथ चारों ओर फैलती जायगी। लगानेके बाद शीशीकी अपेक्षा इसकी खुशबू तेज होती जायगी और कई तरहकी खुशबू बदलती जायगी। मालूम होगा कि आसपास चुने हुए फूलोंका बाग लग गया। एकबार लगानेसे इसकी खुशबू तीन चार दिनोंतक बरबाद नही होती।

अब इसके लाभोंको सुनिये—खुश्कीको दूरकर आँखोंमें रोशनी पैदा करता है, सिरदर्दको हटाकर तरावट पहुंचाता है, तपाक और सुस्तीको दूरकर मनमें प्रसन्नता ला आरामसे सुलाता है, बालोंकी जड़ोंको मजबूतकर उन्हें बढ़ाता है और पकनेसे बचाता है। दाम फी शीशी १) डाकमहसूल ।≈), दर्जन १०) डाकमहसूल १।॥)

किशोरीफ्लावर तेलके नये सार्टिफिकेट

———:*:———

(१) श्रीयुत् मिस्टर ई० एन० काङ्गा मालिक और प्रधान सम्पादक "नवरोज" एज़रा स्ट्रीट, कलकत्तासे लिखते हैं कि किशोरीफ्लावर तेलकी सुगन्धि अत्यन्त मनोहर और कई दिनतक ठहरती है। यह मस्तिष्कमें शीतलता लाकर थकावटको दूर करता हैं। मुझे यह तेल व्यवहारकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इस तेलकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

(२) श्रीयुत् बाबू महादेवप्रसाद सेठ सम्पादक "मतवाला" शहर कलकत्तासे लिखते हैं दरअसल आपका किशोरीफ्लावर तेल नन्दनकाननका मुकुटमणि है। सुगन्धित तेल लगानेवाले शौकीनोंसे मेरा अनुरोध है कि वे किशोरीफ्लावर तेल हमेशा व्यवहार करें।

(३) श्रीयुत् लाला बिशनदास साहब मुकाम लाहौर मुल्क पञ्जाबसे लिखते हैं कि यों तो सभी अपनी चीज़ोंकी प्रशंसा करते हैं परन्तु आपका किशोरीफ्लावर तेल अत्यन्त सुगन्धित है। मैंने इसका सेवन किया। आपने इसकी जो प्रशंसा लिखी है वह बिलकुल सत्य हैं।

———.

किशोर अमला केश तेल.

संसारमें यह कौन नहीं जानता कि दिमागमें तरावट पहुंचाने और बालोंको रेशमकी तरह मुलायम बनानेके लिये आँवलासे बेहतर कोई दूसरी चीज़ नहीं है। आयुर्वेदशास्त्रके ऋषियोंने आँवलेके इस गुणका विशेष उल्लेख किया है। इसलिये हमने वैज्ञानिक रीतिसे बड़ी ही सफ़ाई और परिश्रमके साथ यह किशोर-अमला तेल तैयार किया है, यह तेल मस्तिष्कमें शीतलता लाकर चित्तको प्रफुल्लित करता है, दिमाग़की थकावट और कमजोरियों को दूर करता है। दाम फी शीशी ॥≠), दर्जन ६) महसूल अलग।

गुलबहार तेल.

यदि आप अपने बालोंको भौंरेकी तरह काले और रेशमकी तरह मुलायम, चमकीले और घूंघरवाले बनाना चाहते हैं तो सबसे पहले हमारे गुलबहार तेलको व्यवहार कीजिये। यह बसन्त ऋतुके नये पुष्पों तथा सुगन्धित जड़ी-बूटियोंके मिश्रणसे बनाया गया है। दाम फी शीशी ॥≠) महसूल ।≠), दर्जन ६) डाक महसूल १॥।)

किशनमालती तेल।

किशनमालती तेलने अपने गुणोंका डङ्का बजाकर सिरकी कुल बीमारियोंको दूर करनेमें अपनी अजीब तासीर दिखलाई है। आशा है, कि यह आपपर भी अपने गुणोंको अवश्य प्रकट करेगा। इसका कारण यह हैं कि जिन लाभदायक खुशबूदार औषधियों द्वारा यह तेल तैयार किया गया है उनमें कमजोर रगोंमें शक्ति भर देनेकी अजीब ताकत मौजूद है। दाम फी शीशी ॥≠) डाक महसूल ।≠), दर्जन ६) डाकमहसूल १।॥)

किशोरकान्ति तेल.

जगद्विख्यात आयुर्वेदशास्त्रके आचार्य ऋषि-मुनियोंकी बताई जड़ी-बूटियों और भारतके सुगन्धित फूलोंके संयोगसे वैज्ञानिक क्रिया द्वारा तिलके तेलपर यह अनूठा तेल तैयार हुआ है। इसकी मनोरम सुगन्धि मन और प्राणको विमुग्धकर मस्त बना देती है। सम्भव नहीं कि कोई बाजारू तेल इसकी बराबरी कर सके।

किशोरकान्ति तेल भारतकी कुलवती रमणियोंके शोभा-शृङ्गारकी पहली सामग्री है। कारण यह है कि इसमें बालोंको लम्बे घूंघरवाले मुलायम और चमकीले बनाकर उनके मुखमण्डल को एक विचित्र सुन्दरता और प्रभा प्रदान करनेकी विलक्षण शक्ति है। दाम फ़ी शीशी ॥) महसूल आदि ।≠) दर्जनका ४॥) मह० १।॥)

चन्द्रकला तेल।

इसकी सुगन्ध अच्छी, तेज और देरतक ठहरनेवाली है। यह बालोंको बढ़ाता तथा काला और चमकदार बनाता है। इसमें ताजे गुलाब, जुही तथा चमेली आदि फूलोंकी खुशबू दी गई है; इसकी भीनी सुगन्ध ऐसी मीठी और सुहावनी है कि चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। सिरदर्दको शीघ्रही हटा देता और अच्छी नींद लाता है। फी शीशी ॥≈) महसूल ।≈) दर्जन ६) मह० १॥।)

चन्द्रमालती तेल।

सुनिये साहब! यदि आप अपनी प्राणप्यारीको खुश करनेके लिये किसी नई चीजकी खोजमें हैं तो सबसे पहले एक शीशी चन्द्रमालतीकी अपनी फिहरिस्तमें दर्ज कर लीजिये। कारण यह कि इसके लिये समस्त संसारके खुशबूके खजाने ढूंढ़ डाले गये हैं और तब इसका नुस्खा तैयार हुआ है। तेल क्या है फूलोंका गुलदस्ता है। जुही, चम्पा चमेलीके ताजे फूलोंके मजे घर बैठे लूटिये और लुटाइये। इस तेलके लगाते ही सिरका दर्द कैसाही क्यों न हो छूट जाता है, आरामसे नींद आती है। प्रतिदिनके व्यवहारसे बालोंका गिरना बन्द हो जाता है। यह बालोंको लम्बा और चमकीला बनाता है।

मूल्य फी शीशी ॥) महसूल ।≈) दर्जन ५॥) महसूल १॥।)

रेड स्टार तेल।

इसमें सन्देह नहीं, कि परमात्माने मनुष्यके दिमाग़को जो शक्ति और सम्मान प्रदान किया है वह दूसरे किसी अङ्गोंको प्राप्त नहीं है। इसका खास कारण यह है, कि संसारकी सभी अद्भुत और विचित्र कारीगरियोंका दारमदार मनुष्यके मस्तिष्क पर ही निर्भर है। इसी श्रेष्ठ सिद्धान्तको ध्यानमें रखकर हमने मस्तिष्क को बलिष्ठ और पुष्ट करनेवाली विविध प्रकारकी मूल्यवान तथा अलभ्य महौषधियों और नाना प्रकारके स्वर्गीय सौरभ विशिष्ट देशी फूलोंके खुशबूद्वारा रीफाईन रेड़ीके तेलपर वैज्ञानिक रीतिसे यह "रेडस्टार तेल" तैयार किया है। दाम फी शीशी ॥≈) डाक महसूल ।≈), दर्जन ६) डाकमहसूल १॥।)

चेरीब्लोसम तेल।

इसमें सन्देह नहीं कि सुन्दर, गुच्छेदार और चमकीले केश स्त्रियोंकी सुन्दरताको दूना बना देती हैं। क्या आप ऐसा नहीं चाहते, कि आपकी प्राणप्यारीके बाल भौंरोंकी तरह काले, चमकीले और रेशमकी तरह मुलायम हो जायें? यदि चाहते हैं तो हमारा विश्वविख्यात चेरीब्लोसम तेल व्यवहार कराइये, आपकी मनोकामना अवश्य ही पूरी हो जायगी। दाम फी शीशी ॥≈) डाकमहसूल ।≈), दर्जन ६) डाकमहसूल १॥।)

ओटो भूतनाथ.

हमारे "ओटो भूतनाथ" के आविष्कारने खुशबूके बाजारमें नया जमाना ला दिया है। सैकड़ों और लाखों मुँह यही एक बात सुनाई देती है कि "खुशबू हो तो ऐसी हो।" कारण यह है कि जुही, चम्पा, चमेली आदि अत्यन्त सुगन्धित फूलोंके जौहरसे खिंची हुई इसकी मनोहर खुशबू बिलकुल नई और निराली है तथा क्षण क्षणपर बदलती, बढ़ती और फैलती हुई मनको अद्भुत आनन्द-सागरमें निमग्न कर देती है। दाम बड़ी शीशी २), दो ड्रामकी शीशी १), छोटी शीशी ॥) डाक म० अलग

ओटो किशोरीफ्लावर.

यदि आप नन्दन बनके सुन्दर और सुगन्धित पुष्पोंका आनन्द इस धरातल पर भी लेना चाहते हैं तो हमारे "ओटो किशोरी-फ़्लावर" को जरूर व्यवहार कीजिये,

इसकी मन्द मन्द मधुर खुशबू मन प्राणको असीम आनन्द देकर तबीयतको मस्त बना देती है क्योंकि यह चम्पा चमेली तथा कई किस्मके अलौकिक फूलोंकी रूहसे तैयार किया गया है। इत्र क्या है फूलोंका गुलदस्ता है। दाम बड़ी शीशी २) पाव औंसकी शीशी १) छोटी शीशी ॥) डाक महसूल अलग।

ओटो बमशंकर.

(फूलोंकी रूह)

भगवान भूतभावन शङ्करकी असीम अनुकम्पा ही का फल है कि हमारे इस बमशङ्कर इत्रने अपने सुमधुर सौरभका डङ्का बजाकर समस्त भूमण्डलको चकित और विस्मित कर दिया है। कारण यह है कि नन्दन बनके पारिजात सदृश मनको मस्त बना देनेवाले नाना प्रकारके देशी जुही और चमेली के फूलोंकी सुन्दर सुगन्धित इसमें भर दी गई है, जो चन्द्रमाकी कलाकी भाँति क्षणमें ही चारों ओर फैल जाती और कई दिनों तक दूर नहीं होती। दाम फी शीशी १) १ दर्जन १०) महसूल अलग।

फूलोंका गुलदस्ता.

उपर्युक्त इत्रोंके सिवाय हमारे कारखानेमें और भी कई प्रकारके मनोहर ओटो यानी इत्र तैयार होते हैं जिनकी खुशबू अंत्यन्त मनोहर तथा टिकाऊ होती है आप इन्हें व्यवहार कर अवश्य ही प्रसन्न होंगे।

१—इत्र गुलाब	फी तोला	१)	६—रूह पानड़ी	फी तोला	१)
२—इत्र केवड़ा	"	१)	७—ओटो जसमिन	फीशीशी	१)
३—इत्र मोतिया	"	१)	८—ओटो नर्सिस	"	१)
४—इत्र हीना	"	१)	९—ओटो डी० रोज	"	१)
५—इत्र खस	"	१)	१०—ओटो मुस्क	"	१)

तम्बाकू रञ्जन।

पीनेके तम्बाकूका खुशबूदार मसाला।

यदि आप थोड़े दाममें मुश्की अम्बरी और खुशबूदार खमीरा तम्बाकूका मजा लेना चाहते हैं तो हमारा तम्बाकू रञ्जन अवश्य इस्तमाल कीजिये। इसकी एक छोटीसी डिबिया प्रायः पाँच सेर तम्बाकूको खुशबूदार और मजेदार बनाती है। तम्बाकूरञ्जन द्वारा रञ्जित तम्बाकूके धुएँ में स्वर्गीय-सौरभ भर जाती है जिससे पीनेवाले और पास बैठनेवालोंका दिमाग मुअत्तर हो जाता है। यह मसाला तम्बाकूके तीखेपनको दूरकर उसे अत्यन्त मजेदार बना देता है।

तम्बाकूरञ्जन खुशबूदार बीड़ीके व्यवसाइयोंके बड़े कामकी चीज है, क्योंकि इसके द्वारा बहुत थोड़े खर्चमें बड़ी आसानीसे खुशबूदार बीड़ी बनाया जा सकता है। एकबार अवश्य परीक्षा कीजिये। दाम फी डिबिया।) एक दर्जनका दाम २॥) महसूल अलग।

पान बहार

पानको लज्जतदार बनानेका अद्वितीय मसाला।

यह पानबहार मुखशुद्धार्थके लिये एक नायाब चीज है, हमने बड़ी सफाई और परिश्रमसे तरह तरहके देशी मसालों द्वारा तैयार किया है, इसमें सुर्ती जर्दा नहीं डाला जाता, जरासा पानबहार पानकी गिलौरियोंमें देकर खाते ही पानके लज्जतको दूना बनाकर मुखको सुगन्धित कर देता है, और जिन्हें पान खानेकी आदत न हो वे भोजनके बाद थोड़ा "पानबहार" मुखशुद्धार्थ खा लें। यह मुखको स्वादिष्ट और सुगन्धित बना चित्तको प्रफुल्लित कर देता है, आप इसे जरूर व्यवहार कर देखें। दाम फी शीशी ≈) दर्जन १) महसूल अलग।

पान किमाम

पानमें खानेका अत्यन्त सुगन्धित किमाम।

इसकी मीठी खुशबू निहायत ही दिल पसन्द है, यह पानको मीठा लज्जतदार बनाकर तबीअत खुश करनेमें लाजवाब है। यह साइनटिफिक (रसायनिक) रीतिसे बड़ी सफ़ाई और सहूलियत के साथ तैयार किया गया है, जिससे शरीरको किसी तरहका नुकसान न पहुंचे। इसे एकबार जरूर व्यवहारकर देखिये यदि आप खुश न हो जायँ तो हमारा जिम्मा। दाम फी शीशी ≈), फी दर्जन १) महसूल अलग।

सुगन्धमालती।

इसे इत्र फितना भी कहते हैं। जवानीके साथ साथ खूब-सूरतीके दुश्मन, मुँहासे तथा बर्रे आदि रोग उत्पन्न होकर कितनी हीं सुन्द और सुहावनी सूरतोंको बिगाड़ देते हैं। इन्हें दूर करनेके लिये हमारा मशहूर सुगन्धमालती अवश्य ही लगाना चाहिये। इससे फोड़े-फुंसियाँ बर्रे और मुँहासे आदि रोग अवश्य दूर हो जाते हैं। मुख मनोहर, सुन्दर, चिकना और चमकीला हो जाता है।

सुगन्धमालतीकी सुगन्ध अत्यन्त मधुर और बढ़िया होनेके कारण लोग इसे इत्रकी जगह भी इस्तमाल करते हैं। स्त्रियोंके शृङ्गारकी तो यह सर्वप्रधान वस्तु है। इसे लगाकर बालोंकी पटिया बड़ी सुन्दरता और सहूलियतसे सवांरी जा सकती है। अन्नास मार्का न० १ दाम फी दर्जन ।।।) तितली मार्का न० १ दाम फी दर्जन ॥=) महसूल अलग।

ताम्बूलबिहार.

यह पानको अत्यन्त खुशबूदार तथा लज्जतदार बनानेका अत्युत्तम मसाला है।

अन्नास मार्का—फी दर्जन १)

तितली मार्का—फी दर्जन न० १ ।।।) न० २ ॥)

हमारा जगद्विख्यात्—मन्दिर मार्का
गुलाब निर्य्यास !

मैंने बड़ेही परिश्रमके साथ वैज्ञानिक रीतिके अनुसार यह गुलाब निर्य्यासको तैयार किया है, यह आजकलके बाजारू गुलाब जलकी तरह नहीं है, इसको बड़ी सफ़ाई और शुद्धताका ख्याल रखकर तैयार किया है, इसीलिये यह देवकार्य्य और मन्दिरोंमें भी व्यवहार होता है। इसकी एक छटांककी शीशीसे एक बोतल खूब सुन्दर सुगन्धित गुलाबजल बनाकर जलसों और महफिलोंमें छिड़ककर देखिये सारा महफिल इसकी मनोहर सुगन्धसे दमक उठेगा। अगर पीनेका जल सुगन्धित बनाना हो तो सिर्फ थोड़ा सा गुलाब निर्य्यास एक कलसी पानीमें डाल दें सारा जल सुगन्धिमय हो जायगा।

अब इसके गुणोंको सुनिये—आँखोंमें कैसाही जलन हो आँखें सुर्ख हो गई हों और भयानक पीड़ा होती हो, आँखोंसे पानी गिरता हो सिर्फ दो तीन बारके व्यवहारसे ही दूर हो जायगा और मस्तिष्कमें शीतलता आ जायगा। यह पेटके दर्दके लिये भी गुणदायक है, कैसा ही पेटमें दर्द हो सिर्फ थोड़ा सा हमारा गुलाबनिर्य्यास आधा पाव गर्म पानीमें मिलाकर सेवन करते ही पेटका दर्द एक क्षणमें ही दूर हो जायगा। यही कारण है कि भारतके बड़े बड़े औषधालयोंमें हमारा मन्दिर मार्का गुलाब-निर्य्यास दवाइयोंके काममें व्यवहार किया जाता है। दाम फी शीशी।) फी दर्जन २।)